In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

2.96

लघु

द्रव्य-गुण-आदर्श

(निघण्टु-रसतंत्रात्मक)

प्रस्तावना लेखक

आयुर्वेद मार्त्तण्ड श्री यादवजी त्रिकमजी आचार्य

लेखक

आयुर्वेदाचार्य कविराज महेन्द्रनाथ

शास्त्री, बी ए०, वैद्यवाचस्पति

श्री रामविलास आनन्दीलाल पोद्दार मेडिकल

कॉलेज [आयुर्वेदिक] बम्बई १८

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आयुर्वेदाचार्य
श्री पंडित शिवशर्मा जी
को सादर समर्पित
श्रीवक
8/12/49

लघु

द्रव्य-गुण-आदर्श

(निघण्टु-रसतन्त्रात्मक)

प्रस्तावना लेखक

आयुर्वेद मार्त्तण्ड श्री यादवजी त्रिकमजी आचार्य

लेखक

आयुर्वेदाचार्य कविराज महेन्द्रनाथ

शास्त्री, बी० ए०, वैद्यवाचस्पति

श्री रामविलास आनन्दीलाल पोद्दार मेडिकल

कॉलेज [आयुर्वेदिक] बम्बई १८

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण : एक हजार
सम्वत् २००४ ... मूल्य ढाई रुपया

Vaidyaraj Zandu Bhatji
National Ayurvedic Library
Punjabi Bagh, New Delhi-26
Call No. LX NMJ
Book No.
Acc No. 000060

मुद्रक : उदयन प्रेस कान्दीवली बम्बई
प्रकाशक : हिंदी पुस्तक भण्डार हीराबाग़ बम्बई ४
प्राप्ति-स्थान : आयुर्वेद निकेतन १२१ सुपारी बाग रोड बम्बई १२

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्रस्तावना

अनामविन्मोहमुपैति वैद्यो, न वेत्ति पश्यन्नपि भेषजानि ।
क्रियाक्रमो भेषजमूलमेव, तद्भेषजं चापि निघण्टु मूलम् ॥

—धन्वन्तरि निघण्टु ।

निघण्टु अर्थात् 'द्रव्यगुणशास्त्र' की महत्ता विज्ञ वैद्यों को बताने की वस्तु नहीं है। इसकी महत्ता स्वयंसिद्ध और सर्वज्ञात है। औषधियाँ चिकित्सक का शस्त्र हैं। शस्त्र रहित, अथवा विकृत और कुण्ठित शस्त्रवाला सुचतुर सुशिक्षित और साहसी योद्धा भी रणांगण में अपयश और अपमान का भागी होता है, यही दशा द्रव्य-गुण-विज्ञान रहित वैद्यों की होती है। अतएव चिकित्सा के पाद चतुष्टय में वैद्य के पश्चात् औषधि को प्रधानता दी गई है। "भिषग्द्रव्याण्युपस्थाता रोगी पाद चतुष्टयम् ।" निघण्टु तथा रसशास्त्र दोनों ही आयुर्वेद रूपी भवन के मूलाधार हैं।

आजकल समस्त भारतवर्षमें नूतन पाठ्यक्रमानुसार शिक्षा देने वाले कालेज चल रहे हैं। प्राचीन पद्धतिके ग्रन्थ नवीन शिक्षा प्रणाली के उपयुक्त सिद्ध नहीं हो रहे हैं। आयुर्वेदके प्रामाणिक प्राचीन ग्रन्थों के आधार पर नवीन

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

ढंग के ग्रन्थोंका निर्माण होना परमावश्यक है। इस अभाव का अनुभव प्रायः सभी आयुर्वेद-प्रेमी कर रहे हैं। और इसकी पूर्त्ति के लिए व्यक्तिगत प्रयत्न भी हो रहे हैं। किन्तु सामूहिक प्रयत्न की आवश्यकता है। प्रस्तुत पुस्तक भी इसी दिशा में एक प्रयास है। यह पुस्तक, यद्यपि पाठ्य पुस्तक का स्थान नहीं ले सकती, किन्तु तो भी छात्रों के अध्ययन के लिए निस्संदेह अति उपयोगी है। समस्त आयुर्वेदीय विषयों पर ऐसी संक्षिप्त पुस्तकों की आवश्यकता है।

इस पुस्तक की पाण्डुलिपि मैंने देखी थी। उसमें यत्र तत्र संशोधन करने के सुझाव दिए थे। तदनुसार उचित संशोधन के उपरान्त यह पुस्तक प्रकाशित की गई है। पुस्तक में यद्यपि विस्तार की गुंजाइश है, तथापि काम की प्रायः सब बातें इसमें आगई हैं। छात्रों एवं वैद्यों दोनों के लिए उपयोगी है, इसमें सन्देह नहीं। लेखक इसी प्रकार भविष्य में भी ग्रन्थ लिखते रहेंगे, ऐसी आशा है।

१८-३-४८ वैद्य जादवजी त्रिकमजी आचार्य

डा० विगास स्ट्रीट
बम्बई २

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आत्मीयं किंचित्

इस लघु पुस्तिका के प्रकाशन का भी संक्षिप्त-सा इतिहास है, जिसे पाठकों से छिपाना अनुचित होगा। इस पुस्तक को लिखने या प्रकाशित करने का मेरा न कोई विचार था, और न कोई योजना थी। मैं तो सर्वाङ्ग सम्पूर्ण "द्रव्य गुणादर्श" लिखने का विचार कर रहा था और तद्विषयक सामग्री लगभग दो वर्ष से एकत्र कर रहा था, जो अभी तक भी पूर्ण रूपेण एकत्र नहीं हो सकी है।

नवीन पाठ्य प्रणालि के अनुरूप पुस्तकों का प्रणयन अभी तक नहीं हो सका है। अतः छात्रों को विभिन्न विषयों पर 'नोट्स' लिखाने ही पड़ते हैं। द्रव्यगुण तथा रसशास्त्र पर लिखाए गए हमारे 'नोट्स' को देख कर अनेक आयुर्वेदज्ञ मित्रों ने आग्रह किया कि इन्हें प्रकाशित कराइये। छात्रों का आग्रह तो था ही। उन्हीं 'नोट्स' को और भी संक्षिप्त करके तथा 'द्रव्य-गुणादर्श' के लिए एकत्र सामग्री का सहारा लेकर अति शीघ्रता में प्रस्तुत लघु पुस्तिका की रचना तथा प्रकाशन हुआ है, अतः इसमें त्रुटियों का न रहना ही आश्चर्य की बात होती।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

द्रव्यगुणशास्त्र बहुत गम्भीर शास्त्र है। जितनी ही अधिक छानबीन की जाए, उतनी ही ज्ञान की परिधि बढ़ती जाती है। ऐसे गहन विषय में मतभेद पहले भी रहा है, अब भी है और आगे भी रहेगा। अतः हमारे वर्णन से कई विद्वानों को मतभेद होगा ही। अतः विज्ञ पाठकों और सहृदय समालोचकों से हमारी साग्रह विनति है कि ऐसे स्थलों का अवश्य निर्देश करें। विचार विनिमय के अनन्तर उचित होने पर आगामी संस्करण में उनको स्थान दिया जायगा।

इस पुस्तिका के सम्बन्ध में भी दो शब्द कहना आवश्यक हैं।

१ यह पुस्तिका आयुर्वेदीय छात्रों की आवश्यकताओं के, विशेषतः परीक्षा सम्बन्धी, दृष्टिकोणसे लिखी गई है। अतः उनके लिए विशेष उपयोगी है। किन्तु चिकित्सकों के लिए भी लाभदायक है।

२ निघण्टु तथा रसशास्त्र का पूर्ण अध्ययन करने के पश्चात् ही पाठक गण इससे लाभ उठा सकते हैं।

३ प्रभाव्य देहावयवों का वर्णन इसकी अपनी विशेषता है। यह विषय यद्यपि ऐलोपैथिक जैसा लगता हैं, किन्तु हमने इसके वर्णन में आयुर्वेदीय दृष्टिकोण ही रक्खा है—यथा रास्ना वातशामक है। वात संस्थान ही वात का प्रधान स्थान है। अतः रास्नाका प्रभाव हमने वात-संस्थान पर दिखाया है। अन्य द्रव्यों के विषय में इसी सरणि का अनुसरण किया है। देहावयवों के साथ साथ कहीं

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्रभाव्य धातु का भी उल्लेख किया गया है।

४ पाठ्य क्रमान्तर्गत ऐलोपैथिक द्रव्यों का वर्णन भी यथामति आयुर्वेदानुसार करने का प्रयत्न किया गया है। यथा अर्भकं (अर्गट) गर्भाशय की आकुंचन-प्रसार क्रिया को बढ़ा देती है। और समस्त क्रियाएँ—"सर्वाः वातकृता क्रिया"—वात के आधीन हैं। अतः इसे वातल बताया गया है।

५ जिन औषधियों का वानस्पतिक नाम संदिग्ध है, उसे छोड़ ही दिया गया है। मिथ्याज्ञान से अज्ञान को हम अच्छा समझते हैं।

६ विविध वर्गीकरण, इस पुस्तक की अपनी विशेषता है।

समयाभाव के कारण जो त्रुटियाँ इसमें रह गई हैं और जिनका निराकरण आगामी संस्करण में किया जायगा वह नीचे लिखी जाती हैं:—

१ यन्त्रों, मूषाओं आदि के रेखाचित्र;

२ औषधियों का देहधातुओं पर प्रभाव;

३ प्रायः समग्र चिकित्सोपयोगी योगोंका मात्रादि सहित वर्णन;

४ अवशिष्ट आयुर्वेदीय तथा अत्यन्त प्रभावशाली यूनानी एवं ऐलोपैथिक औषधियों का वर्णन;

५ अन्य भी अनेक बहुमूल्य और अतीव उपयोगी परिवर्धन किए जाऐंगे, जिससे पुस्तक न केवल छात्रों के लिए ही, अपितु चिकित्सकों के लिए भी और भी उपयोगी होजाए।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आयुर्वेद जगत् के सुप्रसिद्ध विद्या-वयोवृद्ध आचार्यवर्य श्री यादवजी त्रिकमजी बम्बई के हम अत्यन्त आभारी हैं, जिन्होंने अपने बहुमूल्य और बहुव्यस्त समय में से कुछ समय निकाल कर, पाण्डुलिपी देख कर अपने अमूल्य परामर्शों द्वारा इस पुस्तक को उपयोगी बनाने में सहायता दी और प्रस्तावना लिखने का कष्ट किया। आयुर्वेदाचार्य कविराज श्री आशानन्द जी पंचरत्न M. B. B. S. प्रिंसिपल पोद्दार आयुर्वैदिक कालेज बम्बई, के भी हम अनुगृहीत हैं, जिन्होंने अनेक अमूल्य परामर्श देकर तथा मार्ग-प्रदर्शन करके हमारी सहायता की।

हमारा विचार मार्च के द्वितीय सप्ताह में इस पुस्तक को पाठकों के हाथों में दे देने का था। किन्तु हमारे अत्यन्त प्रयत्न करने पर भी विलम्ब हो ही गया। परिस्थिति ही इसके लिए दोषी है।

पोद्दार आयुर्वैदिक कालेज — कविराज महेन्द्रनाथ शास्त्री
बम्बई, १८. २०-३-४८

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रस-शास्त्र

—०—

पारद *Mercury*

नाम—सूत, रसेन्द्र, चपल, पारा।

विशिष्टता—पारद मात्रा अल्प है, अरुचि नहीं करता, शीघ्र आरोग्य देता है तथा योगवाही है।

अशुद्ध पारदके लक्षण—धूम्रवत् कृष्णवर्ण, परिपाण्डु, विचित्रवर्ण।

शुद्ध पारदके लक्षण—अन्तः सुनील, बाहरसे उज्ज्वल, मध्यान्ह सूर्यवत् प्रकाश्यमान।

पारददोष—

दोषनाम	रोगनाम	दोषनाम	रोगनाम
नाग	व्रण	वंग	कुण्ठ
विष	मृत्यु	चापल्य	बीजनाश
वह्नि	ताप	असह्याग्नि	मोह
मल	जाड्य	गिरिदोष	स्फोट

रसरत्नसमुच्चयानुसार—सहज विष मल वन्हि यौगिक, नाग, वंग, गिरिजा तथा वारिजाकी

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तृतीय श्रेणी है। इसमें चापल्य गिरिदोष और असह्याग्नि तथा कंचुकी सम्मिलित हैं।

शोधन — दोष निरासार्थ पारदका शोधन किया जाता है। शोधनार्थ पारदका परिमाण १ पल (५ तोला) से १०० पलतक होता है। १ पलसे कम पारदका शोधन अव्यवहार्य है।

शोधनके दो भेद हैं :

सामान्य शोधन और विशिष्ट शोधन।

सामान्य शोधन—१ नागदोष --- घरका धुआँ जो पाकशालामें ऊपर छतपर लगता है (soot) हरिद्रा तथा उनसे मर्दन किया जाता है। मर्दनानन्तर काञ्जी आदि अम्ल द्रवसे पारदका प्रक्षालन करना चाहिए। प्रत्येक पदार्थसे मर्दन के पश्चात् किसी अम्ल पदार्थसे धोना चाहिए। २ वंगदोष—इन्द्रायण, अंकोल तथा हरिद्रासे ३ अग्निदोष—चित्रकसे, ४ मलदोष—आरग्वधसे ५ चपलदोष—कालाधत्तूरसे, ६ विषदोष—त्रिफलासे, ७ गिरिदोष—त्रिकुट, ८ असह्याग्नि—गोखुरुसे मर्दन करना चाहिए। इस प्रकार यह दोष दूर हो जाते हैं।

द्वितीय प्रकार : नागवेल रस अदरक रस, तथा क्षारत्रय (यवक्षार, सर्जिका क्षार, टंकण) से क्रमशः सात दिवसपर्यन्त मर्दन करके कांजीसे प्रक्षालन करलें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विशिष्टशोधन (अष्ट संस्कारीय शोधन) :-

नाम संस्कार	द्रव्य	प्रयोजन
१ स्वेदन	त्रिकटु, मूली, राई, सैन्धव द्वारा तीन दिन तक दोलायन्त्रमें स्वेदन	मल शैथिल्य
२ मर्दन	सैन्धव, गृहधूम्र, राई, शुण्ठीसे ३ दिन तक मर्दन	बहिर्दोष निरासार्थ
३ मूर्च्छन	त्रिफला, चित्रकमूल, गृहकुमारीसे सात दिन तक नष्टपिष्ट करना	मल विष, अग्निदोष निरासार्थ
४ उत्थापन	सौभाग्य, लवण, मधुके साथ पारदको पीसकर कांजी में ३ दिन स्वेदन	मूर्च्छासे उत्पन्न दोष निरासार्थ
५ पातन		
१ ऊर्ध्व	सर्जिका, यवक्षार, हींग, पांचो लवण पीसकर अम्लवर्गसे ऊर्ध्वपातन यन्त्र द्वारा पातन करे	यौगिक दोष नाग, वंगके नाशार्थ
२ अधः	हरीतकी, विभीतक, राई, सैन्धव, अपामार्ग, शिग्रु बीजोंसे नष्टपिष्ट कर अधःपातन	,,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

३ तिर्यक्	उपर्युक्त पदार्थोंसे नष्टपिष्ट कर तिर्यक्पातन यन्त्र द्वारा पातन	,,
६ बोधन	सैन्धव और जलसे भरी कच्चिकुप्पीमें पृथ्वीगर्भ में तीन दिन तक रक्खे	वीर्य उद्-बोधनार्थ
७ नियामन	लसुन, भृङ्गराज, इमली, नौसादर, मुस्तकके साथ स्वेदन	चापल्य नाशार्थ
८ दीपन	चित्रक क्वाथ और कांजी के साथ तीन दिन तक स्वेदन करे	पारदको जागरण समर्थ या ग्रासार्थी बनाने के लिए

शोधक पदार्थों की मात्रा—पारदकी अपेक्षा १६ वाँ भाग प्रत्येक शोधक पदार्थका चूर्ण लेना चाहिए।

हिंगुलोत्थ पारद—हिंगुलको निम्बुरसमें पीसकर सुखा लें। और ऊर्ध्वपातन यन्त्र द्वारा या विद्याधर यन्त्र द्वारा ऊर्ध्वपातन करलें। यह सर्व दोष रहित पारद होता है।

शोधन—षोडशांश हरिद्रा चूर्ण, सैन्धव, तथा निम्बुरसमें दो दिनतक पीसकर कांजीसे धो लें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

जारण — विधि विशेष अनुसार पारदमें गन्धकादि को जलाना "जारण" कहाती है।

द्रव्यपरिमाण—पारदकी अपेक्षा आधी गन्धकादि से लेकर ६ गुण तक जारण द्रव्य लिए जाते हैं।

मूर्छना—लक्षण परिभाषा प्रकरणमें लिख दिया है।

भेद—मूर्च्छना:
- सगन्धमूर्च्छना :
  - —अन्तर्धूम
  - —बहिर्धूम
- निर्गन्ध मूर्च्छना—रसपुष्पादि

पारद-भस्म

यह चार प्रकारकी है।

(१) रक्त, रससिन्दूरादि, (२) श्वेत, रस पुष्पादि (३) पीत, सर्वाङ्ग सुन्दर (४) कृष्ण, वक्ष्यमाण

भस्मविधि—हिंगुलोत्थ पारद १ पल, शुद्ध गन्धक १ पल वट दुग्धसे मर्दन करें। मृदु अग्निपर रखकर वट दण्डसे एक दिवस पर्यन्त मर्दन करें।

गुण—संग्रहणी, अतिसार, क्षयरोगोंकी शामक रसायन तथा वाजीकरण है।

मात्रा—१/२ से १ गुंजा पर्यन्त; अनुपान--मधुदुग्ध

रस-भक्षण तथा विधिकाल—प्रभातकालमें निरन्तर ही पारदके योगोंका भक्षण करना चाहिए। तथा मध्याह्नमें भोजन (दूध + चावल) करना चाहिए।

पथ्य—आर्द्रक, घी, धनियाँ, जीरासे संस्कृत पटोल, चौलाई, तण्डुलीय बथुआ, पुनर्नवा, मिस, गोदुग्ध,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

दही, गेहूँ, मूँगकी दालका सेवन करना चाहिए।

अपथ्य — क्रोध-शोकादि मानसिक विकार, मिथ्याहार विहार, अतिनिद्रा, अतिस्नान, अति मैथुन, तथा तृष्णाका त्याग करें। कूष्माण्ड, कलिंग-फल, कुलत्थ, बाँझ ककोड़ा, कपित्थ कलायादि ककारादि गणका तथा उड़द, मसूर, तैल, मद्य, आसव, अम्ल तथा चर्परे कटुतिक्त पदार्थोंका सेवन न करे।

रस विकारमें चिकित्सा—(१) शीत स्थानमें रोगीको रक्खे, शीत ही चिकित्सा करें; (२) गिलोय, धनियाँ, खस, मुलैठी, चन्दन, पित्तपापड़ाके क्वाथमें वंशलोचन तथा सिता मिलाकर पिलाएँ; (३) अमूर्च्छित वा अमृत रस भक्षण जन्य रोगों में शुद्ध गन्धकको नागवेलके पत्तेमें रखकर सेवन करायें।

योगः—

नाम	मात्रा	व्याधि
१ मुग्ध रस	१ गुन्जा	फिरंग, बालातिसार
२ रसपुष्प	१/२ से २.१/२ गुन्जा	रेचक, पित्तहर, फिरंगहर
३ रसकर्पूर	१/६४ से १/३२गुन्जा	कृमिघ्न, त्वक् रोगहर
४ रस-	१ से २	प्रमेह ज्वरादि

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सिन्दूर	गुन्जा	
५ मकर-	१ से २	रसायन
ध्वज	गुन्जा	

गन्धक *Sulphur*

भेद— { आमलासार—यह चिकित्सामें व्यवहार्य है।
नलिका गन्धक—यह हीन गुण है।

अशुद्ध गन्धक सेवनसे दोष या गन्धक शोधनका प्रयोजन--ताप, दाह, भ्रम, चित्तभ्रम तथा रक्तज रोग, उत्पन्न होते हैं इनको दूर करनेके लिए शोधन किया जाता है।

शोधन — मिट्टीके चौड़े मुखके घटपर एक सच्छिद्र मोटा वस्त्र बाँधे। घड़ेमें गोदुग्ध भरे। इस वस्त्रके चारों ओर २ अँगुल मोटी आलबाल बनाएँ। लोहके दर्वीयन्त्र (कड़छी) में गन्धकको द्रवित कर वस्त्र मेंसे दूधमें छानदें।

गुण ---- रसायन, कृमिघ्न, रक्तशोधक, सर, उष्ण, कटुविपाकी, दीपन, त्वचा रोग नाशक है।

मात्रा—१ से ८ गुंजा पर्यन्त; अनुपान--मधु, मलाई, दूध।

योग —१ कज्जली, मात्रा १से २ गुंजी फिरङ्ग व्रणहर।
२ रसपर्पटी मात्रा १से १० गुंजा, संग्रहणी, क्षयादि।

हिंगुल, दरद (*Cinnabar*) सिंगरफ

भेद—१ शुकतुण्ड (त्याज्य) २ हंसपाद (ग्राह्य)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

ग्राह्य के लक्षण : जपापुष्पवर्ण, महोज्ज्वल, गुरु ।
अशुद्धके दोष—मोह, क्लम, क्षीणता, प्रमेह, आन्ध्य ।
शोधन—आर्द्रक वा लकुच स्वरससे सात बार मर्दन करे।
गुण---त्रिदोष, आमवात, प्रमेह, प्लीहावृद्धि हर, रसायन ।
योग— १ श्री सिद्ध दरदामृत, मात्रा १/२ गुंजा उरुस्तम्भ, आमवात, वात व्याधिनाशक ।
२ श्री सिद्ध हिंगुलेश्वर, मात्रा १ गुंजा, ज्वरातिसार-ज्वरशामक ।

अभ्रक : गगन : *Mica*

१ भेद—श्वेत, —रक्त, —पीत } तीनों चिकित्सामें अनुपयोगी हैं ।

—कृष्ण : १ पिनाक २ नाग ३ मण्डूक ४ वज्र

नाम	लक्षण	दोष
१ पिनाक	अग्नि पर गरम करने से पत्रमोचन होता है	विबन्ध, कुष्ठ,
२ नाग	अग्निपर गरम करने से सर्प के समान फूत्कार होता है	भगन्दर, कुष्ठ
३ मण्डूक	अग्निपर गरम करने से मेंढकवत् शब्द करता है	अश्मरि
४ वज्र	अग्निपर गरम करने से अविकृत रहता है	कोई दोष नहीं

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

ग्राह्याभ्रक लक्षण—वज्राभ्रक चिकित्सार्थ व्यवहृत होता है। यह गुरु, उज्ज्वल, नीलांजन वर्ण तथा सुखनिर्मोच्य पत्र होता है।

अशुद्धके दोष—हृदय और पार्श्वपीड़ा, पाण्डु, शोफ, क्षयरोग।

शोधन—अग्निमें तपाकर त्रिफला क्वाथ या गोदुग्धमें सात बार सिंचन करें।

धान्याभ्रक—अभ्रककी अपेक्षा चतुर्थांश शालि (धान) लेकर एक सच्छिद्र मोटे कपड़ेमें यथा कम्बल शिथिल बाँधकर २४ घंटे जलमें पड़ा रहने दें। ततः हाथसे मलकर अभ्रकको उस वस्त्रसे बाहर निकालकर स्वच्छ जलसे धोकर धूपमें सुखालें।

भस्म—२० से १० पुटें देकर रोग निवारणार्थ। और १०० से १००० पुटें देकर रसायनार्थ अभ्रक भस्म बनाएँ।

विधि—शुद्ध अभ्रक अथवा धान्याभ्रकको कासमर्दके रसमें १ भावना देकर गजपुटमें अग्नि दें। इस प्रकार १० बार पुट दें। इसी प्रकार १० बार अर्कदुग्धकी भावना देकर १० पुट दें। २० पुटोंमें सिन्दूराभ भस्म बन जाती है।

सूचना—वटजटा, दशमूल, पुनर्नवादि अनेक द्रव्यों द्वारा भस्म बनाई जाती है। विस्तार भयसे यहाँ उनका वर्णन छोड़ दिया है।

भस्मकी परीक्षा—निश्चन्द्रता, सूक्ष्मता, स्पर्शकोमलता।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अमृतीकरण—अभ्रक भस्म १० भाग, त्रिफला क्वाथ १६ भाग, घृत ८ भाग लोह पात्रमें मध्यमाग्नि पर पाक करें।

गुण– मधुररस, शीतवीर्य, मधुर विपाकी, त्रिदोष शामक, रसायन, जीर्णज्वर, क्षय नाशक। मात्रा १ से २ गुंजा।

योग—सुवर्ण वसन्त मालती, ज्वरार्यभ्रकादि अनेक।

हरिताल तालक *Dioxide of Arsenic*

भेद---१ पिंड हरिताल (त्याज्य) २ पत्र हरिताल (ग्राह्य)

पत्रतालके लक्षण तथा गुण—सुवर्णवर्ण, उज्ज्वल, स्निग्ध तनु पंत्रमय। त्रिदोषघ्न, त्वचारोग वातरक्त शामक।

पिण्डतालके लक्षण तथा गुण---निष्प्रभ, पत्ररहित, लघु, स्वल्पसत्त्व। अल्पगुण, रजःस्राव नाशक।

अशुद्धके दोष—दाह, कम्प, क्षोभ, कुष्ठ, तोद, वात कफज रोग।

शोधन---तालके पत्रोंको प्रथक् पृथक् कर कुष्माण्ड स्वरस में अथवा चूर्णोदक या त्रिफला क्वाथमें १ याम (तीन घण्टे) दोला यन्त्रद्वारा स्वेदन करें।

मारण (भस्म)---शुद्ध तालको पलाशमूलके घनक्वाथ में भावना दें। ततः भैंसके मूत्रमें। चक्रिका बनाकर सुखालें। कपोट पुटमें अग्नि दें। इस प्रकार १२ पुटोंमें भस्म हो जाती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गुण---फिरंगरोग, वातरक्त, विसर्प, विषमज्वर तथा रक्त-दोष, और त्वचा रोग। मात्रा १/४ से १/२ गुंजा।

रसमाणिक्य–शुद्ध हरितालका सूक्ष्म चूर्ण बनालें। पुनः थोड़ा दो श्वेत अभ्रकके पत्रोंके मध्यमें रखकर जलते अङ्गारोंके मध्यमें अभ्रक पत्रोंको रखदें। पत्रोंको संदंश द्वारा पकड़े रहें। जब माणिक्य-समान वर्ण होजाए तो अभ्रक पत्रोंको निकाल कर स्वाङ्ग शीत होनेपर रसमाणिक्य प्राप्त करें।

सूचना—शराव सम्पुटमें शुद्ध ताल चूर्ण भरकर बदरी पत्र कल्कसे सन्धि लेप कर अग्निपर गरम करने से भी रसमाणिक्य बनता है। एक शरावके उदरमें दूसरे शरावकी पीठ रखनी चाहिए। ऊपरके शरावका मुख ऊपरको रहना चाहिए।

गुण—तालकवत्। मात्रा १/२ से २ गुन्जा पर्यन्त।

मनःशिला, नैपालिका

Trioxide of Arsenic

अशुद्धके दोष—मूत्ररोध, विबन्ध, बल तथा कान्ति-नाशक।

शोधन—आर्द्रक वा अगस्त्यपत्र स्वरससे सात भावनायें दें।

गुण—कटुतिक्त, उष्णवीर्य, कटुविपाकी, स्निग्ध, श्वास क्षय, अग्निमान्द्य नाशक। मात्रा १/२४ से १/१६ गुंजा।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

फेनाश्म, गौरीपाषाण
Arseneous Acid

भेद—१ रक्त (खनिज, विरल व्यवहार); २ श्वेत (प्रायः व्यवहार)

शोधन—करेलेके रस वा गोदुग्धमें दो याम तक दोला यन्त्रमें स्वेदन करें।

गुण—वात-कफ रोगहर, श्वास, विषमज्वर, फिरंग, सन्धिवात शामक, यकृदुत्तेजक, दीपक, कांति-वर्धक।

मात्रा—१/२० से १/३० गुंजा। मात्रा बनानेके लिए सोमल १ गुन्जाको कृष्णमरिच चूर्ण १५ माषक में मिलाकर आर्द्रक रसकी भावना देकर १-१ गुन्जाकी गोली बनालें।

स्फुटिका, सौराष्ट्रजा *Alum*

निर्मलीकरण—स्फटिकीकरण विधिसे।

शोधन या मारण—तुवरीका चूर्ण बनाकर मृदु अग्निपर लोहपात्रमें शुष्क चूर्ण बनालें।

गुण—तिक्तकटु कषायरस, उष्णवीर्य, कटु, विपाकी, त्रिदोषहर, संग्राहक, संकोचक, नेत्ररोग, रक्तस्राव, विषम ज्वर तथा मुख और दन्तवेष्टरोग नाशक।

मात्रा—२ से ४ गुन्जा।

खटिका-कठिनी *Chalk*

शोधन—खटिकाका चूर्ण बना शुद्ध जलसे प्रक्षालन

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

करलें। खटिका जलमें अविलेय है। अतः वह नीचे रह जाएगी। और मलांश जलमें मिलकर बाहर चला जायगा। इसका मारण नहीं किया जाता।

गुण—मधुर कषाय, शीतवीर्य, शोथ, पित्त, दाह, अतिसार, अतिस्वेद एवं स्राव नाशक है।

मात्रा—१ माशासे ३ माशा तक।

गोदन्ती *Gypsum, Calcium Sulphate*

स्वरूप—श्लक्ष्ण, पत्रयुक्त, चन्द्रवत् श्वेत।

शोधन—निम्बुरसमें दोला यन्त्रद्वारा आधा याम स्वेदन करें।

मारण—शराव सम्पुटमें रखकर गजपुटमें भस्म करें। प्रायः एकही पुटमें श्वेत भस्म बन जाती है।

गुण—पित्तज्वर, जीर्णज्वर, श्वास, नाशक और दीपन।

मात्रा—१ से ४ गुन्जा पर्यन्त।

शङ्ख *Conch*

भेद— { वामावर्त्त, दक्षिणावर्त्त } दोनोंका ही प्रयोग होता है।

शोधन—कांजी वा अन्य अम्लद्रवमें दोला यन्त्रमें एक याम स्वेदन करें।

मारण—खण्ड खण्ड करके घृतकुमारी स्वरसके मध्यमें रखकर गजपुटमें अग्नि दे। २-४ पुटोंमें ही

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

भस्म बन जाती है।

गुण—शीतल-दीपन, अम्लपित्त, अग्निमान्द्य, संग्रहणी, परिणामशूल शामक। मात्राः २ गुन्जा।

योग—१शंखवटी; मात्रा २ से ४ गुंजा; अजीर्ण, उदर-शूल में।

२ शंखद्राव, मात्रा ५ से १० बिन्दु जल में मिलाकर; अजीर्ण, उदरशूल, वमन विसूचिकादिमें।

निर्माण--शंखचूर्ण, टंकरण, स्फुटिका, यवक्षार, नृसार सर्जिका क्षार, पंचलवण-सब समान भाग। तिर्यक पातन यन्त्र द्वारा पातन करें।

शुक्ति *Pearl Mother*

भेद—१ मुक्ताशुक्ति, २ शुक्ति। दोनों ही व्यवहृत होती हैं।

शोधन मारण मात्रा—शंखवत्।

गुण—मधुर, स्निग्ध, रुचिकारक, श्वास, उदरशूल, हृदय रोग, आन्त्ररोग, अस्थि मार्दव शामक।

वराटिका, कपर्दिका *Cowree*

भेद—१ पीत (उत्तम); २ श्वेत (मध्यम); ३ धूसर (अधम)

ग्राह्यवराटिका--सुवर्ण वर्ण, पीठपर गाँठदार, दीर्घ वृन्त। भारमें १·१/२ शाण (४·१/२ माशा)।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

शोधन मारण मात्रा—शंखवत्।

गुण—उष्ण, दीपन नेत्ररोग, अग्निमान्द्य, संग्रहणी, परिणामशूल तथा क्षयरोग नाशक है।

मृगशृङ्ग *Hart's Horn*

ग्राह्य—दीर्घ, भारबहुल, दृढ़ अनेक शृंगोंवाला तथा कीटोंसे अभक्षित।

मारण—करपत्र (आरी) से खण्ड खण्ड करके अंगारोंमें दग्ध करले। मर्दनसे काला चूर्ण बन जायगा। चूर्णमें अर्कदुग्धकी भावना दे चक्रिका बना धूपमें सुखालें। शराव सम्पुटमें बन्दकर गजपुटमें भस्म करे। तीन बारमें उत्तम भस्म बनेगी।

सूचना—श्वेत भस्मकी अपेक्षा कृष्णमसी अधिकगुणप्रद है। मृगशृंगके स्थानपर बारासिंगा (Stag's Horns) का सींग भी उपयोगमें आता है। गुण प्रायः समान हैं।

गुण—हृदयरोग, शूल, पार्श्वशूल, वातिकवेदना हर।

मात्रा—२ से ४ गुंजा पर्यन्त।

समुद्रफेन

शोधन—गरम जलसे धोकर निम्बुरसमें एक बार भावना देलें।

गुण—चक्षुष्य, लेखन, कर्णस्रावहर, कफ शामक।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मात्रा—२ गुंजा-प्राय, बाह्य प्रयोग अंगनादिमें ।

लवण क्षार विज्ञानीय :

यवक्षार : जौखार
Impure Potassium Carbonate

निर्माण विधि—यावशूकोंकी भस्म बनाकर जल द्वारा क्षार विधिसे बनालें। क्षारविधि निघण्टु प्रकरणमें देखें।

गुण—पाचक, स्वेदल, मूत्रल, कफहर, रजःस्रावक, गुल्म, प्लीहायकृतोदर, कास, मूत्रकृच्छ्र, अम्लपित्त, उदरशूलहर।

मात्रा—४ गुंजासे १० गुंजा पर्यन्त उष्णजलके साथ।

सर्जिका क्षार : साजी खार
Impure Carbonate of Soda

निर्माण—क्षारमय मृत्तिका (खारी मिट्टी) तथा लोणी, पवासा आदि वनस्पतियोंकी भस्मसे क्षार विधि द्वारा बनाया जाता है।

गुण—कटु, तीक्ष्ण, उष्ण, पाचन, वातानुलोमन, श्वास कास, गुल्म, आध्मान, उदरशूल तथा कृमिहर।

मात्रा—४ से १० गुंजा उष्ण जलके साथ।

सूचना—तिलक्षार, पलाशक्षार, वासाक्षार, अपामार्गक्षार

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

स्नुही क्षार, अर्क क्षारादि वानस्पतिक क्षारोंका वर्णन तत्तद् वनस्पतियोंके साथ किया गया है।

टंकण : सौभाग्य *Borax*

शोधन—ऊर्ध्व पातन द्वारा।

गुण---कटु, उष्ण, तीक्ष्ण, सारक, कफनिष्कासक, पाचक वातकफहर, पित्तवर्धक, कास, आध्मान, अजीर्ण बालातिसार वमन, नाशक और रजःप्रवर्त्तक।

मात्रा---२ से ८ गुंजा पर्यन्त।

नृसार : चूलिका लवण
Amonium Chloride

शोधन---स्फटिकीकरण विधिसे।

गुण---स्निग्ध, तीक्ष्ण, स्वेदल, पाचक, सारक, कफहर अजीर्ण, उदरशूल, आध्मान, यकृतवृद्धि, कास नाशक।

मात्रा : २ से ८ गुंजा पर्यन्त।

सोरक : सूर्यक्षार
Potassium Nitrate

शोधन---स्फटिकी करण विधिसे निर्मल कर एला क्वाथ से तीन भावना दें।

गुण---कटु, उष्ण, तीक्ष्ण, मूत्रल, स्वेदल, पाचक, अजीर्ण,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मूत्रकृच्छ्र, ज्वरहर, श्वास, कास वेग शामक।
मात्रा---२ से १० गुंजा पर्यन्त।

पंच लवण

प्रकार : (१) सैन्धव Rock salt; (२) सामुद्र Sea salt,
(३) सौवर्चल (कृष्ण) लवण; (४) रोमकम्;
(५) बिड लवण सब लवणोंमें Sodium Chloride तत्त्व मुख्य है।

गुण--- सर्व दीपन, पाचन, भेदन, अनुलोमन, वातकफहर हैं। कृष्ण लवण विशेषकर अनुलोमक, पाचक उदर-शूलहर। गुल्म, अजीर्ण, उदरशूल, आध्मान विबन्ध नाशक है। सैन्धव शीत तथा नेत्र्य है। अन्य उष्ण हैं।

योग---(१) अर्क लवण: अर्कपत्रों तथा सैन्धवको अग्निमें भस्म करके बनाया जाता है।
गुण---भेदन, गुल्म, यकृत् प्लीहोदर नाशक
मात्रा---४ से ८ गुंजा तक, उष्ण जलसे।
२ नारिकेल लवण---नारिकेल फलमें सैन्धव भरकर पुटपाक विधिसे भस्म किया जाता है।
गुण----अम्लपित्त तथा परिणामशूल, वमनहर।
मात्रा---४ से ८ गुंजा पर्यन्त।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

धातु विज्ञानीय :

धातु शब्द निरुक्ति--खालित्य, पालित्य, कृशत, तथा वृद्धता जर्जरताको दूर कर देहको धारण करती है; अतः इन पदार्थोंको धातु कहा जाता है।

सब धातुओंका सामान्य शोधन—शोधनीय धातुके सूची वेध्य पत्र बनाकर अग्निमें गरम कर निम्न लिखित द्रवोंमें ३-३ बार बुझाएँ (सिंचन) करें : तैल, तक्र, गोमूत्र, कांजी, कुलत्थक्वाथ। अथवा कदलीमूल रसमें ७-७ बार बुझाएँ।

सामान्य मारण--शुद्ध मनःशिला, शुद्ध गन्धक, शुद्धधातु सब समान। अर्कदुग्धमें भावना देकर मध्यमाग्नि से भस्म करलें। इस प्रकार १२ पुटोंमें भस्म बन जाती है।

सुवर्ण : *हिरण्य Gold, Aurum*

अशुद्धसे हानि--बल बुद्धि वीर्यनाश तथा अनेक रोग।

त्याज्य सुवर्ण लक्षण--कठोर, रुक्ष, छेदन करने, कष पाषाणपर घिसने तथा अग्निमें तपानेसे श्वेत वर्ण रजत, ताम्रयुक्त।

ग्राह्य--कोमल, रक्तपीताभ, स्निग्ध, ताम्र, रजत रहित गुरु। शाणोपल (कसौटी) पर घिसनेपर कुंकुम वर्ण देनेवाला

शोधन—एक कर्ष सुवर्ण पत्रोंपर निम्बुरसमें पीसे हुए

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मृत्तिका पंचकसे लेप कर कपोत पुटमें सात वार पुट दें ।

मारण—शुद्ध सुवर्णपत्र १ कर्ष (१ तोला) शुद्ध पारद १ कर्ष, शुद्ध हिंगुल, गन्धक, मनःशिला, नृसार प्रत्येक-१-१ कर्ष ।

विधि—सुवर्ण पत्र तथा पारदको मिलालें। निम्बुरस या अन्य किसी अम्लद्रवमें पीसकर उष्ण जलसे प्रक्षालन करें। ऐसा करनेपर काला द्रव निकलेगा। जब तक द्रव काले वर्णका निकलता रहे प्रक्षालन करते रहें। पुनः शेष द्रव्य भी मिला दें और पूर्ववत् अम्लद्रवसे मर्दन कर धूपमें सुखा लें। लघु पुटमें अग्नि दें। निश्चन्द्र भस्म बन जायगी।

गुण—मधुर, शीतवीर्य, मधुरविपाकी, मेध्य, रसायन, त्रिदोष हर, क्षयरोग तथा जीर्ण व्याधि शामक है।

मात्रा—१/२ से १ गुंजा पर्यन्त; दूध, मधु, मलाईके साथ।

योग—सुवर्ण वसन्त मालिनी, योगेन्द्र रस, वात चिन्तामणि।

रजत : तार : *Silver*

अशुद्धसे हानि—ताप, विबन्ध, अंगसाद, वीर्यनाश ।

त्याज्य—तपाने पर मलिन, पीत या रक्तवर्ण, रूक्ष, लघु, कठोर, सदल ।

ग्राह्य—स्निग्ध, मृदु, निर्दल, छेदन करने, तपाने तथा कसौटी पर घिसनेसे श्वेत चन्द्रमावत् श्वेतवर्ण ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

शोधन—पतले पत्रोंको अग्निमें तपाकर अगस्त्य स्वरसमें तीन बार वा चागेरी स्वरसमें सात बार बुझाएँ।

मारण—शुद्ध रजतपत्र, गन्धक, मनःशिला सब समान भाग निम्बु स्वरस वा जलसे पीसकर कुक्कुट पुटमें तीन बार भस्म करें। काले अंजनके समान भस्म बनती है।

गुण—अम्ल कषायरस, शीतवीर्य, मधुर विपाकी, त्रिदोष-हर, रसायन, मेध्य, सर, गर्भाशय शोधक, रसायन, प्लीहोदर, नाड़ीशूल, तथा निर्बलता निवारक हैं।

मात्रा—१/२ से १ गुंजा पर्यन्त।

ताम्र : शुल्व : Copper

भेद—१ नेपालताम्र : लक्षण—स्निग्ध, कोमल, गुरु घन घातसह, जपापुष्प वर्ण।

२ म्लेच्छताम्र : लक्षण—कठोर, कृष्ण श्वेत, अरुण छायावाला लघु। भंगुर कठोर।

ग्राह्य—नेपाल ताम्रका चिकित्सामें उपयोग किया जाता है।

अशुद्धसे हानि—रेचन, वमन, कान्तिनाश, भ्रान्ति, ताप शोषादि।

शोधन—तनु पत्रोंको चागेरी स्वरसमें सात बार बुझाएं अथवा अष्टमांश सैन्धव युक्त गोमूत्रमें दोला यन्त्र द्वारा दो याम तक स्वेदन करें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मारण—शुद्धताम्र १ कर्ष, कज्जली १ कर्ष, दोनोंको निम्बु स्वरससे पीसकर कुक्कुट पुटमें पुट दें। तीन पुटोंमें कृष्ण भस्म बन जाती है।

अमृतीकरण---ताम्रके निम्नलिखित आठ दोषोंको दूर करनेके लिये अमृतीकरण किया जाता है :— वान्ति, भ्रान्ति, चित्तसन्ताप, शोष, उत्क्लेद; अरुचि, दाह और मोह।

विधि—ताम्र भस्म १ पल, शुद्ध गन्धक १/२ पल, पंचामृत से मर्दन कर पुट दें। तीन बार पुट देनेसे अमृती करण हो जाता है। अथवा निम्बुरसमें तबतक पुटें देते रहें जब तक ताम्रकी कषायता नष्ट न होजाए।

गुण—मधुराम्ल तिक्त कषायरस, उष्णवीर्य, कटुविपाकी सर स्निग्ध, लेखन, त्रिदोषहर, श्वास, क्षय, पाण्डु अर्श यकृत् प्लीहावृद्धि, अम्लपित्त, परिणाम शूलहर है।

मात्रा—१/२ से १ गुंजा पर्यन्त।

योग—१ हृदयार्णव रस, मात्रा १ रत्ती, हृदय रोग।

२ गजकेसरी रस मात्रा २ रत्ती, उदरशूल।

वंग : रंग : *Tin*

भेद—१ खुर वंग—मृदु निर्मल, द्रुतद्रावी, निःशब्द, रजत कान्ति ;

२ मिश्रक द्रावमें कठिन धूसर कठोर अन्य धातु

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मिश्रित।

ग्राह्य: खुरवंग; त्याज्य: मिश्रक वंग।

अशुद्धसे हानि---त्वचारोग, किलास, गुल्म, क्षय, पाण्डु भगन्दरादि।

शोधन----वंगको लोहपात्रमें द्रवित कर हरिद्राचूर्ण युक्त सिन्दुवार (सम्भालु) स्वरसमें तीन बार बुझाएँ।

मारण—शुद्ध वंगको लोह कड़ाहमें द्रवित कर, वंगकी अपेक्षा चतुर्थांश अपामार्ग चूर्णका प्रक्षेप शनैः शनैः डालते रहे तथा लोह दण्डसे मर्दन करते रहें; नीचे तीव्राग्नि जलाते रहें। चूर्ण होनेपर एकत्र कर एक शरावसे आच्छादित कर २४ घन्टे तीव्राग्नि देवें। स्वाङ्ग शीत होनेपर श्वेतवर्ण भस्म मिलेगी।

गुण—तिक्त, कषाय, लवण रस, शीत, रस, रुक्ष मेध्य, प्रमेह, मेदोरोग, कफजरोग, श्वेतप्रदर, निशा-स्वेद, श्वास कृच्छ्रता शामक तथा वाजी-करण है।

मात्रा—१ से २ गुंजा पर्यन्त, मधु, दुग्ध, मक्खन।

योग—बृहत् वंगेश्वर रस, मूसल्यादि चूर्णादि।

सुवर्ण वंग

द्रव्य—शुद्ध पारद, शुद्ध वंग, शुद्ध गन्धक, शुद्ध नृसार, सब समान भाग।

विधि---वंगको लोहपात्रमें द्रवित करलें। पुनः पात्रको

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अग्निपरसे उतारकर द्रवित वंगमें तत्काल पारद मिलादें। पिष्टी-सी बन जाएगी। इसे अम्ल द्रवसे मर्दन कर उष्ण जलसे धोते रहें, जबतक मल, काला द्रव, निकलता रहें। ततः धूपमें सुखा कर गन्धक तथा नृसार मिला कज्जली बनालें। बालुका यन्त्र द्वारा पाक करलें।

गुण मात्रा----वीर्यक्षीणता, प्रमेह, पूयमेहादिमें; मात्रा १ से २ गुंजा।

सूचना--- वानस्पतिक क्षारोंसे भस्मीकृत वंग शीतल तथा गन्धकादिसे मारित उष्ण होती है।

नाग, सीसक (*Lead*)

ग्राह्य- --गुरु, मृदु, बाहरसे श्याम, छेदन करनेपर अन्तः नीलोज्ज्वल, द्रुतदावी। विपरीत लक्षणोंयुक्त त्याज्य है।

अशुद्धसे हानि----सन्धिपीड़ा, पक्षवध, उदर शूल, क्षय, भगन्दरादि।

शोधन----नागको द्रवित कर सिन्दुवार स्वरसमें सात बार बुझाएँ।

मारण---शुद्ध नाग, शुद्ध मनःशिला, शुद्ध गन्धक, समान भाग वंगके समान मनःशिलासे नागका चूर्ण बनाकर स्वाङ्गशीत होनेपर गन्धक मिला निम्बू स्वरससे पीसकर चक्रिका बना धूपमें सुखाकर लघुपुटमें अग्नि दे। तीन पुटोंमें भस्म बन

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

जाती है।

गुण----मधुरतिक्त, उष्ण वीर्य, सर, लेखन, स्निग्ध, प्रमेह, वातव्याधि, संग्रहणी, अर्श, कफज रोग, रक्तप्रदर नाशक है।

मात्रा—१/४ से १ गुंजा पर्यन्त।

योग—अन्त्रशोषान्तक रस १/२ से १ गुंजा; जीर्णज्वर, क्षय, संग्रहणी, अतीसार नाशक है।

यशद (*Jincum*)

ग्राह्य—छेदनमें उज्ज्वल, स्निग्ध मृदु द्रुतद्रावी गुरु। विपरीत लक्षणोंवाली त्याज्य है।

अशुद्धके दोष—कुष्ठ, गुल्म, प्रमेह, क्षयादि।

शोधन—नागवत्।

मात्रा मारण—वंगवत्

गुण—कटु कषायरस, शीतवीर्य, कटुविपाकी, नेत्ररोग, प्रमेह, निशास्वेद, स्राव, कम्पवातहर, संकोचक, तथा त्रिदोषहर है।

लोह, अयस् (*Iron*)

भेद—१ मुण्ड; २ तीक्ष्ण; ३ कान्तलोह; भस्मार्थ तीक्ष्ण या कान्तलौह लेने चाहिए।

अशुद्धके दोष—हृदयरोग, कुष्ठ, दाह, शूल, क्लैब्य, अश्मरी, विबन्धादि।

शोधन --एक प्रस्थ (१ सेर) से चार प्रस्थ पर्यन्त लोहचूर्ण

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

को अग्निमें तपाकर त्रिफला क्वाथमें अथवा कदलीमूल क्वाथमें सात बार बुझाएँ।

प्रमाण—लोह एक भाग, त्रिफला ४ भाग, जल सोलह भाग शेष ४ भाग।

मारण : सामान्य—शुद्ध लोहको निम्बु स्वरसकी भावना देकर चक्रिका बना धूपमें सुखा गजपुटमें भस्म करलें। पचास पुटोंमें रक्तोत्पल वर्ण भस्म बन जाएगी।

मारण : विशिष्ट—१ भानुपाक, २ स्थालीपाक ३ पुटपाक द्वारा।

(अ) भानुपाक—शुद्ध लोहको त्रिफला क्वाथसे भावना दें और तीव्र सूर्यातपमें सुखालें। एवं सात बार करे।

प्रमाण—लोहचूर्ण १ भाग, त्रिफला १ भाग, द्विगुण जल चतुर्थांशावशेष रक्खे।

(आ) स्थालीपाक—त्रिफला क्वाथके साथ लोह चूर्णको कढ़ाहमें क्वाथ शोषण होने तक तीव्राग्नि द्वारा पकाना।

प्रमाण—लोह चूर्ण १ भाग, त्रिफला ३ भाग, जल १६ भाग, अवशिष्ट अष्टमांश।

(इ) पुटपाक—त्रिफला क्वाथ वा अन्य मारण द्रव्योंसे लोहचूर्णको भावना देकर चक्रिका बना गजपुट में भस्म करें। ६०, १०० या १०००

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

बार पुट देनेसे भस्म बन जाती है।

प्रमाण—लोहचूर्ण १ भाग, मारणद्रव्य १ भाग, जल १६ भाग, चतुर्थांशावशिष्ट।

निरुत्थी करण—गोघृत, शुद्ध गन्धक, लोह भस्म, समान भाग लेकर घृत कुमारी रससे भावना दे गजपुट में भस्म करे। एक बारमें ही भस्म निरुत्थ होजाती है।

निरुत्थ परीक्षा—मित्रपंचकके साथ भावना देकर गजपुट में भस्म करनेसे यदि स्वपूर्व धातु रूपमें परिवर्तित नहीं होती, तो निरुत्थ भस्म समझनी चाहिए।

गुण—मधुर कषाय शीतवीर्य, कटुविपाकी, लेखन, गुरु पित्तकफजरोगहर, उदर रोग, क्षय, पाण्डु, अर्श, श्वास, मेदो रोग नाशक है। स्थूलता, शोष, तथा रक्त क्षीणता जन्य व्याधिहर।

मात्रा—१ से २ गुंजा पर्यन्त।

योग—प्रदरान्तक लोह, कुमार्यासव, लोहासवादि।

मण्डूर, लौह किट्ट, *Iron Rust*

सूचना—षष्ठीवर्षीय (अधम); सप्तति वर्षीय मध्यम तथा शतवर्षीय सर्वोत्तम है।

ग्राह्य मण्डूर—स्निग्ध, गुरु, दृढ़ कृष्णवर्ण, छिद्र रहित।

शोधन—विभीतकके अंगारोंमें मण्डूरको उष्ण कर गोमूत्रमें सात बार बुझादें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मारण—त्रिफला क्वाथसे भावना देकर गजपुटमें अग्नि दें। ३० बार पुट देनेसे रक्तचन्दनके वर्णकी भस्म बन जाती है।

गुण—मधुर, शीतवीर्य, मधुर विपाकी, पित्तशामक, दीपन, पाण्डु, कामला, शोफ, शोषरोग नाशक तथा रक्तवर्धक है।

मात्रा—१ से २ गुंजा।

योग—१ पुनर्नवा; मण्डूर; मात्रा; २ रत्ती; पाण्डुरोग।
२ मण्डूरबटक; मात्रा ४ से ८ गुंजा; परिणाम शूल।

उपधातव : *Ores*

सुवर्णमाक्षिकम् तापीजं
Coppre Pyrites

ग्राह्य—स्वर्ण वर्ण, कोण रहित, गुरु, स्निग्ध।

अशुद्धके दोष—नेत्ररोग मन्दाग्नि कोष्ठवात हलीमक

शोधन—सुवर्ण माक्षिकको २१ बार तताकर निम्बु स्वरसमें बुझाएँ।

मारण—शुद्ध स्वर्णमाक्षिकको निम्बु स्वरससे पीसकर गजपुटमें १० बार अग्नि देनेसे रक्त वर्णकी भस्म बन जाती है।

गुण—मधुर तिक्त शीतल, मधुरविपाकी, त्रिदोषहर, रसायन योगवाही, चक्षुष्य, क्षय, पाण्डु, जीर्णज्वर, विषम ज्वर प्रमेह मन्दाग्निहर है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मात्रा—१/२ से २ गुंजा पर्यन्त।

सूचना—रजतमाक्षिक (Iron Pyrite) तथा विमल (Marksite) का शोधन मारण गुणादि स्वर्ण माक्षिकवत् समझना चाहिए। यह स्वर्ण-माक्षिककी अपेक्षा हीन गुण होते है।

तुत्थ, मयूरक *Copper Sulphate*

ग्राह्य—गुरु, स्निग्ध, मयूर कण्ठ प्रतिम।

निर्मलीकरण—स्फटिकीकरण द्वारा।

मारण—शुद्ध तुत्थको निम्बुरस तथा दधि मस्तु (दहिका पानी) से मर्दन कर लघुपुटमें अग्नि दे। शीघ्र काले वर्णकी भस्म बन जाती है।

गुण मात्रा—ताम्रवत्

सूचना—तुत्थ कृमिनाशक, लेखन, संकोच है। अतः बाह्य उपयोगमें प्रायः व्यवहृत होता है।

सिन्दूर : भालभूषण : *Red Lead Oxide*

गुण—व्रण शोधक रोपक त्वचारोग पामा विचर्चिकादिहर। प्रायः बाह्यमें काम आता है।

योग—सिन्दूरादि तैल—त्वचारोगोंमें।

मृद्दार श्रृङ्ग *Litharge*

शोधन—मृद्दार श्रृंग के खण्ड खण्ड करके उसमेंसे मिट्टीका अंश निकाल देना चाहिए। और निम्बुरसमें

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पीस लेना चाहिए।

गुण—शीतल, वातकफहर, व्रण रोपक, केश्य संकोचक फिरंगव्रण त्वचारोग पामा कण्डु आदि नाशक।

सूचना—इसका अन्तः उपयोग नहीं होता।

खर्पर : रसकम् *Calamine, Zinc Carbonate*

भेद—१ सदल (दर्दुर) यह सत्व पातनार्थ व्यवहृत होता है।
२ निर्दल (कारवेल्लक) यह औषधियोंमें प्रयुक्त होता है।

शोधन—मृद्दार श्रृङ्गवत्। पीतवर्ण चूर्ण बन जाता है।

मारण—शुद्ध पारद, शुद्ध खर्पर-समान मात्रामें मिलाकर वाराहपुटमें वन्योत्पलोंकी अग्नि देनी चाहिए। तीन बार पुट कर देनेसे पीतवर्णकी भस्म बन जाती है।

गुण—शीतल, कफपित्तहर, चक्षुष्य, रक्तपित्त, रक्तप्रदर जीर्णज्वर तथा प्रमेह नाशक।

मात्रा—१/२ से २ गुंजा पर्यन्त

तुत्थ तथा खर्पराका सत्वपातन :-

तुत्थ—तुत्थ २ पल, टंकण २ पल, निम्बुस्वरससे मर्दन कर अन्धमूषामें तीव्राग्नि द्वारा पाक करनेसे ताम्रवत् सत्त्व प्राप्त होता है।

मारण गुण मात्रादि—ताम्रके समान।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

खर्पर—खर्पर १ भाग, लाक्षा, हरिद्रा, हरीतकी, अतसी, गुड, राल, टंकण, सब खर्परके समान पीस कर गोला बना तीव्राग्निमें गरमकर यशद-समान सत्त्व प्राप्त करे।

गुण—पाण्डु, शोथ, विषमज्वर, रजःशूल, रक्तगुल्म, मधुमेह; हिक्काशामक।

मात्रा-मारण---यशद्वत्।

कान्तपाषाण *Magnectic Iron Ore*

शोधन—निम्बुरसमें कान्तपाषाणको पीस लें। पुनः शिग्रुरस में दोलायन्त्र द्वारा स्वेदन करे चार याम तक।

मारण—गोमूत्र तथा त्रिफला क्वाथमें पीसकर मृदुपुटमें सात वार पुट दें। रक्त भस्म बनती है।

गुण—शीत, पौष्टिक, रक्तवर्धक, हृदयकम्प, पाण्डु, श्वास रक्तपित्त. जीर्णज्वर शामक।

मात्रा—२ गुंजा। लोहवत् गुणप्रद।

कासीस *Iron Sulphate*

भेद---१ चूर्ण कासीस, २ पुष्प काशीस।

हरित वर्ण स्वच्छ पुष्प काशीस औषधियोंमें व्यवहार करें।

शोधन—भृङ्गराज स्वरससे तीन घंटे पर्यन्त दोलायन्त्र द्वारा स्वेदन करें।

मारण—स्नुहीपत्र स्वरससे भावना देकर पुट दें। यह पुट

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कासीसकी अम्लता नष्ट होने तक देते जाइए। अम्लता नाश काशीस भस्मकी परीक्षा है।

गुण—कषाय, उष्णवीर्य, श्वित्र प्लीहावृद्धि नाशक, केश्य रक्तवर्धक रजःप्रवर्त्तक वात कफ शामक, श्लेष्म कला संकोचक, बाह्य और अन्तः दोनों प्रकारसे व्यवहृत होता है।

मात्रा—१/२ से १ गुंजा पर्यन्त।

योग-----१ कासीसादि तैल, अर्श श्वित्रमें;
बाह्य प्रयोगार्थ—वीसर्प गुदभ्रंशादि रोगेषु।
२ कासीसद्रव---शुद्ध कासीस ५ गुंजा, स्रवितजल ५ तोला (१ प्रतिशत शक्तिका द्रव)

अंजन, मेचक

भेद—१ कृष्णाञ्जन-सौवीरांजन (Lead Sulphide Galena)
२ स्रोतोंञ्जन Antimony sulphide
३ पुष्पांजन (यशद पुष्प) *Zinc* Oxide
४ रसांजन : दारुहरिद्रा सत्त्व, पारदपीतभस्म वा (Yellow Oxide of Mercury)
५ श्वेताञ्जन (गोदन्तीवत् पदार्थ) Calcium Sulphate.

शोधन—प्रथम दो अंजनोंका ही शोधन किया जाता है।

शोधन—त्रिफला क्वाथसे सप्ताह पर्यन्त मर्दन करें।

सौवीराञ्जनके गुण—ग्राही, शीतल, नेत्ररोग, रक्तपित्त, रक्त-

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्रदर, रजःस्राव नाशक है।

स्रोतोञ्जन के गुण—मधुर कषाय लेखन शीत ग्राही रक्त-पित्त वमन हिक्का नेत्ररोग कफपित्त शामक है।

मात्रा—आधेसे १ गुञ्जा पर्यन्त।

सूचना—तीन दिनसे अधिक अंजनोंका आन्तरिक प्रयोग न करे। विष प्रभाव तथा स्त्रियोंमें रजोनाश का भय है।

पुष्पाञ्जन—शीतल पित्तशामक दाह विर्चिका पामादि त्वचारोग हिक्का तथा नेत्ररोग शामक है।

रसाञ्जन—नेत्र पद्म शात कण्डु पद्मकृमिनाशक।

पुष्पाञ्जन—ग्राही शीतल रक्तस्राव स्तम्भक अतीसारहर नेत्ररोगोंमें विशेष प्रयोग नहीं।

शिलाजतु—शैलेयम

Asphaltum Bitumen

परिचय—उच्च हिमालयकी शिलाओंसे उष्णकालमें सूर्य-तापके प्रभावसे एक स्राव विशेष निकलता है। यही शिलाजतु है।

भेद—शिलाओंमें विद्यमान धातुओंकी मात्राके अनुसार यह भेद होता है:—

(१) सौवर्ण (२) राजत (३) ताम्र (४) लोह

लोह सर्वोत्तम है।

शोधन—शिलाजतुके पाषाणको चूर्ण करले। ततः इसमें

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चतुर्गुण जल या त्रिफला क्वाथ डाले। सम्यक्तया मिलाकर एकान्त स्थानमें मल भागको स्थिर होने दें। ततः सारकपत्र (Filter Paper) से छान लें। अथवा कार्पास तूलिका की वर्ति बनाकर उसके द्वारा जलको निथार लें। पुनः मृदु अग्निपर जलको वाष्प द्वारा उड़ा दें और मधुवत् घन कृष्णवर्णकी शिलाजतु प्राप्त करें।

गुण—तिक्त कषाय, अनुष्णाशीत कटु विपाकी मूत्रल योगवाही रसायन प्रमेह मधुमेह तथा जीर्ण व्याधि नाशक।

मात्रा—२ से ४ गुञ्जा पर्यन्त।

योग—चन्द्रप्रभा वटी आदि।

गैरिकम् (*Red Ochre Halmatite*)

भेद—१ पाषाण गैरिक.... ....मृत्तिका बहुल (त्याज्य)
२ स्वर्ण गैरिक ... .लोह बहुल (ग्राह्य)

शोधन—गोदुग्धसे भावना दे लें वा गोघृतमें मन्दाग्निपर भर्जन करलें।

गुण—मधुर कषाय शीतल संग्राही तापहर वमन हिक्का रक्तस्राव रक्तपित्त रक्तप्रदर दर्द शीतपित्त अतीसार शामक

मात्रा—२ से ८ गुञ्जा पर्यन्त।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रत्न (*Precious Stones*)

रत्न शब्द निरुक्ति---रमणीयतरं यस्मात् रमन्तेऽस्मिन्नतीव वा।

नव महारत्न---हीरक माणिक्य मुक्ता पुष्पराग नील तार्क्ष्य वैदूर्य गोमेद विद्रुम।

हीरक : वज्र् भिदुरम् (*Diamond*)

अशुद्धसे हानि---पार्श्व वेदना कुष्ठ ताप भ्रमादि।

त्याज्यके लक्षण---वर्त्तुल मलिन स्वर स्फुटित रेखाबहुल काकपद युक्त।

ग्राह्यके लक्षण---स्निग्ध विद्युत्वत उज्ज्वल रेखा-रहित तीक्ष्ण षट्कोण अष्टास्र तथा लेखन (दूसरी धातुओंका लेखन करने वाला तथा स्वयम् अलेख्य)।

शोधन----तीव्राग्निमें हीरकको उष्ण कर शुद्ध पारदमें शतधा सेचन करें। इससे हीरक भङ्गुर भी होजाता है तथा सरलतासे खरल किया जासकता है।

मारण----शुद्ध हीरक पारदभस्म शुद्ध मनःशिला शुद्ध गन्धक सब समान भाग। गजपुटमें अग्नि दे। दूसरी पुटमें तथा तदनन्तर रसभस्म न डाले। इस प्रकार १४ पुटोंमें भस्म बन जाती है।

गुण----परम हृदय रसायन योगवाहि प्रमेह यक्ष्मा जीर्ण-ज्वर शामक।

मात्रा----१/३२ से १/१६ गुञ्जा पर्यन्त।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मात्रा निर्माण विधि---१ गुञ्जा हीरक भस्म ४ माषा रस-
सिन्दूर दोनोंको पीसलें। मात्रा १ गुञ्जा।

माणिक्य, कुरुविन्द (*Ruby*)

त्याज्य—लघु धूमाभ कर्कश विरुण निष्प्रभ चिपिट वक्र त्याज्य है।

ग्राह्य—रक्त कमल वर्ण प्रभायुक्त वृजायत समांग।

शोधन—निम्बु रसमें दोला यन्त्र द्वारा एक याम स्वेदन करे।

मारण—शुद्ध माणिक्य शुद्ध मनःशिला शुद्ध गन्धक सम भाग निम्बु रससे पीसें सप्ताह पर्यन्त। ततः गजपुटमें भस्म करे। आठ पुटोंमें पाण्डु वर्णकी भस्म होजाती है।

गुण—मधुर शीत रसायन दीपन कफ क्षयरोग नाशक।

मात्रा—१/४ से १ गुंजा पर्यन्त।

मौक्तिकम् (*Pearl*)

त्याज्य----दीर्घ पार्श्वकृश रुक्ष सव्रण श्याम निष्प्रभ।

ग्राह्य----स्निग्ध वृत्त निर्व्रण चन्द्रवत समुज्ज्वल गुरु। शालितुष तथा गोमूत्र लवणके साथ मर्दन करने पर भी जिसकी प्रभा नष्ट न हो।

शोधन----जयन्ती व अगस्त्य स्वरसमें दोला यन्त्र द्वारा एक याम (३ घण्टे) तक स्वेदन करे।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मारण-- -शतपत्री [गुलाब] जल में पीसकर तीन बार लघु पुटमें पाक करे।

सूचना—उत्तम मुक्ताको शतपत्री स्रुतजलमें पीसकर पिष्टी बनाकर भी प्रयोग किया जाता है।

गुण—मधुर रस शीत वीर्य मधुर विपाकी रसायन पित्त शामक जीर्णज्वर दन्तास्थिमार्दव हृदयकम्प यक्ष्मादि रोगोंमें ।

मात्रा—१/२ से २ गुञ्जा पर्यन्त ।

योग—मुक्ता पञ्चामृत, योगेन्द्ररसादि अनेक ।

पुष्पराज : पीतमणि (*Topaz*)

शोधन—कुलत्थ क्वाथयुक्त काञ्जीमें एक याम स्वेदन करे।

मात्रा, मारण—माणिक्यवत् ।

गुण—शीतल वातकफ़ शामक वमन अर्श नाशक ।

नील *Sapphire*

भेद—१ जलनील २ इन्द्रनील । द्वितीय श्रेष्ठ है।

शोधन—नीली स्वरसमें दोलायन्त्र द्वारा एक याम तक स्वेदन करे।

मारण, मात्रा—-माणिक्यवत ।

गुण----दीपन त्वचारोग शामक विषमज्वर शामक श्वास तथा त्रिदोषहर है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तार्क्ष्य : मरकत *Emerald*

शोधन----गोदुग्धमें एक याम तक दोलायन्त्रमें स्वेदन करे।
मारण मात्रा, गुण---पुष्परागवत। विशेष गुण : सन्निपात शामक।

वैडूर्य विडालाक्ष *Cat's Eye*

शोधन---त्रिफला क्वाथमें एक याम पर्यन्त स्वेदन करे।
मारण मात्रा----माणिक्यवत्।
गुण----मधुर शीतल चक्षुष्य पित्त नाशक रक्तपित्त नाशक।

गोमेद *Agate*

निरुक्ति—गोमेदवत् आभा होने से गोमेद नाम है।
शोधन मारण मात्रा----माणिक्यवत्।
गुण----त्वक्दोष पाण्डुरोग क्षयहर और उष्ण

विद्रुम प्रवाल *Coral*

त्याज्य----पाण्डुवर्ण रुक्ष लघु सूक्ष्म धूसर मसृण।
ग्राह्य----आरक्त स्निग्ध निर्व्रण गुरु दृढ़ दीर्घ।
शोधन----तण्डुलीय वा जयन्ती स्वरसमें दोलायन्त्र द्वारा एक याम तक स्वेदन करे।
मारण---प्रवाल चूर्णको शतपत्री अर्क वा घृतकुमारी स्वरससे पीसकर गजपुटमें भस्म करलें। तीन बारमें श्वेत भस्म बन जाती है।
पिष्टी---प्रवाल चूर्णको शतपत्री सुतजल में पीसले। यह

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कुछ रक्ताभ चूर्ण बन जाएगा। इसे ही चन्द्र-पुटी प्रवाल भस्म भी कहा जाता है।

गुण—मधुर शीतल क्षारीय मधुर विपाकी त्रिदोषहर क्षयज कास जीर्णज्वर रात्री स्वेद अस्थिमार्दव अस्थिशोष रक्तपित्त बालशोषादि रोग और पित्त शामक है।

मात्रा—१/२ से २ गुञ्जा पर्यन्त।

रत्नोंके सामान्य दोष :—

ग्रासश्च भासश्च विन्दुश्च जलरेखा च गर्भता।
क्षेत्रतोयभवा दोषाः रत्नेषु न लगन्ति ते।

वैक्रान्त कुवज *Fluor Spar*

शोधन—लवण यवक्षार सर्जिकाक्षार सहित कुलत्थ क्वाथमें एक याम तक दोलायन्त्रमें स्वेदन करें।

मारण—वैक्रान्त, गन्धक, हिङ्गुल सब शुद्ध तथा समान प्रमाणमें लेकर निम्बु स्वरससे मर्दन कर गजपुट में अग्नि दे। अष्ट पुटोंमें भस्म बन जाती है।

गुण—त्रिदोषहर, योगवाही, रसायन, अग्नि दीपन। जरा शोष प्रमेह शोफ श्वास शामक है।

मात्रा—-१/२४ से १/४ गुंजा पर्यन्त।

राजावर्त्त नृपोपल *Lapis Lazule*

शोधन—-गोमूत्र, सर्जिकाक्षार निम्बुरसमें एक याम तक स्वेदन करे।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मारण—शुद्ध गन्धक, शुद्ध राजावर्त्त समान भागको निम्बुरस में पीसकर गजपुटमें अष्टधा भस्म करे।

गुण—कटुतिक्तरस, शीतवीर्य, दीपन, पित्तशामक पाण्डुत्तय हिक्का और मदात्ययशामक।

मात्रा—१/४ से १ गुंजा पर्यन्त।

शिलाबदर : पत्थरबेर : हजरलयहूद

परिचय—बदराकृति धूसर वर्णका प्रस्तर है।

शोधन—उष्ण जलमें दोलायन्त्र द्वारा १ याम तक स्वेदन करे।

मारण—मूलक स्वरसमें पीसकर लघुपुटमें तीन बार अग्नि दें।

पिष्टी—मूलक रसकी भावना देकर पीसलें। यह भी भस्मवत् उपयोगी है।

गुण—उष्ण, स्निग्ध, मूत्रल मूत्रकृच्छ्र, शर्करा अश्मरि मूत्राशयशोथ मूत्राशयस्थ रक्तस्राव नाशक वृक्क शूलहर।

मात्रा—१.१/२ से ३ माषा पर्यन्त। अनुपान : घी वाताद, तैल, दुग्ध।

सूचना—अति प्रयोग यकृत्के लिए हानिकर है।

यशदशिला : संगेयशद : Jade

परिचय—नील हरित वा कृष्णहरित वर्णका कठोर प्रस्तर है।

शोधन-मारण-पिष्टी—शिलाबदरवत्, शतपत्री स्रुतजले।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गुण—शीतल, रुक्ष, हृदय रसायन, मेध्य, उन्माद स्मृतिभ्रंश मूत्राशय शोथ, आन्त्रव्रण तथा मूत्राशय शोथहर है।

मात्रा—४ से ८ गुंजा पर्यन्त। अनुपान : श्वेत मधु वा मध।

नागशिला, जहर मोहरा *Serpentine*

परिचय—यह हरित वा हरितपीत वर्णका प्रस्तर है।

शोधन-मारण-पिष्टी— -शिलाबदरवत्।

गुण—त्रिदोष शामक, विशेषतः पित्तशामक, संग्राही, शीतल, अतीसार, विसूचिका मुखशोथ बालातीसार शामक, वातनाड़ी एवं मांसपेशियोंको शान्ति देता है। अनुष्णाशीत है।

मात्रा—४ गुंजासे ८ गुंजा तक। अनुपान : शर्बत।

अग्निजार अम्बर *Ambergris*

परिचय—कृष्ण वा श्याम वर्णवाला तीव्र गन्ध युत द्रव्य है।

गुण—रुक्ष, उष्ण, वाजीकरण, उत्तेजक तथा कटुरस युक्त। अनुलोमक, मेध्य, सन्धिशोथ, उदरकृमिहर। हृदय, मस्तिष्क, यकृत् तथा वातव्याधि शामक है।

मात्रा—२ से ४ गुंजा पर्यन्त। अनुपान : वंशरोचना धान्यक चूर्ण।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सूचना—अतिप्रयोग आमाशयको हानिकर होता।

अकीक *Agate*

परिचय—यह गोमेद जातिका प्रस्तर है।

शोधन—उष्ण जलमें वा निम्बु स्वरसमें दोलायन्त्र द्वारा १ याम तक स्वेदन करे।

पिष्टी या मारण—शतपत्री स्रुत जल (अर्क गुलाब) में घीसलें। साधारणतः पिष्टी उत्तम है। भस्मीकरणार्थ ३ लघुपुट दें।

गुण—रूक्ष शीतल हृदयरसायन तथा रक्तस्रावरोधक। हृदय-दुर्बलता रक्तपित्त स्मृतिभ्रंश रक्तप्रदर राजयक्ष्माकी कासमें उपयोगी है।

मात्रा—६ गुंजा से १.१/२ माषक पर्यन्त। अनुपान : मधु,

सूचना—अतिप्रयोग वृक्कोंके लिए हानिकर है।

———

परिभाषा विज्ञानीय :

१ अम्लवर्ग—जम्बीर दाडिम निम्बु इमली अम्लवेंत नारंगी वृक्षाम्ल बीजौरा चणकाम्ल करौंदा चूका।

२ अम्लपंचक—अम्लवेतस जम्बीर चकोतरा निम्बु नारङ्गी।

३ क्षार पंचक—मुष्कक जव सज्जी तिल पलाश क्षार।

४ क्षाराष्टक—थोहर पलाश अपामार्ग इमली आक तिलनाल सर्जिका जौखार।

५ पंचतिक्त—गिलोय नीमकी छाल वासा कटेरी कड़व

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

परवल ।

६ पंच मृत्तिका--ईंटका चूर्ण, बाम्बीकी मिट्टी, गैरिक, लवण भस्म ।

७ पंचामृत—गोदुग्ध दहि घी मधु शर्करा ।

८ पंचगव्य—गायका दूध दहि घी मूत्र तथा गोबर ।

९ क्षीरत्रय—मदार थोहर तथा बड़का दूध ।

१० तैलवर्ग—तिल सर्षप धत्तूर एरण्ड अतसी निम्बबीज ।

११ कज्जली—पारदको गन्धकादिके साथ मिलाकर चूर्ण करना और किसी द्रव द्रवको न डालना ।

१२ पिष्टी—पारद तथा गन्धकादिको मर्दन कर दूध आदि द्रव पदार्थोंके साथ पीसना पिष्टी कहाती है ।

१३ रसपंक—द्रव द्रव्य सहित गन्धकादिके साथ पारदको खरल करना रसपंक कहाता है ।

१४ द्रावक वर्ग—गुंजा मधु गुड़ घृत टंकण तथा गुग्गुलु ।

१५ मित्र पंचक—घी गुंजा टंकण मधु गुग्गुलु ।

१६ आवापः—वंगादि धातुओंको द्रवित कर उनमें अन्य पदार्थोंका मिलाना, यथा स्वर्णवंग निर्माणमें ।

१७ निर्वापः—धातुओंका अग्निमें तपाकर द्रव द्रव्योंमें बुझाना (निषेचन) ।

१८ शुद्धावर्त्त—जब अग्निकी ज्वाला श्वेत वर्णकी होती है तब उसे शुद्धावर्त्त कहा जाता है ।

१९ पर्पटी—अग्निकी सहायतासे कज्जलीको लोहपात्रमें द्रवित कर गोबरके स्थण्डिलपर कदली पत्रमें चिपिटाकार बनाना ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

२० वंकनाल—अग्निमें फूँक देनेकी नाली।

२१ स्वाङ्गशीत—चुल्हेपर स्थित पात्र जब स्वयमेव शीतल होजाए तव 'उसे स्वाङ्गशीत' कहते हैं।

२२ बहिः शीत—चुल्हेपरसे पात्रको उतारकर शीतल करना।

२३ भावना—किसी धातु या वनस्पतिके चूर्णको द्रव द्रव्यसे आर्द्र कर खरल करना।

२४ शोधन—विशिष्ट औषधियोंके साथ मलनाशके लिए धातु आदिका पेषण या स्वेदनादि।

२५ वारितरः—भस्मीभूत लोहादिको जलपर तैराना।

२६ मृतलौह—१ तर्जनी तथा अङ्गुलियोंकी मध्यस्थ रेखाओं में अन्तः प्रविष्ट होनेकी योग्यता। २ भस्मीभूत धातुको चाँदी तथा घीके साथ तपाये यदि चाँदीके साथ धातु रूपमें न लगे तो उसे भस्म कहते हैं।

२७ अपुनर्भव—भस्मीभूत लोहको मित्रपंचकके साथ तपाने से यदि पुनः धातु रूपको प्राप्त न होता हो तो उसे अपुनर्भव कहते हैं।

२८ निरुत्थ—अपुनर्भव द्वारा परीक्षित लोहको चांदीके साथ तपाएँ। यदि वह रजतके साथ न लगे तो निरुत्थ समझना चाहिए।

२९ अमृतीकरण—भस्मीभूत धातुओं (ताम्रादिके) दोष नाशन तथा गुणवृद्धिके लिए जो संस्कार किया जाता है उसे अमृतीकरण कहते हैं।

३० धन्वन्तरिभाग—औषधि निर्माणमें वैद्यका भाग।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

३१ रस–पारदका नाम है। रसनात् सर्वधातूनाम्। जरारुङ मृत्युनाशाय रस्यते वा रसो मतः।

३२ महारस---अभ्रक वैक्रान्त माक्षिक विमल शिलाजतु तुत्थ चपल खर्पर यह आठ महारस हैं।

३३ उपरस---गन्धक गेरु कासीस स्फुटिका ताल मनःशिला अंजन कंकुष्ठ, ये आठ उपरस कहाते हैं।

३४ साधारण रस—कम्पिल्लक सोमल नवसादर कपर्द अग्निजार गिरिसिन्दूर हिंगुल मुर्दासंग, ये आठ साधारण रस हैं।

३५ नवरत्न—माणिक्य मुक्ता प्रवाल (मूँगा) तार्क्ष्य पन्ना पुष्पराज हीरा नील गोमेद वैडूर्य।

३६ लोह या धातुएँ--१ शुद्ध लोह : सुवर्ण रजत ताम्र अयस्; २ पूति लोह : नाग वंग : इनमें एक प्रकारकी गन्ध होती है;

३ मिश्रित लोह—पित्तल, कांस्य, वर्त्त (भरत)

सूचना—यह रसादिका वर्गीकरण प्राचीन है। नवीन वर्गीकरण श्री आचार्य यादवजी त्रिकमजी मुम्बईने निम्न प्रकारसे किया है :—

१ रस—पारद

२ लोह—सुवर्ण, रजत, ताम्र, अयस्, नाग, वङ्ग, यशद

३ मिश्रलोह—पित्तल, कांस्य, वर्त्त

४ धातु—हिंगुल, गिरि-सिन्दूर वैक्रान्त, अभ्रक, माक्षिक, विमल, शिलाजतु, गैरिक अयस्कान्त

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(चुम्बक) कासीस मनःशिला, ताल, तुत्थ (सस्यक) चपल, अंजन पंचक, स्फटिका मृद्दार श्रृंग, रसक (खर्पर)

५ प्राणिज—शंख, प्रवाल, शुक्ति, अग्निजार

६ उद्भिज्ज—बोल, काम्पिल्लक

७ रत्न—उपर्युक्त नवरत्न

८ उपरत्न—सूर्यकान्त, चन्द्रकान्त, स्फटिक, तृणकान्त (कहरबा) अकीक, जहर मोहरा, फिरोजा, संगे यशब, वैक्रान्त, कांच, लाजवर्द ।

मूषा यन्त्रादि

मूषा लक्षण—मुष्णाति (नाशयति) यस्माद्दोषान् तस्मात् मूषा इति निगद्यते ।

विधान—ढक्कन

सन्धि लेप—मिट्टी किट्ट आदिके साथ मूषा या शराव (प्याले) घटादिकी सन्धिको बन्द करना सन्धि-लेप कहाता है ।

मूषाभेद तथा प्रयोजन

१ वज्रमूषा	सत्वपातनके लिए
२ योगमूषा	पारदभस्मादि बनानेकेलिए
३ वज्रद्रावणिका	वज्रके सत्व पातनार्थ
४ गारमूषा	ढालन कर्मकेलिए

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

५ गोस्तनी मूषा	शोधन तथा सत्व द्रावणार्थ
६ मल्लमूषा	प्याले पर्पटी आदि बनाने के लिए
७ महामूषा	लोह मात्तिकादिको पुट देने के लिए।
८ वृन्ताकमूषा	खर्परादिके सत्त्व पातनार्थ

सूचना—आजकल भी बाजारमें उपयोगी मूषाएँ मिलती हैं

मूषाप्यायन—मूषामें द्रव्य जब पिघलने लगे तो औषधि की रक्षाके लिए थोड़ी देर मूषाको अग्निसे बाहर निकालना मूषाप्यायन कहाता हैं।

अँगाराधानिका— हसन्ती-सिगड़ी-अँगीठी।

कोष्ठिका—भ्राष्टी भट्टी :

(अ) आंगार कोष्ठिका : यह चतुरस चौकोर होती है। पृथ्वीके ऊपर बनाई जाती है। चौड़ाई-लम्बाई: अर्धनृप हस्ते : २" ५" ऊँची : नृपहस्त प्रमाण; छिद्रा: चार अँगुल छिद्र में समकोण नलिका लगाएँ। प्रयोजन : सत्त्व-पातनके लिए उपयोगी है।

(आ) पाताल कोष्ठिका पृथ्वी में गढ़ा बनाकर यह बनाई जाती है। ऊँचाई लम्बाई तथा चौड़ाई एक वितस्ति (१२ अँगुल) मध्यमें गोल-छिद्र, भस्त्रा नाल तिर्यक लगाएं। मृदु द्रव्योंके निर्माणयर्थ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पुटें

पुट लक्षण—रस उपरस लोहादिकी भस्म करनेके लिए अग्निके प्रमाणका माप पुट कहाता है ।

पुट प्रयोजन—धातु आदिके दोष--हानि, गुणवर्धन, देहमें पाचन व आचूषण योग्य बनाना, निरुत्थत्व तथा वारितरत्व और दीपन गुण उत्पन्न करना ।

पुट भेद तथा प्रयोजन

सूर्यपुट—भावनायुक्त द्रव्योंको धूपमें सुखाना ।

महापुट—व्यामार्ध (४२ अंगुल ३' १") लम्बे चौड़े तथा गहरे चतुरस्र (चौकोर) गढ़ेमें अग्नि देना ।

गजपुट—नृपहस्त प्रमाण गहरे लम्बे तथा चौड़े गड्ढे में अग्नि देना ।

बाराहपुट—अरत्नि प्रमाण चतुरस्र कुण्डमें अग्नि देना ।

कुक्कुटपुट—वितस्तिद्वय (२४ अंगुल) प्रमित कुण्डमें अग्नि देना कुक्कुट पुट कहाता है ।

कपोतपुट—आठ वन्योपलोंसे अग्नि देना । यह रस साधनार्थ है ।

गोर्बर पुट—गोबर या तुषोंसे कुण्डमें या भूमिपर अग्नि देना ।

भाण्ड पुट—मूषामें औषधि रखकर उस मूषाको तुषपूर्ण भाण्डमें अग्नि देना ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वालुकापुट—औषध पूर्ण मूषा को उष्ण वालुका के मध्य में रखकर ताप देना।

भूधर पुट—भूमिगर्त्त में मूषा रखकर उसके ऊपर दो अंगुल वालुका भरकर अग्नि देना।

लावकपुट—औषध पूर्ण मूषाको पृथ्वी गर्तमें रखकर उसपर विस्तृति प्रमाण तुष या गोबर भरकर अग्नि देना। यह तालादि मृदु द्रव्योंके लिए है।

यन्त्रम्

निरुक्ति—रसोपरसादीनि मारणाय यन्त्र्यन्तेऽनेनेति यन्त्रम्। (रस धातु आदिको मारणादिके लिये जिसके द्वारा नियन्त्रणमें बाँधा जाता है उसे यन्त्र कहते हैं।)

भेद—नाम	प्रयोजन
१ दोलायन्त्र	शोधन तथा स्वेदनके लिए
२ विद्याधर या ऊर्ध्व-पातन यन्त्र	ऊर्ध्वपातनार्थ
३ अःधपातन यन्त्र	अधः पातनार्थ
४ तिर्यक्पातन	तिर्यक् पातनार्थ
५ कच्छप यन्त्र	गन्धक जारणार्थ

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

६	वालुका यन्त्र	कुप्पीपक्वरसायन निर्माणार्थ
७	लवण यन्त्र	” ”
८	वाष्पस्वेदन यन्त्र	वनौषधिसत्त्व निर्माणार्थ
९	डमरु यन्त्र	गन्धकादि शोधनार्थ
१०	नाड़िका यन्त्र	अर्क परिस्रुत जल बनानेके लिए
११	पातालयन्त्र	गन्धकादिका तैल निष्कासनार्थ

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

निघण्टु

—o—

मान परिभाषा

आयुर्वेदीय मान	प्रामाणिक भारतीय मान

८ रत्ती = १ सुवर्ण माष = १ माषा

३ सुवर्णमाष = १ शाण टंक = ३ माषा = १ चवन्नी

{ ६ रत्ती = १ सुवर्ण माष = ३/४ माषा
४ सुवर्णमाष = १ शाण = ३ माषा = १ चवन्नी } *

२ शाण = १ द्रंक्षण, कोल = ६ माषा = १ अठन्नी

२ द्रंक्षण = १ कर्ष = १ तोला = १ रजतमुद्रा

२ कर्ष = १ शुक्ति = २ तोला

२ शुक्ति = १ पल = ४ तोला

अतश्चोर्ध्वं चतुर्गुणमभिवर्धयन्तु कुडव प्रस्थाढकादि मान ज्ञातुम् ।

प्रा० भा० मानेन सह पलस्य, पलादूर्ध्वं च सामञ्जस्यं विधातुं "सपाद वृद्धि पले" कर्त्तव्या। एवं :—

१ पल = ४ तोला १ तोला वृद्धिः = ५ तोला = १ पल

* सुश्रुतानुसार

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

एवं वृद्धि करणेन--
४ पल = १ कुड़व = २० तोला ऽ।
२ कुड़व=१ शराव = ४० तोला)॥
२ शराव=१ प्रस्थ = ८० तोला (१ सेर बङ्गाली)

एवं सपादवृद्धया पले आ० मानेन सह प्रा० भा० मानस्य सर्वथैव सामंजस्यं जायते।

आ० मान		आङ्गलमान
१ धान्यमाष	=	१ ग्रेन
२ धान्यमाष	=	१ रत्ती = २ ग्रेन
१ शाण	=	३ माषा = १ ड्राम

(लगभग ६० ग्रेन=१ ड्राम)

१ शुक्तिः = २ तोला= १ औंस (लगभग ४३७५ ग्रेन = १ औंस) वस्तुतः औंसंस्तु २ तोला ३ माशा ३ रक्तिकायाः भवति।

मात्रा

द्रव्योंकी पृथक् मात्रा यहाँपर नहीं लिखी है। औषध कल्पनामें स्वरस क्वाथ चूर्णादिकी सामान्य मात्रा दी है। सामान्यतया यही मात्रा प्रौढ़ोंके लिये समझनां चाहिये। विष द्रव्योंकी मात्रा तथा शोधनका वर्णन परिशिष्टमें कर दिया गया है।

भैषज्य कल्पना

स्वरस----यन्त्र वा हस्त द्वारा निष्पीड़ित द्रव्यका रस

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

"स्वरस" कहाता है। स्वरसके अभावमें शुष्क चूर्णको रात्रि पर्यन्त जलमें भिगोकर प्रातःकाल मलकर छान लें। स्वरसकी मात्रा आधासे एक पल पर्यन्त है।

प्रक्षेप—घी, शर्करा, मधु, गुड़, १ कोल (स्वरसकी अपेक्षा आधा)

सूचना—पुटपाक विधिसे भी स्वरस निकाला जाता है।

कल्क—प्रस्तरपर पीसा हुआ शुष्क चूर्ण व सजल चूर्ण "कल्क" कहाता है। इसकी मात्रा १ कर्ष (तोला) है।

प्रक्षेप—घी, मधु, तैल द्विगुण, सिता शर्करा गुड़ समान द्रव चतुर्गुण।

चूर्ण—शुष्क द्रव्यको प्रस्तर वा लौह खरलादिमें पीसकर वस्त्र द्वारा छान लें। यही "चूर्ण" है। चूर्णकी मात्रा २ शाण (६ माशा) है।

प्रक्षेप—गुड़ समान शर्करा, घी, मधु द्विगुण द्रव ४ गुण।

क्वाथ (श्रृत)—क्वाथ्य द्रव्यमें जल मिलाकर अग्निपर पाक करना "क्वाथ" कहाता है

द्रव्य तथा जलका अनुपात—

वीर्यानुसार—	१ मृदुवीर्य	चतुर्गुण	चतुर्थांशावशिष्ट
	२ मध्यवीर्य	अष्टगुण	,,
	३ तीक्ष्णवीर्य	षोडशांश	अष्टमांश

द्रव्यप्रमाणानुसार—१. पल तक (५ तो) षोडशांश अष्टमांशावशिष्ट

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

२. कुडव तक (२०तो) अष्टगुण चतुर्थांश अवशिष्ट

३. कुडवसे ऊपर चतुर्गुण ,,

साधारणतया द्रव्य पञ्चांगमें अष्टगुण जल डालकर चतुर्थांश अवशिष्ट रक्खा जाता है। क्वाथ मात्रा १ पल (५ तोला) है।

प्रक्षेप—जीरक, गुग्गुल, क्षार लवण, शिलाजतु, हिङ्गु त्रिकुट चूर्ण २-२ माशा। कल्क, घी, तैल, गुड़ गोमूत्र १ कर्ष डालना चाहिये।

दोषानुसार—	वातिक रोग	पैत्तजरोग	कफजरोग
सिता (शर्करा)	चतुर्थांश	अष्टमांश	षोडषांश
मधु	षोडषांश	,,	चतुर्थांश

क्वाथ सदृश अन्य औषध कल्पनाएं

(अ) प्रमथ्या—दीपन पाचन योगका नाम 'प्रमथ्या' है।
विधि—द्रव्य १ पल. जल ८ पल. चतुर्थांशावशेष।

(आ) मांसरस—जितने जलमें मांस सम्यक्तया बन जाए उतना जल लेना चाहिये। अथवा निम्न-लिखित प्रमाण वर्त्तें :—

१ घन मांसरस निर्माण करना हो तो मांस ८ पल, जल १ प्रस्थ डालकर क्वाथ विधिसे बनावें।

२ मध्यम मांसरस निर्माण करना हो तो मांस ६ पल जल १ प्रस्थ डालकर क्वाथ विधिसे

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

बनावें ।

२ तनु मांसरस निर्माण करना हो तो मांस ४ पल जल १ प्रस्थ डालकर क्वाथ विधिसे बनावें ।

भेद—कृतमांसरस : लवण, घी, तथा पिप्पलादि युक्त; अकृत मांसरस : स्नेह तथा मसालोंके बिना ।

(इ) उष्णोदक—शुद्ध पात्रमें जलको इतना उबाले कि आधा, चतुर्थांश व अष्टमांश शेष रहे ।

(ई) सिद्धपानीय—द्रव्य १ कर्ष जल १ प्रस्थ शेष आधा ।

(उ) यवागू—स्वस्थावस्थामें जितना रोगी खाता है उसकी अपेक्षा चतुर्थांश अन्नसे बनाई जाती है ।

भेद—१ क्वाथ साध्य, २ कल्क साध्य । जलादि का प्रमाण निम्नलिखित हैं :

क्वाथ साध्य

भेद—	मन्ड:	पेया	विलेपी
लक्षण—	सिक्थकै: रहितो	सिक्थ समन्विता	विरलद्रवा
जलप्रमाण—	१४ गुणा	६ गुणा	४ गुणा

कल्क साध्य

द्रव्य प्रमाण	१ कर्ष तीक्ष्णवीर्य	२ कर्ष मध्यमवीर्य	१ पल मृदुवीर्य	जलप्रमाण पूर्ववत्

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(ऊ) लाक्षारस—लाक्षा १ भाग, जल ६ भाग शेष चतुर्थांश। दोलायन्त्रमें पाक कर २१ बार छान ले

(ए) यूषः—दालोंमें द्रव डालकर पाक करना "यूष" कहाता है। द्रव्य कल्क साध्य यवागूवत्। जल १ प्रस्थ, आधा वा चतुर्थांश अवशिष्ट रक्खे। कृत और अकृत यूष, मांसरसवत् दो भेद हैं।

(ऐ) वाट्य (यव) मण्ड— सुकण्डित या भ्रष्ट यवोंमें १४ गुणा जल डाल कर पकाना।

(ओ) लाजमन्ड—लाजाओंको १४ गुणा जलमें पाक करना।

शीतकषाय—शीत सलिलाप्लुतस्तु निशापर्युषितः शीतः लक्षण— १ द्रव्य १ भाग जल ६, भाग।

(अ) मन्थ—सत्तुओंको शीतल जल वा घीमें मसल मन्थन करनेका नाम 'मन्थ' है।

२ द्रव्य १ भाग (१पल) जल ४ भाग (४ पल)

विधि तथा मात्रा--मृत्पात्रे मन्थयेत्...द्विपलं पिवेत्।

(आ) तक्र—दही दो भाग जल १ भाग मन्थन कर पीना।

(इ) घोल—दधिको बिना जल मन्थन करना;

(ई) तन्डुलोदक—तन्डुल [शालि] १ भाग जल ८ भाग

विधि—३-६ घन्टे भिगोकर छान ले।

(उ) पानक—अम्ल वा अनम्ल फल [चिंचादि] १ भाग जल १६ भाग

विधि—तन्दुलोदकवत्।

[ऊ] शार्कर—फाण्ट, शीत, क्वाथ या अर्क १ भाग, शर्करा २ भाग।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विधि—क्वाथ विधिसे पाक कर मधुवत् गाढ़ा करें।

[ए] अर्क—अर्ध क्षुण्ण द्रव्य १ भाग जल १० भाग

विधि—नाड़िका यन्त्र द्वारा अर्क निकाले।

फाण्ट—क्षिप्त्वोष्णतोये मृदितम्। द्रव्य १ भाग जल ४ भाग।

विधि—उबलते हुए उष्ण जलमें द्रव्य डालकर १-२ घण्टे शीतल होने दें। मात्रा : एक पलसे दो पल तक।

प्रक्षेप—क्वाथवत्

रसक्रिया—क्वाथादीनां पुनः पाकाद्घनत्वं रसक्रिया।

मात्रा—१ कर्ष; सिद्ध परीक्षाः मुद्रा, अप्सु मज्जनं सरणं न च

स्नेहपाक—औषध एक भाग स्नेह ४ भाग जल १६ भाग।

सिद्ध परीक्षा—नाङ्गुलि ग्राहिता कल्के न स्नेहेऽग्नौ शब्दता

भेद —	१ मृदु	२ मध्य	३ खर
	नस्यार्थ	पानार्थ	अभ्यङ्ग
		नस्यार्थ	

क्षार—द्रव्य रक्षा १ भाग, जल ६ भाग

विधि—जल आलोडित कर एकान्तमें निथरने दे। ततः २१ बार छानें

मात्रा—४ रत्तीसे १॥ माशा तक

अनुक्त परिभाषा

अनुक्त वस्तु	ग्राह्य
काल	प्रभात

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अंग	जटा
अति स्थूल जटाकी	त्वचा
सूक्ष्ममूल	समग्र
न्यग्रोधादिकी	त्वचा
बीजक खदिरादिका	सार
तालीसादिके	पत्र
त्रिफलादिके	फल
धातक्यादिके	पुष्प
स्नुही अर्कादिका	क्षीर
गुडूची आदिकी	शाखा
हिंगु आदिका	निर्यास
प्रमाणानुक्ते	समान भाग
पात्र	मिट्टीका पात्र
द्रव (तरल) द्रव्य	जल
तैल विशिष्ट	तिल तैल
लवण विशिष्ट	सैन्धव
सर्षप विशिष्ट	श्वेत सर्षप
घी दूध दही मूत्रपुरीष	गायके
चूर्ण स्नेह आसवोंमें	श्वेत चन्दन
कषाय, लेपोंमें	रक्तचन्दन

जिस द्रव्य का जो भी अंग वीर्यवान् हो वही ग्रहण करना चाहिए।

———

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

लेशोक्त परिभाषा

महा स्नेह—घी, तैल, वसा मज्जा।

यमक—कोई दो स्नेह।

त्रिवृत्—कोई तीन स्नेह।

क्षीराष्टक—माहिषं, आजं, कारभं, स्त्रैणं, आविकं, ऐभं, ऐकशफम्।

मूत्राष्टक—मूत्रैर्गोजाविमहिषी गजाश्वोष्ट्रखरोद्भवैः।

पंचगव्य—दूध, दहि, घी, मूत्र तथा गोमय

अन्य—इसी प्रकार पंचमाहिषं, पंचाजं भी समझे।

मधुरत्रय—गुड़, शर्करा, मधु।

त्रिफला (फलत्रिक)—हरीतकी, आमलकी, विभीतक।

त्रिकटु (त्र्यूषण)—मारिच, पिप्पली, शुण्ठी।

चतुरुषण—त्रिकटुमें पिप्पली मूल मिलाना।

पंचकोल—पिप्पली पिप्पलीमूल चव्य चित्रक नागरैः।

षडूषणम्—पंचकोलमें मरिच मिलानेसे बनता है।

त्रिमद—विडङ्ग मुस्तक चित्रक।

चतुर्जातक—त्वग्, एला-पत्र-नागकेसर।

त्रिजातक (त्रिसुगंधि)—दालचीनी तमालपत्र इलायची।

चतुर्बीज—मेथी चन्द्रशूर कालाजाजी यवानिका

लघुपंचमूल—शालपर्णी पृश्निपर्णी गोक्षुरु कंटकारीद्वय

बृहत् पंचमूल—विल्व स्योनाक गम्भारी पाटला अग्निमन्थ।

दशमूल—दोनोंसे मिलकर बनता है।

वल्ली पंचमूल—विदारी सारिवा हरिद्रा गुडूची अजशृंगी।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कंटक पंचमूल—करमर्द गोक्षुरु सैरेयक शतावरी गृध्रनखी।
त्रिगंधक—गन्धक हरिताल मनःशिला।
क्षारत्रयम्—यवक्षार सर्जिकाक्षार टंकणक्षार
क्षारद्वयम्—यवक्षार सर्जिकाक्षार
पंच लवण—सैन्धव सामुद्र विड़ सौवर्चल सांभर लवण
पंचक्षीरी या वल्कल वृक्ष--वट उदुम्बर अश्वत्थ प्लक्ष पारीष
पंच पल्लव—आम्र जामुन कपित्थ बीजपूरक बिल्व
अष्टवर्ग—जीवक ऋषभक मेदा महामेदा ऋद्धि वृद्धि काकोली क्षीरकाकोली।
जीवनीयगण—अष्टवर्गमें मुद्गपर्णी माषपर्णी जीवन्ती और मधुयष्टि मिलानेसे बनता है।

भेषज ग्रहण-संरक्षण विधि

ग्रहण—स्निग्ध नर्म काली लाल या पीली मिट्टीवाली उत्तम भूमिमें उत्पन्न सम्पूर्ण रसवीर्ययुक्त तथा वर्षा वात अग्निताप और कीटाणु आदिसे न खाई हुई और जिनमें रस गन्ध वर्ण स्पर्श प्रभाव पूर्णतया आगए हों, ऐसी वनस्पतियाँ ग्रहण करनी चाहिए।

औषध द्रव्य ग्रहणकाल—

(१) चरकानुसार :	शाखा तथा पत्र	वर्षा और वसंतमें
	मूल	ग्रीष्म-शिशिरमें
	त्वचा कन्द दूध	शरद् ऋतुमें

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

	सार (काष्ठ)	हेमन्तमें
	पुष्प तथा फल	ऋतु अनुसार
(२) सुश्रुतानुसार :	सौम्यगुणयुक्त औषधियाँ	सौम्यऋतुओंमें
	आग्नेयगुणयुक्त औषधियाँ	आग्नेयतुओंमें

सौम्याग्नेयत्वाज्जगतः । उस उस ऋतुमें उस उस गुण की अधिकता होती है।

ग्रहणे विशेषता—घी मधु विडङ्ग पिप्पली गुड़ धान्य पुराण तथा अन्य सब नवीन (१ वर्षावधि नवीन संवत्सरातीतपुराण) लेने चाहिए।

त्याज्य द्रव्य—व्याधित कृमिभक्षित अकालज पाकातीत अदेशज कर्कश जीर्ण हीनवीर्य द्रव्य त्याज्य हैं

कालानुसार गुणहानि—संवत्सरातीत वानस्पति औषधि हीन गुण होती है, चूर्ण दो मासमें, घी तैल ४ मासमें गुटिका अवलेह एक वर्षोपरान्त हीनवीर्य हो जाते हैं; आसव रस तथा भस्में पुराण उत्तम होती हैं।

द्रव्यादिविज्ञानीय

द्रव्य

लक्षण—यत्राश्रिताः कर्मगुणाः कारणं समवायी यत्।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

जिसके आश्रयसे कर्म और गुण अपना कार्य करते हैं तथा जो कर्म गुण और द्रव्योंका समवायी (नित्य सम्बन्धी कारण) है वही द्रव्य है ।

भेद—१ उत्पत्ति अनुसार : पार्थिव, आप्य, तैजस, वायवीय तामस् ।

२ प्रभाव भेदसे : शमन कोपन स्वस्थहित ।

३ चिकित्सानुसार : संशोधन (वामक विरेचन) संशमन

४ घटना एवं स्वरूपभेदेन :

(क) चेतनं (सेन्द्रियं): जंगम (बहिश्चेतनम्) स्थावर (अन्तश्चेतनम्)

(ख) अचेतनम् (निरिन्द्रिय) पार्थिवम्

५ व्यवहार (प्रयोग) भेदेन—

(क) औषध द्रव्यम्: वीर्यप्रधानम्: मृदु मध्य तीक्ष्ण

(ख) आहार द्रव्यम्: रसप्रधानम्

रसभेदेन—षडधा षड्रसत्वात् ।

'कर्मभेदेन—बृहण विरेचकादिभेदेन बहुधा भिद्यते ।

गुण

समवायी तु निश्चेष्टः कारणं गुणः ।

द्रव्यमें नित्य सम्बन्धसे रहनेवाला, स्वयं निष्क्रिय किन्तु गुणोंकी उत्पत्ति तथा क्रियामें कारणभूत गुण कहाता है ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

भेद—बीस हैं।

गुरु मन्द हिम स्निग्ध श्लक्ष्ण सान्द्र मृदु स्थिराः।
गुणाः ससूक्ष्म विशदाः विंशति सविपर्ययाः।

गुरु	लघु	मृदु	कठिन
मन्द	तीक्ष्ण	स्थिर	चल
हिम	उष्ण	स्थूल	सूक्ष्म
स्निग्ध	रुक्ष	विशद	पिच्छिल
खर	श्लक्ष्ण	सान्द्र	द्रव

रस

परिभाषा—रसना ग्राह्य अर्थ रस है।

उत्पत्ति—१ सामान्यः द्रव्यमापः क्षितिस्तथा निवृत्तौ, विशेषे च प्रत्ययाः खादयस्त्रयः।

२ विशिष्ट : क्ष्माम्भो, ऽग्निक्ष्मा, म्बुतेज, खवायु, अग्न्यनिल, गोऽनिलैःक्रमात् मधुरादि रसोद्भवः।

रस संख्या--स्वाद्वम्ललवण तिक्तोषणकषायकाः।

मधुर अम्ल लवण तिक्त कटु कषाय
पृथिवी + जल; अग्नि + भू, जल + तेज, ख + वायु, तेज + वायु, वायु + भूः क्रमशः।

रस तथादोष—तत्राद्याः मारुतं घ्नन्ति त्रयस्तिक्तादयःकफम्।
कषाय तिक्त मधुराः पित्तमन्येतु कुर्वते।

दोष	शामक	प्रकोपक
वात	मधुरम्ल लवण,	कटु तिक्त कषाय
पित्त	मधुर तिक्त कषाय	कटुअम्ल लवण

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कफ कटु तिक्त कषाय मधुराम्ल लवण

रसभेद—१ गुणानुसारः-

(अ) सौम्य, मधुर तिक्त कषाय-शीतवीर्य।
आग्नेय, कटु अम्ल लवण उष्णवीर्य

(आ) मधुर अम्ल लवण स्निग्ध गुरु।
कटुतिक्त कषाय रुक्ष लघु।

कर्मानुसारः—

अग्नि वायु प्रधान ऊर्ध्वगामी (वामक) जल पृथिवी प्रधान अधोगामी (रेचक)

रस प्रभावकाल—रसो निपाते द्रव्याणाम्।

जिह्वा त्वचा श्लेष्मिक कला आदिके सम्पर्कमें आते ही रस अपना कार्य करने लगता है।

वीर्य—वीर्यं तु येन क्रियते क्रिया। कर्मलक्षणं वीर्यम् वैद्यके हि रसविपाकप्रभावव्यतिरिक्ते प्रभूतकार्यकारिणी गुणे 'वीर्यम्' इति संज्ञा। द्रव्यकी वह विशेष शक्ति, जो रस विपाक तथा प्रभावसे पृथक् रह कर द्रव्यका प्रभाव शरीरपर कराती है उसे 'वीर्य' कहा जाता है

वीर्यभेद—द्विविधाः—

(१) शीतवीर्य—ह्लादन जीवनं स्तम्भं प्रसादं रक्त पित्तयोः।

(२) उष्णवीर्य—भ्रम तृड् स्वेद दाहाशुपाकिता। शमंच वातकफयोः।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(उष्ण शीत गुणोत्कर्षात्)

अष्ट विध :—

(१) मृदु (२) गुरु (३) स्निग्ध (४) उष्ण
(५) तीक्ष्ण (६) लघु (७) रुक्ष (८) शीत

वीर्यकार्यकाल—वीर्यं यावदधिवासात् निपाताच्चोपलभ्यते ।

कर्मलक्षण वीर्य धातुओंके सम्पर्कमें आनेपर, और उनमें कुछ समय तक अधिवास करने पर क्रिया शील होता है

विपाक —जाठरेणाग्निनायोगाद् यदुदेतिरसान्तरम्

रसानां परिणामान्ते स 'विपाक' इति स्मृतः

आहारौषध द्रव्योंके पाचकाग्नि द्वारा पाकसे उत्पन्न रसका पुनःधात्वग्निसे (Chemical interaction of drugs and cells) परिपाक होना 'विपाक' कहाता है ।

भेदः—१ अवस्था पाक : औदर्याग्नि द्वारा

२ निष्ठापाक : धात्वग्नि द्वारा

द्रव्यगुण शास्त्रे तु निष्ठापाक एव प्रधान :---

निष्ठापाकके भेद—

१ सुश्रुतानुसार : द्विविध :---

१ मधुर विपाक (गुरु) पृथिवी जलाधिक्य

२ कटु विपाक (लघु) खवायुतेजाधिक्य

चरकानुसारः त्रिविध :—

१ मधुरः मधुरस का

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

२ अम्ल : अम्लका

३ कटु : कटुतिक्त कषाय का

विपाक कर्म—१ मधुर—वात पित्त नाशक कफवर्धक वात मूत्र मल निष्कासक ।

२ अम्ल—शुक्रनाशक पित्तल, सृष्टविरामूत्रः

३ कटु—कफघ्न, वातल मलमूत्र संग्राहक

कर्मकाल—विपाकः कर्म निष्ठया । परिणाम लक्षणोविपाकः द्रव्यों द्वारा शरीरमें होने वाला प्रभाव विपाक कहाता है । यथा दुग्ध मधुर विपाकी है; क्योंकि यह पोषक है । पोषकत्व गुणके कारण दूधको मधुर विपाकी कहा जाता है।

प्रभाव—रसवीर्य विपाकानां सामान्यं यत्र लक्ष्यते ।
विशेषः कर्मणांचैव प्रभावस्तस्य स स्मृतः ।

एतत्तु—प्रकृति समसमवायत्वात् (समान प्रत्ययारब्ध) विकृति विषम समवायत्वात् (विचित्र प्रत्ययारब्ध) द्रव्यासम्

अगुरु AQUILARIA AGALOCHA

नाम---- अगुरु, लोह राजार्ह

व्य०अंग----काष्ठ । प्रभा० अव० मस्तिष्क, तापकेन्द्र

रसादि---कटुतिक्त उष्णवीर्य कटुविपाकी वातकफशामक

गुण—तीक्ष्ण, सुगन्धि लघु पित्तल ।

रोग—वात कफज श्वास, कास, सन्निपात, शीतवात ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अग्निमन्थ

नाम—अग्निमन्थ, गणिकारिका, श्रीपर्णी, तर्क्वारी।
व्य० अंग--काष्ठ-मूल पंचांग। प्रभा० अव० त्वचा, सर्वदेह
रसादि—मधुर कटुतिक्तरस उष्णवीर्य मधुरविपाकी,
वातकफनाशक।
गुण—दीपन पाचन स्वेदल, रसायन, सर
रोग—शोथ-पाण्डु ज्वर, अग्निमान्द्य और विबन्धनाशक।
योग—दशमूलक्वाथ; मात्रा २ से ४ तोला।

अतिविषा ACONITUM

नाम—अतिविषा, घुणवल्लभा भंगुरा
व्य०अंग–कन्द; प्र० अव०–पाचक संस्थान
रसादि—तिक्त कटुरस उष्णवीर्य कटुविपाकी
दोष—कफ पित्त शामक
गुण—दीपन पाचन तापहर ग्राही
रोग—ज्वर, वमन अतिसार कासनाशक
योग—बालचातुर्भद्रावलेह; मात्रा ४ रत्ती

अपामार्ग ACHYRANTHES ASPERA

नाम—अपामार्ग, किणही-खरमंजरी- प्रत्यक्पुष्पी
व्य० अङ्ग---पंचांग; प्रभा० अव० श्वास तथा मूत्रसंस्थान
रसादि—कटुतिक्तरस उष्णवीर्य कटुविपाकी
दोष—कफ वात शामक पित्तवर्धक
गुण—शिरोविरेचक कफनिष्कासक, मूत्रल, वामक, सर

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रक्तसंग्राहक तीक्ष्ण ।
रोग—रक्तातीसार अर्श शिरोरुजा कास जलोदर
वृक्कशोथ तथा कफके रोगोंमें ।
योग—अपामार्गक्षार; मात्रा : ४ रत्ती

अर्क CALATROPA PROCERA

नाम—अर्कः सूर्याह्व अलर्कः मन्दारः विकीर्णकः
व्य०अङ्ग—पत्र पुष्प क्षीरमूल; प्रभा० अव०--आन्त्र-प्लीहा
रसादि—तिक्त कटुरस उष्णवीर्य कटुविपाकी
दोष—वात कफनाशक
गुण—तीक्ष्ण सर कृमिहर। मूलत्वचा : स्वेदल वामक
श्वास शामक। रक्तार्कपुष्प : कफनाशक कासहर
श्वेतार्कपुष्प : दीपन पाचन श्वासकास शामक।
क्षीर : रेचक सर गर्भपातक कृमिहर।
रोग—गुल्म जलोदर प्लीहावृद्धि कास न्यूमोनिया विबन्ध
नाशक।
योग—अर्क लवण। मात्रा ४ रत्तीसे १ माषा।
वि. व. अर्क (रक्तपुष्प) अलर्क (श्वेतपुष्प) दो भेद हैं।

अर्जुन TERMINALIA ARJUNA

नाम—अर्जुनः पार्थः ककुभः।
व्य० अङ्ग०--त्वक्; प्रभा० अव० हृदय श्लेष्मिक कला
रसादि—कषायरस शीतवीर्य कटुविपाकी
दोष—पित्तकफशामक वातकोपक

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गुण—हृदय रसायन ग्राही रक्तस्तम्भक शीतल
रोग—हृदयनिर्बलता रक्तातीसार रक्तप्रदर मूत्रकृच्छ्र, भग्न प्रमेह नाशक
योग—अर्जुनारिष्ट; मात्रा १ से २ तोला भोजनोत्तर

असन TERMINALIA TOMENTOSA

नाम—असन बीजक बन्धूक पुष्प
व्य० अङ्ग—सार (निर्यास); प्रभा० अव०—आन्त्र रक्तधातु (बीजकका रक्तवर्ण निर्यास कमरकस (Kino) कहाता है।)
रसादि—कटुकषाय उष्णवीर्य कटुविपाकी
दोष—कफपित्त नाशक वातल
गुण—रक्तस्तम्भक संग्राही सूदक त्वच्य
रोग—रक्तातिसार रक्तपित्त वीसर्प। पुष्पः तिक्त पाचक मधुर विपाकी तथा वातल होते हैं। गलदोष तथा रक्त मण्डल नाशक।
मात्रा (निर्यास)—४ से १ माशा तक

अश्वगन्धा WITHANIA SOMNIFERA

नाम—अश्वगन्धा हयगन्धा वरदा
व्य० अङ्ग—मूल; प्रभा० अव०----वीर्योत्पादक अंग तथा सर्व शरीर
रसादि-तिक्त कषाय मधुररस उष्ण वीर्य मधुर विपाकी
दोष-त्रिदोष शामक [विशेषतः वात कफ]
गुण—रसायन बल्य पौष्टिक स्तन्यवर्धक वाजीकरण

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रोग—क्षत क्षय वीर्यक्षीणता दुर्बलता बालशोष मानसिक रोग निद्रानाश तथा वात व्याधि शामक

योग—अश्वगन्धारिष्ट, अ. घृत, अ-चूर्ण

अशोक SARACA INDICA

नाम—अशोक ताम्रपल्लव शोणपुष्पः वञ्जुलः

व्य० अंग—त्वक्; प्रभा० अव०—गर्भाशय आन्त्र

रसादि—कषाय तिक्त शीतवीर्य कटुविपाकी

दोष—पित्त कफ शामक

गुण—वर्ण्य ग्राही रक्तशोधक गर्भाशय रसायन

रोग—रक्तातीसार रक्तप्रदर नाशक भग्नसन्धानकारक अपची दाह शोथ शामक गर्भस्राव नाशक

योग—अशोकारिष्ट अशोकघृत

अहिफेन PIPER SOMNIFERUM

नाम—अहिफेनम् आफूकम् खसफलम्

व्य० अंग—निर्यास, फलत्वक्, बीज; प्रभा० अव०—वात संस्थान आन्त्र

रसादि—तिक्त कषाय रस, उष्णवीर्य कटु विपाकी

दोष—कफनाशक, वातपित्त वर्धक

गुण—रस शोषक, संग्राही, वेदना शामक, निद्राजनक स्तम्भक, मादक

रोग—अतिसार, विसूचिका, वमन, सन्निपात प्रलाप, आन्तरिक रक्तस्राव, संग्रहणी, सर्ववेदनाएं,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गर्भस्राव रात्रीस्वेद नाशक

योग — १ अहिफेनासव; मात्रा ५ से १५ बिन्दु
२ कर्पूररस; मात्रा १ रत्ती से २ रत्ती तक
३ निद्रोदयरस; मात्रा १ रत्तीसे २ रत्ती तक
अन्य अनेक योग हैं।

आमलकी PHYLLANTHUS EMBELLICA

नाम—आमलकी, धात्रीफल वयस्था
व्य० अंग—फल; प्रभा० अव०—सर्व शरीर
रसादि—कषाय, मधुर अम्लरस, शीतवीर्य मधुर विपाकी
त्रिदोष नाशक
गुण—वृष्य, रसायन, चक्षुष्य, लघु, रुक्ष, केश्य
व्याधि—पित्तरोग, रक्तपित्त, वीर्य क्षीणता, पलित वमन
विबन्ध क्षीणता भ्रमनाशक
योग—१ च्वयनप्राश, मात्रा १ तोला
२ त्रिफला: हरीतकी विभीतक आमलकी समान
भाग
गुण–प्रमेह, कफ-पित्त विषमज्वर विबन्ध नाशक
चक्षुष्य और रसायन

आरग्वध CASSIA FISTULA

नाम—आरग्वध, कृतमाल, शम्पाक, स्वर्णांग
व्य० अङ्ग—फल मज्जा, पुष्प; प्रभा० अव०—आन्त्र।
रसादि—तिक्त मधुर, शीतवीर्य कटु विपाकी

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

दोष—त्रिदोषहर विशेषतः पित्त कफ नाशक

गुण—भेदन, गुरु, मार्दवकर, कोष्ठ शुद्धिकरं परम् ।

मज्जा—मधुर विपाकी स्निग्ध, दीपन, रेचक, वातपित्त शामक

पुष्प—कषाय, तिक्त मधुर शीतल ग्राही वातल ।

रोग—विबन्ध, विष्टम्भ, उदरशूल ज्वर उदावर्त्त गुल्म, उदररोग नाशक, उत्तम मृदुरेचक हैं ।

मात्रा—मज्जा : १ से २ माशा

ऐन्द्री CITRULLUS COLLOCYNTHIS

नाम—ऐन्द्रवारुणी, गवाक्षी, मृगादनी

व्य० अङ्ग०—मूल फल; प्रभा० अव०—आन्त्र

रसादि—कटु तिक्त रस उष्णवीर्य कटु विपाकी

दोष—वात कफ नाशक

गुण—रेचन (जल बहुल रेचक)

रोग—कामला, प्लीहोदर, गुल्म, जलोदर कफ पित्तहर

मात्रा—मूल चूर्ण : ४ रत्ती; मज्जा : १ रत्ती से २ रत्ती तक

इरिमेद ACACIA MODESTA

नाम—इरिमेद अरिमेद विट्खदिर

व्य० अङ्ग—त्वक्; प्रभा० अव०—मुख श्लेष्मकला

रसादि—कषाय कटु उष्णवीर्य कटुविपाकी

दोष—श्लेष्म शामक

गुण—दन्त्य तीक्ष्ण रुक्ष, ग्राही, कफहर

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रोग—मुख शोथ, दन्तरोग, दन्तवेष्टरक्तस्राव, रक्तातिसार उदर कृमि त्वचारोग नाशक

कुटज इन्द्रयव

HOLARRHENA ANTIDYSENTRICA

नाम—कुटज, वत्सक, कलिङ्ग, गिरिमल्लिका

व्य० अङ्ग—त्वक् फल;प्रभा० अव०—आन्त्र

रसादि—कटु कषाय; फल : तिक्त शीतवीर्य कटु विपाकी

दोष—पित्त कफहर

गुण—पाचन दीपन, रुक्ष, ग्राही

फलोंका नाम—इन्द्रयव, कालिंग तथा भद्रयव है। यह दो प्रकारके होते हैं: मधुर तथा तिक्त। औषधि में तिक्त प्रयुक्त होते हैं।

गुण—तिक्तरस, समशीतोष्ण, कटु विपाकी, त्रिदोषहर, दीपन-पाचन

रोग—अतीसार, प्रवाहिका, अर्श, आमज्वर कफ पित्त रक्त शामक

योग—कुटजारिष्ट, कुटजावलेह : अतीसार, प्रवाहिका में।

उदुम्बर FICUS GLOMERATA

नाम—उदुम्बर यज्ञाङ्ग जन्तुफल

व्य०अङ्ग—त्वक् फल; प्रभा० अव० श्लेष्मिककला (स्राव) वृक्क

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रसादि---मधुर कषाय (पक्व फल मधुर) शीतवीर्य मधुरवीर्य
दोष—पित्त कफ नाशक
गुण—त्वक् : ग्राही, संकोचक, कृमिहर व्रणशोधक रोपक
रक्त स्राव रोधक
फल : मधुर, शीतल गुरु श्लेष्मल,पित्त रक्त शामक
बहुमूत्र रोधक
रोग--योनि रोग, प्रदरादि, वमन, तृष्णा, व्रण रोपक प्रमेह
रक्तपित्त, बहुमूत्र नाशक
योग—उदुम्बरसार : व्रण शोधन रोपणार्थ
वि० व०—पञ्चक्षीरी वृक्षोंके प्रायः यही गुण होते हैं।

उशीर ANDROPOGUN MURICANTUS

नाम—उशीर, वीरणम् जलदम्
व्य० अंग०—मूल, कन्द; प्रभा अव० त्वक् वृक्क
रसादि----तिक्त मधुररस, शीतवीर्य कटु विपाकी
दोष----वात पित्त कफ नाशक
गुण----पाचन, शीतल, स्वेदल, मूत्रल लघु स्तम्भन
रोग---ज्वर आमातिसार, वमन, तृष्णा, वीसर्प मूत्रकृच्छ्र,
रक्तपित्त, दाह तथा श्रमहर
वक्तव्य--- लामज्जक इसीका भेद है; वीरणमूल को उशीर
कहते हैं।

एरण्ड RICINUS COMMUNIS

नाम एरण्ड, पञ्चाङ्गुलम्, गन्धर्वहस्तक [श्वेत] रुबूक,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

उरबूक, वातारि

व्य०अङ्ग—पत्र, त्वक्मूल, तैल; प्रभा० अव० आन्त्र वात संस्थान

रसादि—मधुर तिक्तरस उष्णवीर्य मधुर विपाकी; बीज-तैल: कषाय मधुर मधुरविपाकी

दोष—वातकफ नाशक

गुण—मूल : वृष्य, उष्ण, गुरु कृमिघ्न
तैल : रेचक उष्ण आमवात नाशक

रोग—वातव्याधियाँ, आमवात शोथ, वस्तिशूल गुल्म उदावर्त्त, प्लीह यकृत वृद्धि विबन्ध नाशक

योग—१ एरण्डपाक : वीर्यक्षीणता, वातरोगोंमें;
२ एरण्ड तैल : रेचनार्थ : २ से ४ तोला तक ।

एला ELETTARIA CARDAMOMUM

नाम—त्रुटि बहुला सूक्ष्मतैला, द्राविड़ी, स्थूला, बहुला त्रिपुटा ।

व्य० अंग—बीज; प्रभा० अव० फुफ्फुस वृक्क

रसादि—त्रुटि कटुतिक्तरस शीतवीर्य कटुविपाकी स्थूला उष्णवीर्य

दोष—वातकफ शामक पित्तवर्धक

गुण—दीपन, पाचन, मूत्र कृमि नाशक, मूत्रल, रुचिकर कफ निष्कासक अनुलोमक

रोग—वमन, कास, श्वास मूत्रकृच्छ्र वस्ति तथा मुखरोग आध्मान हर

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कटफल Myristica malauarica

नाम—कटफल महावल्कल सोमवल्क
व्य० अङ्ग—त्वक्; प्रभा० अव० मुख श्लेष्मकला
रसादि—तिक्त कटु कषाय उष्णवीर्य कटुविपाकी
दोष—वात कफ नाशक
गुण—ग्राही उष्ण छिक्काजनक
रोग—प्रतिश्याय शिरोविरेचक शिरोगुरुता मुखकण्ठ शोथ व्रण अतीसार रक्तार्श कास शामक

कटुकी Picrorhiza Karood

नाम—कटुकी कट्वी चक्राङ्गी, रोहिणी
व्य० अंग—मूल, प्रभा० अव० यकृत् आन्त्र
रसादि—तिक्त कटुरस शीतवीर्य कटु विपाकी
दोष—कफ पित्त नाशक
गुण—यकृत् उत्तेजक, भेदन रुक्ष, शीतल पित्त रेचक
रोग—ज्वर, रक्तपित्त, दाह पाण्डु कामला नाशक
योग—बालचातुर्भद्र चूर्णः ज्वरातिसार वमन कासशामक

कटुतुम्बी Loganaria Vulgaris

नाम—कटुतुम्बी, तिक्तालाबू
व्य० अंग—फल० प्रभा० अव० आन्त्र आमाशय
रसादि—तिक्त शीतवीर्य कटुविपाकी वात पित्त शामक
गुण—वामक, रेचक; पत्र : मधुर पित्तहर मूत्र शोधक

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रोग—विबन्ध, ज्वर, विष श्वास कास मूत्रकृच्छ्रहर

कतृण ANDROPOGAN SEHOENANTHES

नाम—कत्तृण, रोहिषम्, भूतीकं, सौगन्धिकम्
व्य॰ अंग—पंचांग प्रभा॰ अव॰ वात संस्थान
रसादि—कटुतिक्त कषायरस उष्णवीर्य कटुविपाकी।
दोष—पित्त कफहर
गुण—स्वेदल, उष्ण, पाचक आमवातघ्न।
रोग—वात कफ ज्वर, कास प्रतिश्याय अरुचि नाशक
वक्तव्य—भूस्तृण (गुह्यबीज) भी इसी प्रकारका तृण विशेष है। यह उष्ण, विदाही, मुखशोधक बहुमल प्रवर्तक और पित्त तथा रक्त दूषक है।

कंकुष्ट GARCINIA HANBURU

नाम—कंकुष्ठः उशारे रेवन्द
व्य॰ अङ्ग—सार (निर्यास) प्रभा॰ अव॰ आन्त्र
रसादि—तिक्त कटुरस उष्णावीर्य कटुविपाकी
गुण—विरेचक, वर्ण्य,
रोग—उदरकृमि कुष्ठ, गुल्म, उदावर्त्त, आध्मानादिहर
मात्रा—१/२ से २ रत्ती

कंकोल PIPER CUBEBA

नाम—कंकोल, कोल, कटुकफलम्।
व्य॰ अंग—फल, तैल; प्रभा॰ अव॰ वृक्क

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रसादि---कटुतिक्तरस उष्णवीर्य, कटुविपाकी
गुण---उष्ण, तीक्ष्ण मूत्रकृमिहर, दीपन, लघु
रोग---पूयमेह, मूत्रकृच्छ्र मुखरोग कफवात तथा आम रोग नाशक

कंटकारी SOLANUM INDICUM

नाम---कण्टकारी बृहती सिंही क्षुद्रभण्टाकी
व्य० अंग—पंचांग; प्रभा० अव० त्वचा फुफ्फुस
रसादि---तिक्त कटुरस उष्णवीर्य कटुविपाकी
दोष---वातकफहर पित्तवर्धक
गुण---उष्ण स्वेदल कफहर ग्राहि
रोग---श्वास कास, ज्वर, वातरोग अग्निमान्द्य, ज्वर मुख वैरस्य नाशक।

कंटकारी S. XANTHOCARPUM

नाम---क्षुद्रा, व्याघ्री, निदिग्धिका
व्य० अंग ० प्रभा० अव० रसादि बृहतीवत्
गुण---सर, कफ निष्कासक वात कफहर
रोग---श्वास कास प्रतिश्याय वात कफ ज्वर, पार्श्व पीड़ा पीनसनाशक
योग—कंटकार्यावलेह : श्वास कासमें; दशमूल क्वाथ

कपिकच्छु MUCINA PRURIENS

नाम---कपिकच्छु आत्मगुप्ता, मर्कटी, शूकशिम्बी

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

व्य० अंग—बीज; प्रभा० अव० प्रजनन अवयव
रसादि--मधुरतिक्तरस शीतवीर्य, मधुर विपाकी
दोष---वातपित्त शामक, कफ कोपक
गुण---बृंहण, वृष्य, गुरु स्तन्य वर्धक
रोग---वीर्यक्षीणता, श्लेष्मक्षीणता वातरक्त रक्तपित्तहर
योग---वानरी गुटिका : १ माशा मात्रा : वाजीकरणार्थ

कमलम् NELUMBIUM SPECIOSUM

नामकमल : अनेक भेद हैं; मुख्य तीन : श्वेत रक्त नील
व्य० अंग---पचांग, विशेषतया पुष्प फल। प्रभा० अव० तापकेन्द्र
रसादि----मधुर तिक्तरस शीतवीर्य मधुर विपाकी
दोष—कफपित्तहर वातवर्धक
गुण---शीतल; बीज : पौष्टिक गर्भस्थापक
रोग---ज्वर दाह तृष्णा, रक्तपित्त, मूत्रकृच्छ्र वमन वीसर्प नाशक; पित्त व्याधियों में उत्तम।

करंज PONGAMIA GLABRA

नाम--करंज नक्तमाल चिरबिल्व वृक्ष करंज
व्य० अंग--तैल, त्वक्; प्रभा० अव० त्वचा
रसादि--तिक्त कषाय रस, उष्णवीर्य, कटुविपाकी
दोष---पित्त कफ नाशक
गुण—तीक्ष्ण, कृमिघ्न त्वक् दोषहर
रोग---त्वचारोग दद्रु आदि, अर्श, व्रण कफपित्तरोगहर

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तैल त्वचा रोगोंमें अति श्रेष्ठ है ।

करंग CAESALPINIA BONDUCELLA

नाम---कण्टकी करंज, लता करंज, तीरण

व्य० अंग---बीजमज्जा; प्रभा० अव० त्वचा, तापकेन्द्र

रसादि----तिक्त कषायरस, उष्णवीर्य, कटु विपाकी ।

गुण---कृमिघ्न रसायन पित्तकफ शामक

रोग---विषम ज्वर उदरकृमि अर्श वमन नाशक

योग----करंजादि वटी : मात्रा ४ रत्ती: विषम ज्वरहर

कर्पूर CINNAMOMUM CAMPHORA

नाम—कर्पूर घनसार हिमाह्व चन्द्राह्व

व्य० अंग—सार; प्रभा० अव० प्रवात संस्थान

रस----मधुरतिक्त रस शीतवीर्य कटुविपाकी

दोष----कफ पित्तहर वात उत्तेजक

गुण---सुगन्धित, शुक्रस्तम्भक स्वेदल उत्तेजक वेदना तथा स्थानीय संज्ञाहर कृमिघ्न

रोग---विसूचिका अजीर्ण-जन्य उदरशूल मुख-दुर्गन्धि आध्मान दाह नाशक चक्षुष्य तथा लेखन । हृदय निर्बलता तथा शीताङ्गावस्थामें उत्तम ।

योग---कर्पूरासव,मात्रा १० से २० बिन्दु तक

कस्तूरी MOSCHUS MOSCHIFERUS

नाम---कस्तूरी मृगनाभि मृगमद

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्रभाव्य अव०—वात संस्थान, शुक्रांग
रसादि---कटुतिक्त रस उष्णवीर्य मधुर विपाकी
दोष---वातकफ नाशक
गुण—उष्ण, उत्तेजक, शुक्र, हृदय रसायन गुरु
रोग—हृदय निर्बलता, वातक्षीणता, शीताङ्गता, वातकफ ज्वर और वीर्य निर्बलता नाशक है।
योग—कस्तूरीभैरवरस, मात्रा १ रत्ती; कस्तूरीवारुणी सार : मात्रा ५ से १५ विन्दु ।

काकमाची SOLANUM NIGRUM

नाम—काकमाची, वायसी, नदीकान्ता, गुड़फला
व्य०अं०—पंचाङ्ग; प्रभा० अव०—त्वचा आन्त्र
रसादि—तिक्त कटुरस समशीतोष्ण कटुविपाकी त्रिदोषघ्न
गुण—स्वेदल भेदन मूत्रल, शोथ और वेदना शामक लघु स्वर्य
रोग—शोथ, ज्वर, अर्श, त्वचारोग, वृक्क शोथ जलोदर हृदय रोग नाशक ।

कांचनार BAUHAMIA PURPUREA

नाम—काञ्चानार, गण्डारिः शोणपुष्पक
व्य०अंग—त्वचा, पुष्प; प्रभा० अव० या धातु : रक्त
रसादि—कषाय मधुर रस शीतवीर्य मधुर विपाकी
दोष—कफपित्तजित्
गुण—ग्राही, रक्तशोधक, रुक्ष

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रोग—गण्डमाला, रक्तपित्त, रक्तप्रदर, गुदभ्रंश नाशक
योग—काञ्चनार गुग्गुलु; मात्रा ४ रत्तीसे १ माशा।

काम्पिल्लक MALLOTUS PHILIPPINEUSIS

नाम—काम्पिल्लक, रक्ताङ्ग, रेचन
व्य० अंग—फलपराग; प्रभा० अव० आन्त्र
रसादि—कटु रस उष्णवीर्य कटु विपाकी
दोष—पित्तकफ नाशक
गुण—कृमिघ्न रेचक व्रणशोधक रोपक
रोग—उदरकृमि, गुल्म, विबन्ध, कफोदर नाशक एवं व्रण शोधक रोपक है।

कुपीलु STRYCHNOS-NUX-VOMICA

नाम—कुपीलुः, कारस्करः, विषमुष्टिः, विषतिन्दुकम्
व्य०अंग—फल; प्रभा० अव० वात संस्थान
रसादि—तिक्त रस शीतवीर्य कटु विपाकी
दोष—कफपित्त शामक, वातलम्
गुण—वात उत्तेजक, अग्निवर्धक, वाजिकरण, ग्राही, लघु
रोग—अग्निमान्द्य हृदयनिर्बलता वातव्याधियाँ जीर्णशिरः शूल, आमवात तथा नपुन्सकता नाशक है।
योग—विषमुष्टि वटी: मात्रा २ से ४ रत्ती; अग्नि तुण्डी वटी

कालमेघ ANDROPOGAN PANICULATA

नाम—कालमेघ, शंखिनी, यवतिक्ता चोरपुष्पा

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

व्य० अंग—पंचांग; प्रभा० अव० यकृत् सर्व देह
रसादि—तिक्त कटुरस उष्णवीर्य कटु विपाकी त्रिदोषहर
गुण—मृदुरेचक रक्तशोधक पाचक स्निग्ध गुरु
रोग—जीर्णज्वर-विषमज्वर, जलोदर, प्लीहायकृत्वृद्धिहर

किरात SWERTIA CHIRATA

नाम—किराततिक्तः भूनिम्बः ज्वरान्तकः
व्य० अंग—पंचाङ्ग; प्रभा० अव० सर्वदेह, आन्त्र
रसादि—तिक्तरस शीतवीर्य कटु विपाकी त्रिदोषहर
गुण—रुक्ष सर कृमिघ्न पित्तसारक कफपित्त शामक
रोग—ज्वर, कामला, पाण्डु, कुष्ठ, रक्तदुष्टि, तृष्णा दाह अग्निमान्द्य नाशक।
योग—सुदर्शनचूर्ण : मात्रा ४ माषा से १ तोला तक।

कुंकुम CROCUS SATIVUS

नाम—कुंकुम काश्मीरं घुसृणं वाल्हीकम्
व्य० अंग—पुष्पगर्भसूत्र; प्रभा० अव० वातसंस्थान
रसादि—तिक्त रस उष्णवीर्य कटुविपाकी
दोष—त्रिदोषहर विशेषकर वातकफहर
गुण—उष्ण, उत्तेजक, दीपन, स्निग्ध वर्ण्य
रोग—शिरोरोग हिक्का व्यङ्ग विषघ्न, वातकफकास, कृमिहर

कुमारी ALOE INDICA

नाम—कुमारी गृहकन्या घृतकुमारिका

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

व्य० अंग—मज्जा; प्रभा० अव०—प्लीहायकृत्, आन्त्र
रसादि—तिक्त मधुर शीतवीर्य मधुर विपाकी त्रिदोषहर
गुण—भेदन, रसायन बृंहण, स्वल्प मात्रामें दीपन
रोग—कामला, पाण्डु जीर्णज्वर ग्रन्थि यकृत्प्लीह वृद्धि विबन्ध रक्तपित्त कफज्वर नाशक है
योग—कुमार्यासव
वक्तव्य—कुमारीघनसत्व या रसक्रिया द्वारा एक काला पदार्थ प्राप्त किया जाता है। इसे 'एलायक, कृष्णबोल, एलुआ' कहते हैं। यह तिक्त कटुरस समशीतोष्ण भेदक रजः कृच्छ्रता, गुल्म, आध्मान वातकफ यकृत्प्लीह वृद्धिहर है।

कुष्ठ SAUSURIA LAPA

नाम—कुष्ठ, रोगाह्वयं, उत्पलम्, परिभाव्यम्
व्य० अंग—मूल; प्रभा० अव०—फुफ्फुस, वातसंस्थान
रसादि—तिक्तकटु मधुररस उष्णवीर्य कटुविपाकी
दोष—वातकफ नाशक
गुण—रक्तदोषहर, उष्ण, पाचक, कफच्छेदक, शोथशामक लघु
रोग—फुफ्फुसीय वातकफ के रोग श्वास, कास, वातकफ ज्वर, आमवात, फु० शोथ, त्वचारोग वीसर्प नाशक है।

कूष्माण्ड BENICASA CERIFERA

नाम—कूष्माण्ड, पीतपुष्पं, बृहत्फलम्

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

व्य० अंग--फलमज्जा; प्रभा० अव०—मस्तिष्क
रसादि—मधुररस शीतवीर्य मधुरविपाकी
दोष—वातपित्त हर, कफ वर्धक
गुण—बृंहण, वृष्य, मेध्य गुरु मूत्रल
रोग—मूत्रकृच्छ्र, रक्तपित्त, क्षतक्षीणता, मानसिक रोग अपस्मार आदि।

पुराण कूष्माण्ड मधुराम्ल तथा सक्षार होता है और सर्वदोष हर तथा वस्तिशोधक है

योग—कूष्माण्ड खण्ड, रक्तपित्ते।

कोकिलाक्ष HYDROPHILA SPINOSA

नाम—कोकिलाक्षः इक्षुरकः काण्डेक्षु :
व्य० अंग—बीज, पत्र; प्रभा० अव० वृक्क, प्रजननांग
रसादि---मधुराम्लरस, शीतवीर्य, मधुरविपाकी; पत्र : तिक्त
दोष—वातपित्तहर
गुण—बीजः वृष्य, ग्राही, पिच्छिल गुरु शीतल; पत्रः मूत्रल शोथहर
रोग—वातशोथ, आमवात पित्तातिसार मूत्रकृच्छ्र वीर्यक्षीणताहर।

कोलबदरम् ZIZYPHUS SATIVA

नाम---कोलबदरम् कर्कन्धु उन्नाव इति लोके।
व्य० अंग—फल; प्रभा० अव० फुफ्फुस।
रसादि—मधुराम्लरस शीतवीर्य मधुरविपाकी।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

दोष—आमफल : पित्तकफहर; पक्व : पित्त वातहर
गुण—स्निग्ध कफस्रावक शीतल दीपन लघु सर
रोग—कास श्वास तृष्णा गलशोषहर

खदिर ACACIA CATECHU

नाम—खदिर गायत्री रक्तसार कंटकी बालपत्रः।
व्य० अंग—सार काष्ठ; प्रभा० अव० आन्त्र; धातु : रक्त
रसादि—तिक्त कषाय शीतवीर्य कटुविपाकी
दोष—पित्तश्लेष्महर
गुण—रक्तशोधक ग्राही विशद वर्ण्य
रोग—त्वचारोग रक्तदुष्टि कुष्ठ मुखरोग शोथ अतीसार वीसर्प प्रमेह नाशक
योग—खदिरारिष्ट

गजपिप्पली

नाम—गजपिप्पली वशिरः कोलवल्ली
व्य० अंग—फल; प्रभा० अव० आमाशयान्त्र (पाचन)
रसादि—मधुर कटु तिक्त रस, उष्णवीर्य, कटुविपाकी वातकफहर
गुण—दीपन, पाचन, अनुमोलन, रुक्ष, मलशोषक
रोग—अतीसार प्रवाहिका कण्ठरोग कफजकास श्वास अग्निमान्द्य नाशक।

गाम्भारी GMELINA ARBOREA

नाम—गम्भारी, काश्मरी, मधुपर्णिका, श्रीपर्णी

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

व्य० अंग—फल, त्वक, मूल; प्रभा० अव० सर्व शरीर महास्रोतस्

रसादि—मधुर तिक्त कषाय, उष्णवीर्य मधुर विपाकी

दोष—त्रिदोषहर

गुण—मूल त्वक्: दीपन, भेदन मेध्य रसायन; पुष्प: मधुर तिक्त कषाय, शीतवीर्य मधुर विपाकी संग्राही, वातल, पित्तघ्न रक्तपित्त, प्रदरनाशक; फल: बृंहण शुक्रल, मूत्रल, मेध्य

रोग—वातरोग, तृष्णा, दाह, रक्तपित्त, क्षय, ज्वर, अर्श तथा विबन्ध नाशक है।

गुग्गुलुः BALSAMODENDRON MUKUL

नाम—गुग्गुलुः कौशिकः पुरः पलंकष—
महिषाक्ष, महानील, कुमुद, पद्म, हिरण्य: पाँच भेद हैं। मनुष्योंके लिए हिरण्य तथा महिषाक्ष उत्तम हैं।

व्य० अंग—निर्यास; प्रभा० अव० वात संस्थान

रसादि—तिक्त, कटु कषाय, मधुर रस उष्णवीर्य कटुविपाकी

दोष—त्रिदोषहर

गुण—तीक्ष्ण, लघु सर, वृष्य दीपन स्निग्ध, नवीन: बृंहण, पुराण: मेदनाशक, स्वर्य

रोग—वात व्याधियाँ, आमवात, वातरक्तादि, अपची, कुष्ठ रजः कृच्छ्रता, निर्बलता नाशक तथा व्रणरोपक

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

भग्न सन्धान कारक है

योग—योगराजगुग्गुलुः, कैशोरगुग्गुलु आदि आदि; मात्रा ४ रत्ती से १ माशा तक।

गुडूची TINOSPORA CORDIFOLIA

नाम—गुडूची, अमृता, छिन्नरुहा, चक्रलक्षणिका

व्य० अंग—काण्ड, सत्व; प्रभा० अव० सर्व शरीर

रसादि—तिक्त कषाय कटु उष्णवीर्य मधुरविपाकी।

दोष—त्रिदोषहर

गुण—रसायन, अग्निदीपन, बल्य, संग्राही, लघु

रोग—ज्वर, वमन, त्वक् रोग, रक्तदोष, पाण्डु, कामला प्रमेह रक्तपित्त और वातरक्त शामक है।

वक्तव्य—गुडूची सत्त्व : किंचित् मधुर तथा तिक्तरस पित्त शामक, वातरक्त, ज्वर वमन जीर्णज्वर मूत्र कृच्छ्र पाण्डु नाशक है।

योग—अमृतारिष्ट

गोक्षुर TRIBULUS TERESTRIS

नाम—गोक्षुरु, त्रिकंटक, श्वद्रंष्ट्रा, स्वादु कंटक

व्य० अंग—पंचांग, बीज; प्रभा० अव० वृक्क, प्रजनन संस्थान

रसादि—मधुर तिक्त रस, शीतवीर्य, मधुरविपाकी त्रिदोषहर।

गुण—वल्य वृंहण मूत्रल दीपन

रोग—प्रमेह मूत्रकृच्छ्र, पूयमेह, क्षीणता, वीर्यक्षीणता वातरक्त वस्तिरोग नाशक है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

योग-- गोक्षुरादि गुग्गुलु, दशमूल क्वाथ

गोजिह्वा ONOSMA BRACTEATUM

नाम---गोजिह्वा, गोजी, खरपर्णिनी

व्य० अं०—त्वक् ; प्रभा० अव० फुफ्फुस

रसादि---कषाय- मधुर तिक्त कटुरस शीतवीर्य, मधुर विपाकी

दोष---कफपित्तहर, वातवर्धक

गुण --शीतल, कफस्रावक, ग्राही, हृद्य

रोग—पित्तरोग (रक्तपित्तादि) कफज कास, प्रतिश्याय अरुचि नाशक है। वात कफ ज्वरादिमें फुफ्फुसों की शोथको शान्त करती हैं

गोरोचना OXGALL

नाम—गोरोचना, मंगल्या, रोचना।

यह गोपित्त है। तिक्त रस शीतवीर्य कटुविपाकी त्रिदोषहर; ग्रह, उन्माद गर्भस्राव, क्षत रक्तपित्त नाशक तथा शिशुओंके रोगों (अतीसार वमन मसूरिकादिमें) उत्तम है।

गुंजा ABRUS PRECATORIUS

नाम—रक्तिका, काकणन्ती, उच्चटा, गुंजा

व्य० अं०—बीज, मूल; प्रभा० अव० प्रजनन संस्थान

रसादि—तिक्त, कषाय, समशीतोष्ण मधुर विपाकी

दोष---कफ पित्तहर

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गुण---बीज वृष्य, वाजीकरण (विषमय) केश्य, मादक
रोग--शैथिल्य, इन्द्रलुप्त कण्डु कृमिनाशक; मूल : कफ
स्रावक फुफ्फुस रोगोंमें ।

चक्रमर्द CASIA ALATA

नाम --चक्रमर्दः, दद्रुघ्न :, प्रपुन्नाट :
व्य० अंग—बीज, पत्र; प्रभा० अव० त्वचा, वृक्क
रसादि---१ पत्र : मधुराम्लरस, शीतवीर्य, कटुविपाकी कफ-
शामक
गुण-रोग---मूत्रल, विष्टम्भी वातपित्त वर्धक, कफज्वर, कृमि त्वचारोग नाशक हैं
२ बीज : कटुरस उष्णवीर्य, कटुविपाकी, वातकफहर, कण्डु कृमि, गुल्म त्वचारोग दद्रु आदि नाशक है।

चन्दन SANTALUM ALBUM

नाम- चन्दन (श्वेत) श्रीखण्ड मलयज गन्धसारो
व्य० अंग----काष्ठ : तैल, प्रभा० अव०----वृक्क तथा ताप
रसादि---तिक्त कषाय मधुररस, शीतवीर्य मधुरविपाकी, पित्तहर
गुण---रक्तप्रसादन, दाह ताप हर, रुक्ष, लघु मूत्रल, कृमिघ्न
रोग--पूयमेह, मुत्रकृच्छ्र अन्तर्दाह तृष्णा विष वमन ज्वर
शामक मूत्र कृमिघ्न ।

योग---चन्दनासव

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चन्दन (रक्त) PTEROCARPUS SANTALINUM

नाम---चन्दन (रक्त) रक्तांग, रक्तचन्दन रक्तसारं ।

रसगुणादि—काष्ठोपयोगी है । तिक्तरस शीतवीर्य, मधुर विपाकी पित्तशामक रक्तपित्त दाह तापादि पैत्तिक विकार ज्वर भ्रम वमन नाशक तथा चक्षुष्य है ।

चव्य PIPER CHABA

नाम—चव्य चविका ऊषणा

व्य० अंग--मूल वा काण्ड; प्रभा० अव०—पाचन संस्थान

रसादि—कटुतिक्त रस, उष्णवीर्य कटुविपाकी

दोष—कफ शामक किंचित् वातपित्त प्रकोपक

गुण—लघु रुचिकर दीपनपाचन कफच्छेदक

रोग—उदरशूल, अजीर्ण कफज कास कफ तथा अर्श नाशक

चांगेरी OXALIS CORNICULATA

नाम—चांगेरी, क्षुद्राम्लिका, चतुःपत्री, दन्तशठा

व्य० अंग—पंचाग; प्रभा० अव०—पाचन संस्थान

रसदोषादि—अम्ल कषायरस उष्णवीर्य कटुविपाकी कफ वातहर पित्तवर्धक दीपन सर संकोचक है ।

रोग—गुदभ्रंश अतिसार संग्रहणी अर्शनाशक, पित्त रक्त प्रकोपक है

चित्रक PLUMBAGO ROSEA

नाम—चित्रक व्याल ऊषण अग्निनामा ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

व्य० अंग—मूल, मूलत्वक्; प्रभा० अव० पाचन संस्थान
रसादि—कटुरस उष्णवीर्य कटुविपाकी वातकफहर पित्तल
गुण—उष्ण रुक्ष अग्निदीपक ग्राही लघु
रोग—अर्श संग्रहणी शोथ आमातिसार अग्निमान्द्य हर है।
योग—चित्रकादि चूर्ण

जटामांसी NARDOSTACHYS JATAMANSI

नाम—जटामांसी मांसी जटिला तपस्विनी।
व्य० अंग—मूल; प्रभा० अव० वात संस्थान
रसादि—तिक्त कषाय मधुररस शीतवीर्य मधुरविपाकी
दोष—त्रिदोषहर
गुण—मेध्य बल्य वातशूलनिवारक अन्तर्दाहनाशक
रोग—रक्तपित्त अपस्मार स्मृतिनाश वीसर्प नाशक

जपा HIBISCUS-ROSA-SINENSIS

नाम—जपा त्रिसन्ध्या हेमपुष्प ओन्ड्र पुष्प
व्य० अंग—मूलत्वक् पुष्प; प्रभा० अव० श्लेष्मिक कला
रसदोष गुणादि—तिक्तरस, शीतवीर्य कटुविपाकी विष
पित्तकफ नाशक श्वेत प्रदर रक्तप्रदर नाशक है

जम्बीर CITRUS LIMONUM

नाम—जम्बीर दन्तशठ
व्य० अंग—फल; प्रभा० अव० मुख आमाशय

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रसादि—अम्लरस उष्णवीर्य कटुविपाकी वात कफहर दीपन सर विबन्ध कफोत्क्लेश, वमन आमदोष तथा अजीर्ण नाशक है।

नाम—जम्बीर (मधुर) मधुकुक्कुटिका

व्य० अं—फल; प्रभा० अव० सर्व देह वृक्क। मधुररस शीतवीर्य मधुर विपाकी श्लेष्मल वातपित्तहर स्निग्ध गुरु शीतल मूत्रल मुखशोधक तृष्णा ताप दाह शामक मूत्रकृच्छ्रहर है

निम्बु गुणा अपि एतद्वदेव ज्ञेया

जयपाल CROTON TIGLIUM

नाम—जयपाल दन्तीबीजम् मुकुलम्।

व्य० अं--बीज; प्रभा० अव० आन्त्र

रसादि—मधुर उष्णवीर्य मधुरविपाकी कफपित्तहर तीव्र रेचक, वामक है।

रोग—विबन्ध, उदरशूल, आध्मान, उदावर्त्त, जलोदर नाशक है

योग—इच्छाभेदी रस, ज्वरकेसरी आदि

वक्तव्य—बाजारमें मिलनेवाला जयपाल दन्तीका बीज नहीं अपितु एक अन्य वृक्षका बीज है। शुद्ध बीज चूर्णकी मात्रा १ से २ रत्ती तक है। अनुपान शीतल जल, शर्बत। जयपाल बीज तैलकी मात्रा १ बिन्दु है। यह तीव्र रेचक है।

शोधन—निस्तुषं जयपालं कृत्वा दोलायन्त्रे गोदुग्धेन द्वियामं

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

स्वेदयेत् । ततः मसीपत्रैः नवमृत्खर्पं रेवा तैलं शोषयेत् ।

जातिफलम् MYRISTICA LONGIFOLIA

नाम—जातिफलम्, जातिकोषम्, मालतीफलम् ।

व्य० अंग—फल, तैल; प्रभा० अव० प्रजनन संस्थान वातसंस्थान

रसादि—तिक्तकटुरस, उष्णवीर्य कटुविपाकी, वातश्लेष्महर

गुण—दीपन, ग्राही, स्वर्य स्तम्भक, उत्तेजक ।

रोग—शीघ्रवीर्यक्षरण आमातिसार, वमन, पीनस, मुख वैरस्य आक्षेप, आम वातहर है ।

जातिपत्री

नाम—जातिपत्री ।

व्य० अंग—जातिफलत्वक्, प्रभा० अव० जातिफलवत् ।

रसादि—तिक्त कटु मधुररस, उष्णवीर्य कटुविपाकी वात कफहर ।

गुणरोग—रोचक, सुरभि, अनुलोमन तीक्ष्ण वमन श्वास, मुख दौर्गन्ध्य लालास्राव शोषक, उत्तेजक है

जीवन्ती

नाम—जीवन्ती, मधुस्रवा, पयस्विनी शाकश्रेष्ठा

व्य० अंग—पंचाग; प्रभा० अव० सर्वदेह

रसादि—मधुररस शीतवीर्य मधुर विपाकी त्रिदोषहर

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गुण—स्निग्ध रसायन ग्राही लघु बल्य, रसायन कफ, वीर्य वर्धक, रक्तपित्त, दाह, क्षत क्षयनाशक

जीरकम् CARUM BAILBOSTINUM

नाम—जीरक त्रितय, अजाजी शुक्लजीरक; कृष्णजीरः सुगन्धिः कालाजाजी; उपकुंचिका, बृहज्जीरकम्

व्य० अंग—फल, प्रभा० अव० पाचकसंस्थान, गर्भाशय

रसादि—कटुरस उष्णवीर्य, कटुविपाकी, वात कफ नाशक पित्तल।

गुण—दीपन लघु संग्राही, रुक्ष, गर्भाशय शोधक।

रोग—अजीर्ण, अग्निमान्द्य, वमन, उदराध्मान गुल्म अतिसार नाशक।

योग—जीरकाद्यरिष्ट.

ज्योतिष्मति CELESTRIS PANICULATA

नाम—ज्योतिष्मती कटभी कंगुनी पारावतपदी।

व्य० अंग—बीज, बीज तैल, प्रभा० अव० मस्तिष्क, आमाशय

रसादि—कटुतिक्त रस, उष्णवीर्य कटुविपाकी, वातकफहर।

गुण—वामक, तीक्ष्ण, मृदुरेचक मेधावर्धक।

रोग—उदररोग मन्दबुद्धिता, स्मृतिभ्रन्श नाशक दीपन; तैल का अभ्यंग इन्द्रिय शिथिलतामें।

तगरम् WALERIANA WALLICHI

नाम—तगरम्, नतम्, कालानुसार्यं कुटिलं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

व्य० अंग---मूल; प्रभा० अव० सर्व शरीर
रसादि—मधुर तिक्तरस उष्णवीर्य मधुर विपाकी त्रिदोषहर
गुण—स्निग्ध लघु उष्ण
रोग—वीसर्प सन्धिवात अपस्मार नेत्ररोग तथा विषशामक ।

तमालपत्रम् CINNAMOMUM TAMALA

नाम—तमालपत्र तामसं रोमशं
व्य० अंग---पत्र; प्रभा० अव० पाचन संस्थान
रसादि—कटुमधुररस, उष्णवीर्य कटुविपाकी वातकफहर पित्तल ।
गुण—उष्ण तीक्ष्ण दीपन वातानुलोमन ।
रोग—वातकफके रोग अर्श अरुचि पीनस अग्निमान्द्य ।

ताम्बूलम् PIPER BETEL

नाम—ताम्बूल नागवल्ली
व्य० अंग---पत्र; प्रभा० अव० लालाग्रन्थि, प्रजननांग
रसादि—तिक्तकटु कषाय उष्णवीर्य कटुविपाकी वात कफहर ।
गुण—रुचिकारक विशद सर पाचन उत्तेजक
रोग—मुखदुर्गन्धि अरुचि श्रमनाशक कास शोथ तथा शीघ्र शुक्र क्षरणहर ।

तालमूली ASPARAGUS ASCENDUS

नाम—तालमूली मुशली खजूरी हिरण्यपुष्पी
व्य० अङ्ग----कन्द; प्रभा० अव० प्रजनन संस्थान

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रसदोष—मधुरतिक्त शीतवीर्य मधुर विपाकी वातपित्तशामक
गुण रोग—वृष्य वाजीकरण पौष्टिक गुरु पिच्छिल
रोग—वीर्य क्षीणता धातुक्षीणता दाह श्रम नाशक।
भेद—श्वेत मूसली कृष्ण मूसली, कृष्ण उत्तम है।
योग—मूसल्यादि चूर्ण; मात्रा ३ से ६ माशा; वीर्यक्षीणता।

तालीस पत्रम् ABIES WEBBIANA

नाम—तालीसपत्र पत्राढ्यम् धात्रीपत्रसम्।
व्य० अंग—पत्र; प्रभा० अव० फुफ्फुस।
रसादि—तिक्त मधुर उष्णवीर्य मधुरविपाकी वात कफहर।
गुण—तीक्ष्ण उष्ण कफ स्रावक स्वर्य दीपन।
रोग—श्वास कास अरुचि गुल्म अग्निमान्द्यहर
योग—तालीसादि चूर्ण; मात्रा २ से ८ माशा तक।

तुम्बुरु ZANTHOXYLUM ALATUM

नाम—तुम्बुरु वनजः सौरभः
व्य० अंग—बीज, त्वक; प्रभा० अव० दन्तौष्ठमुख।
रसदोष—कटुतिक्त रस उष्णवीर्य कटुविपाकी वात कफघ्न
गुण—तीक्ष्ण रुक्ष रुचिकर विदाही दीपन
रोग—मुख, दन्त, दन्तवेष्ट गलरोग शिरोगुरुता शामक है।
बीज अनेक दन्तमन्जनोंमें प्रयुक्त होते हैं।

तुलसी OCCIMUM SANCTUM

नाम—तुलसी, सुरसा, बहुमञ्जरी देवदुन्दुभिः।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

व्य० अंग—पंचांग; प्रभा० अव० त्वचा
रसदोष—कटु तिक्तरस, उष्णवीर्य, कटुविपाकी, वातकफ नाशक
गुण दोष—उष्ण स्वेदल दाहकारक रुचिकारक जन्तुघ्न विषमज्वर पार्श्वशूल प्रतिश्याय श्वास ज्वर हिक्का नाशक

तुवरक Auicinea Officinalil

नाम—तुवरक
व्य० अंग—तैल, बीज; प्रभा० अव० त्वचा
रस दोष—कषाय रस, उष्णवीर्य कटु विपाकी कफ नाशक
गुण-रोग—कृमिघ्न, त्वच्य, कुष्ठ, कृमि, त्वचा रोग दद्रु आदि नाशक है। तैलकी मात्रा ५ से ४० बिन्दु तक क्रम वृद्धया।

त्रायमाणा Delphinium Zalil

नाम—त्रायमाणा, गिरिसानुजा, कृतत्राणी, वार्षिकी
व्य० अंग—पंचांग; प्रभा० अव० सर्वशरीर
रस दोष—तिक्त कषाय शीतवीर्य कटु विपाकी पित्तकफहर
गुण रोग—सर, तापहर, स्वेदल, ज्वर, गुल्म, वमन, अग्निमान्द्य रक्तपित्त अर्श शामक है।

त्रिवृत् Ipomea Turpethum

नाम—त्रिवृत्, विभण्डी, अरुणा। श्यामा, पालिन्दी, काला
व्य० अंग—मूल; प्रभा० अव० आन्त्र

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रस दोष—कटु तिक्त मधुर कषाय, उष्णवीर्य, कटुविपाकी वातला कफपित्तहर

गुण रोग—विरेचक, ज्वर, विबन्ध, उदर रोग, यकृत् प्लीह वृद्धिहर।

योग—नाराच चूर्ण आदि। चूर्ण मात्रा ४ माशा से १ तोला

त्वक् CINNAMOMUM ZEYLANICUM

नाम—त्वक्, दारुसिता, गुड़त्वक्। चोचं, वराङ्गम्

व्य० अंग—त्वचा, तैल; प्रभा० अव० आन्त्र, आमाशय

रस दोष—मधुरकटुरस, उष्णवीर्य, कटुविपाकी, वातकफहर पित्तल

गुण-दोष—संग्राही वातानुलोमक, दीपन, तीक्ष्ण, कृमिघ्न वमन, अग्निमान्द्य, आध्मान, आक्षेप, उत्क्लेश नाशक; आमवात, पीनसहर; तैल : उपर्युक्त गुणवाला रजःस्रावी और दन्तशूल शामक।

दन्ती

नाम—दन्ती, बृहद्दन्ती, द्रवन्ती, प्रत्यक्पर्णी लघुदन्ती

व्य० अंग—मूलत्वक्, फल, प्रभा० अव० आन्त्र

रसदोष—कटु मधुररस, उष्णवीर्य कटुविपाकी पित्तकफ नाशक

गुण—तीव्र रेचक, दीपन, उदररोग अर्श गुल्म त्रिदोषहर उदरकृमिनिष्कासक पाण्डु कामला नाशक।

वक्तव्य—लघु बृहत् भेदसे दो दन्ती हैं। लघुदन्ती फलके गुण

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

यह हैं : मधुररस शीतवीर्य मधुर विपाकी मूत्रल शोथ कफ पित्त नाशक । वृहद्दन्तीका मूल प्रयुक्त होता है ।

योग—दन्त्यरिष्ट : अर्श विबन्ध उदर रोगमें

द्राक्षा VITIS VENIFERA

नाम—द्राक्षा, गोस्तनी, मृद्वीका

व्य० अंग—फल; प्रभा० अव० सर्वशरीर

रसदोष—पक्व : मधुर कषाय रस शीतवीर्य मधुर विपाकी वात पित्तहर; आम : अम्ल रक्तपित्त प्रकोपक

गुण—स्वर्य सर मूत्रल बृंहण रुचिप्रद कोष्ठवायु क्षय निर्बलता ज्वर दाह तृष्णा वातरक्त मूत्रकृच्छ्र नाशक है विशेषकर पाचक और पौष्टिक है ।

योग—द्राक्षासव, द्राक्षारिष्ट, एलादिवटी

दारु हरिद्रा BERBERIS ASIATICA

नाम—दारुहरिद्रा, पीता, कंटकटेरी

व्य० अंग—काष्ठ, घनसत्त्व; प्रभा० अव० त्वचा यकृत्

रसदोष—तिक्तकटु रस उष्ण वीर्य कटुविपाकी, कफहर

गुण रोग—सर, यकृदुत्तेजक, पित्तरेचक, चक्षुष्य, रक्तशोधक विषमज्वरहर रक्तार्श रक्तपित्त, हिक्का विष वमन और नेत्ररोग नाशक है । घन सत्त्व का नाम 'रसाञ्जन' है ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

दाड़िमः PUNICA GRANATUM

नाम---दाड़िमः लोहितपुष्पकः शुकवल्लभ, रक्तबीजः

भेद---मधुर, मधुराम्ल और आम्ल तीन प्रकार

व्य० अंग—फल, फलत्वक्; प्रभा० अव० पाचनसंस्थान

रसदोषादि–१मधुरःमधुररस शीतवीर्य, मधुरविपाकी त्रिदोषहर
२-अम्लः अम्लरस उष्णवीर्य, पित्तवातवर्धक आमवात और कफहर है।
३ मधुराम्ल वातहर पित्तकफावरोधी। सबमें प्रायः कषाय अनुरस होता है।

गुण-रोग---संग्राही, रुचिकर, पाचक, अतिसार, तृष्णा, दाह ज्वरनाशक मुखशोषहर,
फलत्वचा : उदरकृमिनाशक, ग्राही, रक्तातीसार हर,
पुष्पस्वरस : नासारक्तस्रावरोधक।

योग---दाडिमाष्टकमोदक : पाचन दीपन रुचिकर।

दुरालभा

नाम—दुरालभा, धन्वयासः दुःस्पर्शा, मरुद्भवः

व्य० अंग—पंचांग तथा शर्करा; प्रभा० अव० आन्त्र फुफ्फुस

रसदोष—कषायतिक्त मधुररस, शीतवीर्या, मधुरविपाकी पित्त कफ शामक।

गुण रोग—सर-शीतल कफस्रावक मूत्रल, शामक, ज्वरमें

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तृष्णा जिह्वाशोषनाशक, रक्तपित्त वमन भ्रम कास नाशक है।

शर्करा—धान्वयास या यवासशर्करा (तुरंजवीन) शीतल श्लेष्महर तथा सर है

वक्तव्य—दुरालभा गुणैस्तुल्यो बुधैरुक्तो यवासकः।

दूर्वा CYNODON DACTYLON

नाम—दूर्वा शाद्वलं; श्वेत नील दो भेद हैं

व्य० अंग—मूल पंचांग; प्रभा० अव० वृक्क

रसदोष—मधुरकषायतिक्तरस शीतवीर्य मधुरविपाकी कफ पित्तहर

गुण-रोग—मूत्रल शीतल, जीवनीय; वीसर्प रक्तपित्त दाह तृष्णा शामक है

योग—दूर्वादिघृतः उरः क्षत रक्तपित्तमें।

देवदारु PINUS DEODARA

नाम—देवदारु भद्रदारु; स्निग्धदारु तथा काष्ठदारु ये दो भेद हैं।

व्य० अंग—काष्ठ तैल; प्रभा० अव० सर्वशरीर।

रसदोष—तिक्तकटु कषाय उष्णवीर्य कटुपाकी वातकफ हर।

गुण-रोग—स्निग्ध उष्ण कृमिघ्न शोथशामक मेदोघ्न, प्रमेह त्वचारोग आमवात सन्धिशोथ तथा फुफ्फुसशोथ और श्वास शामक है, तैलः अभ्यं-

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गार्थ प्रयुक्त होता है।

योग—देवदार्वाद्यरिष्ट।

देवदाली LUFFA ECHINATA

नाम—देवदाली, जीमूत, कर्कोटी

व्य॰ अंग—फल; प्रभा॰ अव॰ आमाशय आन्त्र

रसदोष—तिक्तरस उष्णवीर्य कटु विपाकी त्रिदोषघ्न

गुण—वामक रेचक कृमिघ्न

रोग—गुल्म उदरशूल अर्श पाण्डु कामला ।

वक्तव्य—सित पीत रक्तपुष्प भेदास्त्रिधा, गुणैः समाना ।

द्रोणपुष्पी LEUCIS LINIFOLIA

नाम—द्रोणपुष्पी फलपुष्पा दीर्घपत्रा

व्य॰ अंग—पंचांग; प्रभा॰ अव॰ सर्वशरीर

रसदोष—कटुतिक्तरस, उष्णवीर्य, मधुर विपाकी, वातकफहर

गुणरोग—तापहर भेदनी रुच्या ज्वर कामला अर्श अग्निमान्द्यहरा ।

धातकी WOODFORDIA FLORIBUNDA

नाम—धातकी वह्निज्वाला धातुपुष्पी ताम्रपुष्पी

व्य॰ अंग—पुष्प; प्रभा॰ अव॰ आन्त्र

रसदोष—कटु कषायरस शीतवीर्य कटुविपाकी, पुष्प : शीतल पित्तहर

गुणरोग—संग्राही मादक अतीसार प्रवाहिका वीसर्प नाशक

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

धान्यकम् CORRIANDRUM SATIVUM

नाम—धान्यकं कुस्तुम्बुरु; वितुन्नकम्
व्य० अंग----फल; प्रभा० अव०पाचनसंस्थान
रसदोष----कटुमधुररस शीतवीर्य मधुर्राविपाकी त्रिदोषापहरः
गुण----दीपन पाचन मूत्रल संग्राही, आर्द्र : विशेषत : शीतल पित्त शामक; शुष्क : किञ्चित् उष्ण
रोग—ज्वरमें दाह, तृष्णा, आमदोषहरणार्थ, वमन, अतीसार आमाजीर्ण नाशक है।

धुस्तूरः DATTURA STRAMONIUM

नाम—धत्तूरः कनकः उन्मत्तः (श्वेत कृष्ण भेदेन द्विधा)
व्य० अं०—पत्र, बीजक; प्र० अव० मस्तिष्क, कला।
रस—कषाय मधुर तिक्त रस उष्णवीर्य कटुविपाकी पित्त कफहर।
गुण—मादक कफ-शोषक शोथहर स्तम्भन वेदनाहर
रोग—श्वास, आमवात, सन्धिशोथ, शोथ, यूका लिक्षा, प्रतिश्याय, कफजरोगहर
योग—कनकासव, ना० लक्ष्मीविलासरस आदि

नागकेसरम् MESUA FERIA

नाम—नागकेसरम् चाम्पेयो : नागकिञ्जल्कः
व्य० अं—पुष्पसूत्र; प्र० अव० पाचन संस्थान
रसदोष—तिक्त कषायरस उष्णवीर्य कटुविपाकी पित्तकफहर

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गुण—आमपाचक संग्राही रक्तस्रावरोधक
रोग—अर्श (रक्तार्श) वमन, विष, रक्त या श्वेतप्रदर, अतीसार नाशक है।

नारिकेलम् Cocos Mucifera

नाम—नारिकेलं, कूर्चशीर्षकः, दृढ़फलः, श्रीफलम्।
व्य० अं०—फल; प्र० अव० वृक्क, सर्वशरीर
रसदोष—मधुररस शीतवीर्य मधुरविपाकी वातपित्तहर।
गुण—बल्य बृंहण वस्तिशोधक; कोमल नारिकेलः विशेषकर पित्त शामक और रक्त प्रसादक; जलः शुक्रल शीतल, मूत्रल है
रोग—रक्तपित्त मूत्रकृच्छ्र पित्तरोगघ्न परिणाम शूलघ्न तथा वमन नाशक।
योग—नारिकेल लवणः मात्रा ४ रत्ती से ८ रत्ती तक।

निम्ब: Melia Azadirach

नाम—निम्बः, पिचुमर्द, अरिष्टः
व्य० अं०—पंचांग प्र०; अव० त्वक् धातु रक्त
रसदोष—तिक्त रस शीतवीर्य कटुविपाकी त्रिदोषहर
गुण—रक्त शोधक, कृमिघ्न, नेत्र्य, त्वचारोगहर शीतल
रोग—रक्तपित्त कण्डु आदि त्वचारोग, ताप दाह ज्वर, नेत्ररोगहर और व्रणशोधक; तैल: त्वचारोग और कृमिहर; पत्र: वातल; फल: भेदन उष्ण अर्शोघ्न है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

निर्गुण्डी : VITEX NIGUNDO

नाम—निर्गुण्डी, सिन्दुवार (नीलपुष्पी: निर्गुण्डी; श्वेत पुष्पी : सिन्दुवार)

व्य० अंग--पंचांग; प्र० अव० वात संस्थान

रसदोष—कटुतिक्त कषायरस उष्णवीर्य मधुरविपाकी वात कफहर।

गुण—कृमिघ्न स्वेदल रुक्ष वातवेदना तथा शोथ शामक है

रोग—वात व्याधियाँ, आमवात, सन्धिशोथ, गृध्रसी, ज्वर और आमदोषघ्न है।

योग---निर्गुण्डी तैल: व्रणरोपक शोधक।

पटोल (तिक्त)

TRICHOSANTHES CUCUMERINA

नाम—पटोल कर्कशच्छद: तिक्त:, पाण्डुफल:।

व्य० अंग—पंचांग; प्रभा० अव० आन्त्र, धातु रक्त

रसदोष---तिक्त कटुरस, उष्णवीर्य, कटुविपाकी पित्तकफहर फल : मधुर विपाकी त्रिदोषघ्न

गुणरोग—पत्र : पित्तघ्न; मूल : सर, रक्तशोधक, भेदन दीपन अनुलोमक, त्रिदोषशामक, ज्वर दाह त्वचारोग पाण्डु कामला रक्तपित्त नाशक है।

योग—पटोलपत्रादिक्वाथ।

पद्मकाष्ठ PRUNUS PUDDUM

नाम---पद्मक पद्मकाष्ठ पद्मगन्धि

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

व्य॰ अंग—काष्ठ; प्रभा॰ अव॰ गर्भाशय
रसदोष—तिक्त कषायरस शीतवीर्य मधुरविपाकी पित्तहर
गुण-रोग—लघु स्निग्ध ग्राही रक्तस्तम्भक गर्भस्थापक पित्तरोग, वीसर्प दाह विस्फोट ज्वर वमन रक्त-पित्तहर, गर्भस्राव निवारक तथा गर्भस्थापक।

पर्पट FUMERIA PARVIFLORA

नाम—पर्पट, वरतिक्त
व्य॰ अंग—पंचांग; प्रभा॰ अव॰ सर्वशरीर
रस—तिक्त शीतवीर्य कटुविपाकी कफपित्तहर वातल
गुण-रोग—संग्राही, शीतल, सर, रक्तशोधक। रक्तपित्त पैत्तिकज्वर, जीर्णज्वर, ज्वरातीसार भ्रम दाह तृष्णाहर

पलाण्डु ALLIUM SEPA

नाम—पलाण्डु मुखदूषकः यवनेष्ठः।
व्य॰ अङ्ग—कन्द; प्रभा॰ अव॰ वात पाचन संस्थान
रस दोष—लवणातिरिक्त सब रस (मुख्यतया कटु मधुररस) समशीतोष्ण मधुरविपाकी वातहर कफकारक, किंचित् पित्तल।
गुण दोष—वृष्य अग्निवर्धक, गुरु धातुपौष्टिक, स्निग्ध; वात रोग, वातरक्त, वात कफजार्श विसूचिका हर।

परुषकम् GREWA ASIATICA

नाम—परुषकं मृदुफलं, अल्पास्थिः।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

व्य० अंग—फल तथा फल स्वरस; प्रभा० अव० सर्वशरीर (ताप)

रस दोष—त्वक् आमफल : अम्लरस उष्णवीर्य, कटुविपाकी पित्तलम् ।

पक्व फल : मधुराम्लरस शीतवीर्य मधुरविपाकी पित्तहर

गुणरोग—पक्व : बृंहण शीतल, तापहर सर पित्तरोग कामला रक्तपित्त, ज्वरमें दाह तृष्णा शामक है। परुषक पानक या शार्कर बना कर प्रयोग करे।

पलाश BUTEA FRONDOSA

नाम—पलाश, किंशुक, ब्रह्मवृक्षः वातहर ।

व्य० अंग—निर्यास, बीज, तैल, क्षार, पुष्प; प्रभा० अव० महास्रोतस् ।

रस दोष—तिक्त कटु कषायरस उष्णवीर्य कटुविपाकी त्रिदोषहर ।

गुण—सर स्निग्ध, संग्राही, कृमिघ्न; पुष्प : शोथशामक; बीज : त्वच्य उदरकृमिघ्न; निर्यास : संग्राही, स्वेदाव रोधक; मूल : कफपित्तशामक; क्षार : गुल्म उदर रोगहर।

रोग—अर्श, संग्रहणी, उदरकृमि, गुल्म, उदररोग, त्वक् रोग नाशक ।

पाटला
STERIOSPERMUM SUAVEOLENS

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

नाम—पाटला, मोघा ताम्रपुष्पी, घण्टा
व्य० अं---मूल त्वक् पुष्प; प्रभा० अव० महास्रोतस् ।
रसदोष—तिक्त कषायरस, समशीतोष्ण, मधुरविपाकी, त्रिदोषहर।
गुण रोग—बल्य; पुष्पफल : शीतल, मूत्रल पित्तशामक वमन शोथ, हिक्का, तृषाहर; फलपुष्प : पित्तातीसार, हिक्का तथा रक्तपित्त शामक।

पाठा CISAMPELOS PARIERA

नाम—पाठा, अम्बष्ठा पापचेलिका (लघु बृहत् भेदात् द्विधा)
व्य० अङ्ग—पंचांग; प्र० अव० महास्रोतस (आन्त्र)
रसदोष—तिक्तरस, उष्णवीर्य कटुविपाकी त्रिदोषशामक
गुण रोग—आम पाचन संग्राही तीक्ष्ण लघु ज्वर अतीसार दाह, गुल्महर है।

पाषाणभेद

नाम—अश्मभेद, पाषाणभेद
व्य० अङ्ग—मूल, पत्र; प्र० अव० वृक्क
रसदोष—तिक्तकषाय रस शीतवीर्य मधुरविपाकी, त्रिदोषहर
गुण—मूत्रल, शोथ शामक, व्रण पाचक, मूत्रकृच्छ्र अश्मरि, योनिरोग मूत्राघात अतिसार और वस्तिशोथ शामक है।

पिप्पली PIPER LONGUM

नाम—पिप्पली, कणा, मागधी

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

व्य० अङ्ग—फल; प्र० अव० पाचक संस्थान

रसदोष—कटुरस : अनुष्ण मधुरविपाकी, वातश्लेष्म शामक; आर्द्र पिप्पली : कफकारक और पित्तशामक; शुष्क : पित्तला

गुण रोग—स्निग्ध लेखन दीपन पाचन, उदररोग जीर्ण ज्वर अग्निमान्द्य मेदा कास अरुचि प्रवाहिका वातकफ नाशक है।

योग—१ सितोपलादिचूर्ण : कासे,
 २ गुड़पिप्पली : जीर्णज्वरे

पिप्पली मूल

नाम—कणामूल, ग्रन्थिकं, ऊषणम्।

व्य० अंग—मूल; प्र० अव० महास्रोतस्।

रसदोष—कटुरस उष्णवीर्य, कटुविपाकी वातकफघ्न पित्तला

गुण रोग—दीपन, पाचन अनुलोमन मेदःहर भेदन। उदर रोग आध्मान शूल प्लीहावृद्धि गुल्म-आम दोष नाशक।

प्रियंगु

नाम—प्रियंगु महिलाह्वया कान्ता फलिनी गन्धप्रियगुंच।

व्य० अंग—बीज; प्र० अव० आन्त्र

रसदोष—तिक्त कषायरस शीतवीर्य कटुविपाकी त्रिदोषहर

गुण रोग—शीतल संग्राही रक्तस्तम्भक, रक्तातीसार रक्त-प्रदर, ज्वरमें दाह तृष्णा रक्तपित्तवमन हर है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पुष्करमूलम्

नाम—पुष्करमूल, पद्मपत्र, काश्मीरम् ।

व्य० अंग—मूल; प्र० अव० फुफ्फुस

रसदोष—तिक्तकटुरस उष्णवीर्य कटुविपाकी वातकफ शामक

गुण-दोष—शोथशामक शूलहर कफद्रावक हिक्का श्वास कास पार्श्वशूलहर ।

पुदिनम् MENTHA PIPERATA

नाम—पुदिन वान्तिहारी रोचनी शोकशोभना

व्य० अंग—सत्त्व, पंचांग; प्र० अव० महास्रोतस

रसदोष—मधुरकटुरस उष्णवीर्य कटुविपाकी वातकफहर

गुण रोग—दीपन पाचन अनुलोमक कृमिघ्न संग्राही, अतिसार अग्निमान्द्य विसूचिका उदरकृमि उदराध्मान नाशक है ।

पुनर्नवा BOERHAVIA DIFFUSA

नाम—पुनर्नवा, श्वेतमूला दर्षाभूः (श्वेत पुनर्नवा) रक्त-पुनर्नवा : क्षुद्रवर्षाभूः कठिल्लिका

व्य० अंग—मूल-पंचांग; प्रभा० अव० वृक्क

रस दोष—श्वेत : तिक्त कटु कषाय रस उष्णवीर्य कटुविपाकी वात कफहर

रक्त : तिक्तरस शीतवीर्य कटुविपाकी पित्तकफहर वातल

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गुण-रोग—सर : दीपन शोथहर मूत्रल रक्तप्रदर पाण्डुरोग उदर रोग; आर्द्र : शोथ वृक्क तथा हृदय विकृति जन्य शोथ शामक है; श्वेत पुनर्नवा मूलरस नक्तान्ध्य नाशक है।

योग—पुनर्नवामण्डूर, पुनर्नवारिष्ट, पुनर्नवाष्टक क्वाथ्य

पूग ARECHA CATECHU

नाम—पूग क्रमुकं खण्ड गुवाक

व्य० अंग—फल; प्रभा० अ० महास्रोतस् (श्लेष्मिक कला स्रावहर)

रसदोष—कषायरस शीतवीर्य कटुविपाकी पित्तश्लेष्महर

गुण रोग—स्राव शोषक संग्राही गुरु रुक्ष प्रमेह श्वेतप्रदर अतीसार लालास्राव नाशक तथा पौष्टिक वीर्य वर्धक है

योग—सुपारीपाक (पूग खण्ड) रक्तपित्त प्रदरादौ।

पृश्निपर्णी URAREA PICTA

नाम—पृश्निपर्णी, गुहा, पृथक्पर्णी

व्य० अंग—पंचांग; प्रभा० अव० वातसंस्थान

रसदोष—मधुर तिक्तरस उष्णवीर्य मधुरविपाकी त्रिदोषहर

गुण रोग—दीपन संग्राही वृष्य सर वातघ्न अतीसार वमन ज्वर वातरोग नाशक है

प्रसारिणी PAEDERIA FOETIDA

नाम—प्रसारिणी भद्रपर्णी प्रतानिनी

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

व्य० अं०—पंचांग; प्र० अव० वातसंस्थान
रसादि—तिक्तरस उष्णवीर्य मधुरविपाकी त्रिदोषहर
गुण—सर गुरु बल्य वामक तथा रेचक
रोग—आमवात वातशूल शोथ वातरक्त कफनाशक है।
योग—प्रसारिणी तैलादि : बाह्य प्रयोगार्थ

बलाचतुष्टयम्

नाम—बला नागबला अतिबला महाबला
व्य० अंग—बीज मूल त्वक्; प्र० अव० प्रजनन अंग
रसदोष—मधुर कषायरस शीतवीर्य मधुरविपाकी पित्त वातहर
गुणदोष—शीत वृष्य संग्राही पौष्टिक वातपैत्तिक रोग, रक्तपित्त तृषा दाह वीर्यक्षीणता रक्तप्रदर प्रमेहहर

ब्राह्मी HYDROCHTYLE ASIATICA

नाम—ब्राह्मी सोमवल्ली सरस्वती
व्य० अंग—पत्र पंचांग; प्रभा० अव० मस्तिष्क
रसदोष—तिक्तकषाय मधुररस शीतवीर्य मधुरविपाकी वातकफापहा
गुणरोग—स्वर्य मेध्य रसायन रुक्ष त्वचारोग मस्तिष्क निर्बलता नाशक है।
योग—सारस्वतारिष्ट, ब्राह्मीपाक

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

बिल्व AEGLE MARMELOS

नाम—बिल्वः शैलूषः सदाफलः श्रीफलः
व्य० अंग----फल, मज्जा, मूलत्वक् पत्र; प्र० अव० आन्त्र
रसदोष—मधुरतिक्त कषायरस उष्णवीर्य मधुरविपाकी वात श्लेष्महर; मूल : त्रिदोषघ्न; आमफल : ग्राही पक्व : पित्तहर सर
गुणरोग—ग्राही दीपन बल्य छर्दिहर; आमफल : संग्राही अतीसार प्रवाहिकाहर; पक्व फल : मृदुरेचक पित्त शामक गुरु और विष्टम्भकारक है

बोलम् BALSAMODENDROM MYRRHA

नाम---बोल, हीराबोल गन्धरस
व्य० अंग---निर्यास; प्र० अ० गर्भाशय, आन्त्र
रसदोष—मधुर कटुतिक्त, शीतवीर्य, कटुपाकी कफहर
गुणरोग—ग्राही, रक्तस्तम्भक, गर्भाशय रसायन, रक्तपित्त, संग्रहणी, अतीसार, अतिस्वेद शामक है

भंगं CANNABIS INDICA

नाम—भंगा मातुलानी विजया
व्य० अंग—पत्र, निर्यास बीज; प्र० अव० मस्तिष्क, आन्त्र
रसदोष—तिक्त कषायरस उष्णवीर्य, कटुविपाकी, वात कफहर
गुणरोग—संग्राही, शोषक, निद्राजनक, हर्षदा पाचन अतिसार, अर्श, शीघ्रशुक्रक्षरण, रक्तप्रदर

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अग्निमान्द्यनाशक और उत्तेजक है

भल्लातक

SEMECARPUS ANACARDIUM

नाम—भल्लातक, अरुष्कर, अग्निकः
व्य० अंग—फल; प्र० अव० वातसंस्थान
रसदोष—मधुर कषायरस उष्णवीर्य मधुरविपाकी वातकफहर
गुण—अग्निवर्धक मेध्य रसायन शुक्रल; फलमज्जा : मधुर पित्तघ्न; वृन्त : पित्तघ्न केश्य दीपन
रोग—अर्श संग्रहणी गुल्म प्रमेह वातरोगहर
योग—अमृतभल्लातकी अवलेह : वातरोगों तथा मधुमेहमें

भारंगी

CLERODENDRON SERRATUM

नाम—भार्ङ्गी फञ्जी ब्राह्मणयष्टिका
व्य० अङ्ग—काष्ठ मूल; प्रभा० अव० फुफ्फुस
रसदोष—तिक्तकटुरस उष्णवीर्य कटुविपाकी वातकफघ्न
गुणरोग—दीपन शोथशामक कफहर रुक्ष लघु यक्ष्मकास प्रतिश्याय पीनस वातकफ ज्वर शामक है।
योग—भार्ग्यादिगुड : राजयक्ष्मामें, कासहर पौष्टिक।

भृंगराज ECLIPTA ALBA

नाम—भृङ्गराज मार्कव केशरञ्जनः।
व्य० अंग—पंचांग; प्रभा० अव० केश तथा त्वचा
रसदोष—तिक्तकटुरस उष्णवीर्य कटुविपाकी वातकफघ्न

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गुणरोग—उष्ण रसायन संग्राही त्वच्य रुक्ष. पाण्डु संग्रहणी त्वचारोग नाशक तथा केशवर्धक है ।

मधुयष्टि GLYCYRRHIZA GLABRA

नाम—मधुयष्टी यष्टीमधु क्लीतनकं मधुकम् ।

व्य० अंग—मूल-काष्ठ; प्रभा० अव० फुफ्फुस आन्त्र

रसदोष—मधुर रस शीतवीर्य मधुरविपाकी वातपित्तहर

गुणरोग—चक्षुष्य सर स्वर्य कफस्रावक शुक्रल, कास तृष्णा प्रतिश्याय गलशोथ शीतपित्त रक्तपित्त-हर । बृहत्मात्रामें वामक है ।

मदन RANDIA DUMETORUM

नाम—मदनः राठः पिण्डीतकः विषपुष्पकः

व्य० अंग—फल; प्रभा० अव० आमाशय

रसदोष—कटुतिक्तरस उष्णवीर्य कटुविपाकी कफपित्तहर

गुण रोग—वामक पक्वाशयामाशयशोधक; विषः त्वचा-रोग गुल्म शोथ श्वासादिमें वमनार्थ

मरिचम् PIPER NIGRUM

नाम—मरिचं वेलजं उषणम् ।

व्य० अंग—फल; प्रभा० अव० महास्रोतस्

रसदोष—कटुरस उष्णवीर्य कटुविपाकी; आर्द्रः मधुरविपाकी नातिउष्ण वातकफघ्न पित्तल

गुण—दीपन तीक्ष्ण स्वर्य अग्निमान्द्य कृमिहर ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मंजिष्ठा RUBIA CORDIFOLIA

नाम—मंजिष्ठा समङ्गा विकसा मण्डूकपर्णी रक्तयष्टिका
व्य० अङ्ग—काष्ठ; प्रभा० अव० आन्त्र, धातु रक्त
रसदोष—मधुरतिक्तकषाय उष्णवीर्य कटुविपाकी वातकफघ्न
गुणरोग—वर्ण्य रक्तशोधक त्वच्य त्वचारोग रक्तातीसार
वीसर्प प्रमेह शोथशामक है ।
योग—मंजिष्ठादि क्वाथ, महामंजिष्ठादि क्वाथ

माचिका TAMARIX GALLICA

नाम—माचिका अम्बष्ठा मयूरविदला
व्य० अङ्ग—फल; प्रभा० अव० आन्त्र
रसदोष—कषायाम्लरस शीतवीर्य कटुविपाकी पित्तशामक
गुणरोग—संग्राही संकोचक रक्तस्तम्भक पक्वातीसार
रक्तपित्त दन्तवेष्टशैथिल्य गुदभ्रंशशामक है ।

मायाफलम् QUEREUS INFECTORIA

गुणादि सर्वं माचिकावत्ज्ञेयम् ।

माषपर्णी TERAMNUS LABIALIS

नाम—माषपर्णी, महासहा, सूर्यपर्णी,
व्य० अङ्ग—पंचांग; प्रभा० अव० सर्वशरीर
रसदोष—तिक्तमधुररस, शीतवीर्य, मधुरविपाकी, वातपित्तहर
कफकारक
गुणरोग—बल्य, वृष्य, संग्राही, पौष्टिक, वातपैत्तिकज्वर

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

शोथ, रक्तपित्त, दाह शामक है।

मिसि : FOENICUM VULGARE

नाम—शतपुष्पा मधुरा मिसिः मिश्रेया, छत्रा। यह तिक्त तथा मधुर दो प्रकार की है। शतपुष्पा मृदुरेचक व पित्त शामक है। मिश्रेया तिक्त उष्ण तथा गर्भाशय शोधक। अनेक वैद्याचार्य मिश्रेया को मधुर तथा शतपुष्पा को तिक्त समझते हैं और गुणों में भी इसी प्रकार विपरीतता करते हैं।

व्य० अङ्ग—फल; प्र० अव० पाचन संस्थान

रसदोष—कटुतिक्त रस उष्णवीर्य कटुविपाकी गर्भाशय शोधक। यदि मधुर हो तो शीतवीर्य मधुर विपाकी पित्त वात शामक।

गुण रोग—मधुर : सर शीतल तृष्णा वमन अतिसार नाशक; तिक्त : तीक्ष्ण पित्तल संग्राही दीपन अतीसार अग्निमान्द्य वमन योनिशूलहर है

मुद्गपर्णी PHASEALUS TRILOBUS

नाम—मुद्गपर्णी, शूर्पपर्णी, सहा

व्य० अङ्ग—पंचांग; प्र० अव० आन्त्र

रसदोष—तिक्त मधुर रस शीतवीर्य मधुर विपाकी त्रिदोषहर

गुण रोग—संग्राही रुक्ष वृष्य लघु, ग्रहणी अतिसार ज्वर दाह और शोथहर है। यह दशमूलका अङ्ग है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मुण्डीतका SPHAERANTHES INDICUS

नाम—मुण्डी श्रावणी कदम्बपुष्पिका (लघु वृहत् भेदेन द्विधा)

व्य० अङ्ग—पंचांग; प्र० अव० त्वचा, धातुः रक्त।

रसदोष—मधुरतिक्तरस उष्णवीर्य कटुविपाकी पित्त कफ शामक।

गुण—मूत्रल, रक्तशोधक, सर, गण्डमाला रक्तदुष्टि वीसर्प रक्तपित मूत्रकृच्छ्र शामक है।

मुस्तकम् CYPRUS ROTUNDUS

नाम—मुस्तकम् वारिदम् भद्रमुस्तकं नागरमुस्तकम्

व्य० अंग—कन्द; प्र० अव० महास्रोतस्

रसदोष—तिक्तकटु कषायरस शीतवीर्य कटुविपाकी कफ पित्तहर

गुण रोग—दीपन पाचन संग्राही शीतल ज्वरातिसार वमन तृष्णा रक्तपित्तशामक तथा आम पाचन है।

यवानी CARUM CAPTICUM

नाम—यवानी अजगन्धा दीप्यका; अजमोदा खराश्वा

व्य० अंग—फल बीज; प्र० अव० महास्रोतस्

रसदोष—कटुतिक्तरस उष्णवीर्य कटुविपाकी वातकफहर

गुण-रोग—पाचन रुचिकर तीक्ष्ण विदाही उदरशूल अजीर्ण आनाह गुल्म उदरकृमि प्लीहावृद्धिहर

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अजमोद विशेषकर वमन छर्दि हिक्का और वस्ति
शूलहर है

पारसीक यवानिका HYOCYOMUS NIGER

नाम---पारसीक यवानी : मदकारिणी तुरुष्का
व्य० अंग—बीज; प्र० अव० मस्तिष्क
रस दोष---तिक्त कटुरस उष्णावीर्य कटुविपाकी कफहर
गुण रोग--निद्रालु संग्राही मादक वेदनाशामक पाचन
उदरकृमिघ्न; अनिद्रा अतीसार उदरशूल वमन
उदरकृमि नाशक।

रसोनः ALLIUM SATIVUM

नाम—रसोनः, लशुनः, उग्रगन्धः, महोषधः
व्य० अंग—कन्द; प्र० अव० वातसंस्थान, सर्वशरीर
रस दोष—अम्ल रहित शेष पंचरस उष्णावीर्य मधुरविपाकी
वात शामक।
गुण रोग—रसायन बल्य उत्तेजक सर पाचन वायुरोग
उदराध्मान विसूचिका अजीर्ण अग्निमान्द्य
नाशक है।
योग—रसोनाष्टकवटी।

राजकर्कटी CUCURBITA MAXINA

नाम—राजकर्कटी, कर्कारुः, गुड़योगफला (काशीफलम्)
व्य० अंग--बीज; प्र० अव० आन्त्र

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रसदोष—मधुररस शीतवीर्य मधुरविपाकी पित्तहर; बीज : उष्णवीर्य कटुविपाकी उदरकृमिघ्न।

गुण-रोग—ग्राही, विष्टम्भकारक, गुरु, रक्तपित्तशामक, बीज : उदरकृमिहर हैं।

रास्ना OPHIORRHIZA MUNGOS ?

नाम—रास्ना सुवहा एलापर्णी सुरसा

व्य० अंग—पत्र; प्र० अव० वात संस्थान

रसदोष—तिक्तरस उष्णवीर्य कटुविपाकी वातकफहर

गुण—आमपाचन वातशामक शोथघ्न; आमवात शोथ वातरक्त वातरोग ज्वर तथा शीतहर है।

योग—रास्नासप्तक क्वाथादि।

रोहीतक TEHOMA UNDULATA

नाम—रोहीतक दाड़िमपुष्पक : प्लीहघाती

व्य० अङ्ग—त्वचा; प्रभा० अव० प्लीहा—यकृत्

रसदोष—कषाय कटुरस शीतवीर्य कटुविपाकी कफ पित्तहर।

गुण-रोग—सर रक्तशोधक स्निग्ध, यकृत् प्लीहावृद्धि गुल्म, उदररोग, कामला, पाण्डुनाशक है।

योग—रोहीतकारिष्ट।

लवंग MYRTUS CORYOPHYLLEA

नाम—लवंगं देवकुसुमं श्रीप्रसूनकम्।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

व्य० अंग—पुष्प, तैल; प्रभा० अव० महास्रोतस् ।

रसदोष—कटुतिक्त रस, उष्णवीर्य मधुरविपाकी वात कफ पित्तहर ।

गुणरोग—पाचन अनुलोमन कृमिहर वमन शामक उदरशूल आध्मान कास हिक्काहर तथा दन्त शूल नाशक है ।

योग—लवंगादि वटी : कासे; देवकुसुमादि वटी : फिरंगे । लवंग तैलः अनुलोमक कृमिघ्न दन्तशूल शामक ।

लाक्षा CUCUS LAC

नाम—-लाक्षा, पलंकषा, जतुः, वृक्षामयः ।

रसदोष—कषाय तिक्तरस अनुष्ण कटुविपाकी कफपित्तहर

गुण-रोग—ग्राही रक्तस्तम्भक वर्ण्य स्निग्ध लघु, उरःक्षत, आन्तरिक रक्तस्राव हिक्का रक्तपित्त क्षयजकास रक्तप्रदर नाशक ।

योग—लाक्षादि तैल ।

लोध्र SYMPLECOS CRATAEJOIDES

नाम—(१) लोध्र सावर (२) पट्टिका लोध्र ।

व्य० अंग—त्वचा, प्रभा० अव० आन्त्र-चक्षु

रसदोष—कषायरस शीतवीर्य कटुविपाकी कफपित्त शामक ।

गुणरोग—संग्राही रक्तस्तम्भक चक्षुष्य रक्तपित्त रक्तार्श अतीसार शोथशामक तथा नेत्ररोगहर है । गर्भाशय पौष्टिक और प्रदरघ्न है ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

योग—लोध्रासव।

वचा ACORUS CALAMUS

नाम—वचा षड्ग्रन्था शतपर्विका गोलोमी
व्य० अंग—मूल; प्रभा० अव० मस्तिष्क स्वर
रसदोष—तिक्त कटुरस उष्णवीर्य मधुरविपाकी वातकफहर
गुणरोग—मूत्रल सर मेध्य दीपन स्वरभेद, उदरशूल आध्मान विबन्ध, आमदोष अपस्मार स्मृतिनाश हर है।
वक्तव्य—श्वेतारुण भेदेन द्विधा वचा। महती मात्रा में वामक है।

महाभरी वचा ALPINIA GALANGA
(वचा भेद १)

नाम—सुगन्धा उग्रगन्धा महाभरी वचा (कुलिञ्जन)
व्य० अङ्ग—मूल; प्रभा० अव० स्वर मुख
रसदोष—कटुतिक्त रस उष्णवीर्य कटुविपाकी वातकफघ्न
गुण—स्वर्य सर रुचिकर दीपन स्वरभेद कण्ठशोथ प्रतिश्याय कफकासशामक, मुख कण्ठ शोधक है

द्वीपान्तर वचा SMILAX CHINA
(वचा भेद २)

नाम—द्वीपान्तरवचा, चोपचीनी।
व्य० अङ्ग—मूल; प्रभा० अव० मूत्रमार्ग
रसदोष—तिक्त कटुरस उष्णवीर्य मधुरविपाकी वात कफहर

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गुणरोग—मलमूत्र शोधक दीपन पौष्टिक फिरंगरोग, वात रोग विबन्ध उदराध्मान नाशक है

विष ACONITUM FEROX

नाम—विष वत्सनाभ शृंगी

व्य० अङ्ग—मूल; प्रभा० अव० त्वचा-हृदय

रसदोष—मधुर कटुरस उष्णवीर्य कटुविपाकी वातकफहर

गुणरोग—तीक्ष्ण स्वेदल क्षोभक मूत्रल, ज्वर प्रतिश्याय, फुफ्फुसादि शोथमें तथा हृदयकी गतिकी तीव्रता को शान्त करता है।

शोधन—गोदुग्ध या गोमूत्र में दोलायन्त्र द्वारा स्वेदन।

योग—मृत्युंजय पंचामृत कफकेतु आदि अनेक रस।

वंशलोचना

नाम—वंशरोचना शुभा तुगाक्षीरी

प्रभा० अव०—फुफ्फुस

रसदोष—मधुर कषाय रस शीतवीर्य मधुर विपाकी वात पित्तहर

गुणदोष—बृंहण बल्य कासनाशन रक्तपित्त दाह ज्वर क्षयजकास श्वास नाशक

योग—सितोपलादि, तालीसादि चूर्ण, च्यवनप्राश।

वरुण। CRATEAVA RELIGIOSA

नाम—वरुण कुमारक त्रिपर्णः बिल्वपत्रः

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

व्य० अंग—त्वचा पुष्प फल; प्रभा० अव० वृक्क
रसदोष—तिक्त कटु मधुर रस उष्णवीर्य कटुविपाकी वात कफघ्न ।
गुणरोग—रक्तशोधक मूत्रल भेदन दीपन अश्मरि मूत्रकृच्छ्र गुल्म वातरक्त शामक है; पुष्प : ग्राही; फलः सर रक्तशोधक मधुररस त्रिपाकी त्रिदोषहर त्वचाः अन्तर्विद्रधिपाचक ।
योग—वरुणादि क्वाथ, वरुणादि गुड़, राजयक्ष्मणि

वाकुची PSORALEA CORYLIFOLIA

नाम—वाकुची अवल्गुजा कृष्णफला
व्य० अङ्ग—बीज, तैल; प्रभा० अव० त्वचा
रसदोष—फल : कटुतिक्त रस उष्णवीर्य कटुविपाकी वात कफहर; पंचांग : तिक्त कषाय शीतवीर्य सर रक्त पित्तहर ।
गुण रोग—कुष्ठघ्न (त्वचा रोगहर) दद्रु पामा कण्डु श्वित्र है । श्वित्रमें तैलका त्वचामें सूचीवेध किया जाता है ।

वासा ADHATODA VASSICA

नाम—वासक भिषक्माता सिंहिका आट्रुषक ।
व्य० अङ्ग—पंचांग; प्रभा० अव० फुफ्फुस
रसदोष—तिक्त कषायरस शीतवीर्य कटुविपाकी कफपित्तहर वातकारक

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गुण रोग—स्वर्य कफच्छेदक रक्तपित्त कास श्वास ज्वर स्वर-
भेद नाशक है; पुष्प : कटुतिक्त शीतकास श्वास
रक्तस्राव शामक।

योग—वासावलेह : श्वास कासयोः

विडंग EMBELICA RIBES

नाम—विडङ्गः, कृमिघ्नः, चित्रतण्डुल, वातारिः।

व्य० अङ्ग—बीज; प्रभा० अव० आन्त्र।

रसदोष—कटुरस उष्णवीर्य कटुविपाकी वातकफघ्न।

गुण—लघु उदरकृमिघ्न दीपन अनुलोमन

रोग—उदराध्मान अग्निमान्द्य विबन्ध वातविष्टम्भ उदरकृमि
नाशक है

योग—विडंगारिष्ट

विभीतकः TERMINALIA BELERICA

नाम—विभीतकः अक्षः कर्षफलम्।

व्य० अंग—फल; प्रभा० अव० सर्वशरीर, आन्त्र, स्वर

रसादि—कषायरस उष्णवीर्य मधुरविपाकी कफपित्तहर

गुण—भेदन स्वर्य केश्य चक्षुष्य लघु रुक्ष रसायन

रोग—कास स्वरभेद नेत्रशोथ शामक, केशवर्धक

विदारीकन्द IPOMEA DIGITATA

नाम—विदारीकन्द कन्दवल्ली और क्षीरविदारी शुक्ल-
कन्दा, यह दो भेद हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

व्य० अंग—कन्द; प्रभा० अव० प्रजनन
रसदोष—मधुरतिक्त रस शीतवीर्य मधुरविपाकी वातपित्तघ्न
गुण—वृष्य मूत्रल स्वर्य स्तन्यवर्धक पौष्टिक ।
रोग—रक्तपित्त दाह वीर्यक्षीणता नाशक है ।

शटी CURCUMA ZEDOARINA

नाम—शटी कर्चूर द्राविड़ गन्धशटी
व्य० अंग—कन्द; प्रभा० अव० महास्रोतस् फुफ्फुस
रसदोष—तिक्त कटुरस उष्णवीर्य कटुविपाकी वातकफहर
गुण—ग्राही दीपन कफच्छेदक स्वर्य ।
रोग—कफजकास मुखरोग अर्श अजीर्ण गुल्म फुफ्फुसशोथ (न्यूमोनियादौ) शामक ।
योग—शट्यादि क्वाथ (चरके)

शतपत्री ROSA CENTIFOLIA

नाम—शतपत्री कर्णिका चारुकेसरा (गुलाब)
व्य० अंग—पुष्प पत्र; प्रभा० अव० आन्त्र
रसदोष—मधुरकषायतिक्तरस शीतवीर्य मधुरविपाकी त्रिदोषहर
गुण—सर स्निग्ध वर्ण्य शीतल
रोग—विबन्ध रक्तपित्त, ज्वरमें दाह मुखपाक, रक्तविकार नाशक

शंखपुष्पी CONSCORA DECUSSATA

नाम—शंखपुष्पी मांगल्यकुसुमा मेध्या कम्बुपुष्पी

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

व्य० अंग—पंचाग; प्रभा० अव० मस्तिष्क
रसदोष—तिक्तकटुकषायरस अनुष्ण मधुरविपाकी वातहर
गुण—मेध्य स्वर्य सर रसायन
रोग—अपस्मार स्मृतिदौर्बल्य विषहर

शतावरी ASPARAGUS RACEMOSUS

नाम—शतावरी भीरु वरी सहस्रवीर्या
व्य० अंग—मूल पत्र प्रभा० अव० प्रजननांग, सर्वशरीर
रसदोष—मधुरतिक्तरस शीतवीर्य मधुरविपाकी वातपित्तहर
गुण—वृष्य पौष्टिक बल्य स्तन्यवर्धक सर
रोग—वीर्यक्षीणता पित्तवृद्धि रक्तपित्त मूत्रकृच्छ्रशामक;
पत्र : तिक्त त्रिदोषघ्न अर्श नाशक।

योग—शतावर्यादि चूर्ण

शरपुंखा TEPHROSIA PURPUREA

नाम—शरपुंखा प्लीहशत्रुः श्वेतपुंखा
व्य० अ० पंचाग, क्षार; प्र० अव० यकृत् प्लीहा
रसदोष—तिक्त कषाय कटु रस उष्णवीर्य कटुविपाकी वात कफहर
गुण-रोग—कृमिहर उदररोगनाशक कासहर लघु यकृत् प्लीहवृद्धि गुल्म ज्वर और कास नाशक है।

शालपर्णी DESMODIUM GANGESTICUM

नाम—शालपर्णी त्रिपर्णी गुहा विदारीगन्धा

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

व्य० अंग—पंचांग; प्रभा० अव० सर्वशरीर
रसदोष—तिक्त मधुर रस, उष्णवीर्य, मधुरविपाकी त्रिदोषहर
गुण रोग—बृंहण, रसायन, ज्वर, प्रतिश्याय, क्षतकास, अतिसार, शोथ शामक है
योग—दशमूल क्वाथादि।

शाल्मली BOMBAX MALABARICUM

नाम—शाल्मली: रक्तपुष्पा, स्थिरायु, तूलिनी
व्य० अंग—निर्यास, मूल, पुष्प कंटक; प्र० अव० आन्त्र
रसदोष—मधुर कषायरस, शीतवीर्य, मधुर विपाकी वात पित्तहर
गुण रोग-(१)बालमूल: पिच्छिल, वृष्य, ग्राही, वीर्यक्षीणता अतीसार प्रवाहिका रक्तपित्तहर। सिम्बल मूसलीति लोके (२) कंटक–व्यंग नाशक (३) पुष्प: ग्राही रक्तस्तम्भक अतीसार रक्तप्रदरादौ। (४) निर्यास-मोचरस : ग्राही, मधुर कषाय रस, स्निग्ध, प्रवाहिका, अतीसार दाह, रक्तपित्त नाशक।

शिग्रु: MORINGA PTEROSPERMUM

नाम—शिग्रु: मुरंगी, शोभांजन: (भेद श्वेत-नील-रक्त)
व्य० अंग—पंचांग, प्र० अव० महास्रोतस्।
रसदोष—मधुर कटु रस उष्णवीर्य कटुविपाकी वातकफघ्न
गुणरोग—तीक्ष्ण, पाचक, कृमिहर, अनुलोमन, सर रक्त

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पित्त प्रकोपक, आन्तरिक-विद्रधिः, अपची गुल्म आध्मान रजःकृच्छ्रता नाशक है।

वक्तव्य—श्वेतशिग्रु बीजको श्वेतमरिच कहते हैं। यह नेत्र रोगों-वर्त्मार्श आदिमें प्रयुक्त होते हैं

शिरीष

नाम—शिरीष, कपीतन, शुकतरुः मृदुपुष्पः

व्य० अंग—त्वचा बीज; प्र० अव० त्वचा

रसदोष—मधुरतिक्त कषाय अनुष्ण, कटुविपाकी, त्रिदोषहर

गुण रोग—विषघ्न त्वचारोग दद्रु पामा नाशक, शोथ शामक; बीज: ग्राही स्तम्भक वीर्यनिर्बलतामें

योग—दशांगलेप : वाह्य प्रयोगार्थ।

शुंठी ZINGIBER OFFICINALIS

नाम—शुण्ठी, विश्वा, नागरम्, शृंगवेरं, महौषधम्।

व्य० अंग—कन्द; प्रभा० अव० महास्रोतस्

रसदोष—कटुरस उष्णवीर्य मधुरविपाकी वातकफहर।

गुण—पाचन, लघु स्वर्य शोषक संग्राहि (तोयांश शोषणात्) वमन अजीर्ण, मुख कण्ठशोथ, उदराध्मान, शोफ, आमवात विबन्ध अतिसार उदरशूल शामक।

वक्तव्य—आर्द्र कन्द को आर्द्रक, शृंगवेर नाम दिया गया है। भेदक गुरु दीपन पाचन कण्ठ शोधक है

शृंगी

नाम—शृंगी, कर्कटशृंगी कुलीरविषाणिका

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

व्य० अंग—कृमिज कोष; प्रभा० अव० फुफ्फुस
रसदोष—तिक्त कषाय रस उष्णवीर्य कटुविपाकी वातकफहर
गुण रोग—कफच्छेदक फुफ्फुस-शोथशामक पाचन, वमन कास श्वास, हिक्का अतीसार क्षयज कासहर।
योग—शृंग्यादि चूर्ण, कास श्वास न्यूमोनियादौ।

श्योनाक

नाम—श्योनाकः टुण्टुकः, दीर्घवृन्तः, अरलुः
व्य० अंग—त्वचा; प्रभा० अव० सर्वशरीर
रसदोष—तिक्त कषाय रस शीतवीर्य कटुविपाकी त्रिदोषहर
गुणरोग—वस्तिरोगहर, ग्राहि, स्वेदल आम पाचन, सन्निपात ज्वर, ज्वरातीसार कास आमवातघ्न।

श्लेष्मातक CORDYA MYXA

नाम—श्लेष्मातकः, कर्बुदारः, शैलूषः पिच्छिलः
व्य० अंग—फल; प्रभा० अव० फुफ्फुस
रसदोष—मधुर कषाय रस शीतवीर्य कटुविपाकी पित्तशामक
गुण रोग—पिच्छिल ग्राही कफस्रावक, स्निग्ध, वातिककास श्वास प्रवाहिका रक्तपित्त दाह पित्त रोग नाशक।

सप्तपर्ण ALSTONIA SCHOLARIS

नाम—सप्तपर्ण, शारदः, विशाल त्वक्
व्य० अंग—त्वचा, घनसत्त्व; प्र० अव० सर्वशरीर, त्वचा
रसदोष—तिक्त कषाय रस, उष्णवीर्य, कटुविपाकी त्रिदोषहर
गुण—तापहर, स्निग्ध सर त्वचारोग नाशक दीपन

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रोग—विषम ज्वर आमवात, त्वचारोग नाशक
योग—सप्तपर्ण वटी, विषम ज्वरे ।

सर्पगन्धा RANWOLFIA SERPENTINA

नाम—सर्पगन्धा (नाकुली) चन्द्रभागा
व्य० अंग—मूलकाष्ठ; प्र० अव० वातसंस्थान, मस्तिष्क
रसदोष—कटुतिक्त रस उष्णवीर्य कटुविपाकी कफपित्तहर
गुण—रुक्षा, निद्राकरा, रक्तभाराधिक्यहरा मेध्या । अपस्मार उन्माद रक्तभाराधिक्य अनिद्रा नाशक है । रुक्ष होनेसे इसे दूध या बादाम तैलके साथ देना चाहिए ।

सारिवा HEMIDESMUS INDICUS

नाम—सारिवा, श्यामा, शारदी अनन्ता (श्वेत कृष्ण भेदेन द्विधा)
व्य० अंग—मूल; प्र० अव० रक्त ।
रसदोष—मधुर तिक्त रस शीतवीर्य मधुर विपाकी त्रिदोषहर
गुण—रक्त शोधन रसायन मूत्रल स्वेदल संग्राही रक्तपित्ति रक्तदुष्टि त्वचारोग आमवात ज्वर अतिसार प्रदर शामक है । अनन्ता उत्तम है ।
योग—सारिवाद्यासव, सारिवाद्यरिष्ट ।

सुवर्णपत्री CASSEA SENNA

नाम—स्वर्णपत्री, महाजालनिका विभाण्डी चर्मरंगा

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तद्भेदो मार्कण्डी मार्कण्डिका भूमिचरी।
(म० भुई तरवड़; गु० सोनामक्की इतिनाम)

व्य० अंग—पत्र फल; प्र० अव० आन्त्र

रसदोष---तिक्त कषाय रस, उष्णवीर्य कटु विपाकी कफ पित्तहरा

गुण रोग---रेचक अनुलोमक उदराध्मान उदर-शूल गुल्म उदर-रोग विष कंडू नाशक है

सूरणम् AMORPHOPHALLUS COMPANULATUS

नाम---सूरणः शूरणः अर्शोघ्नः वातारिः

व्य० अंग—कन्द; प्र० अव० आन्त्र

रसदोष—कटुकषायरस उष्णवीर्य कटुविपाकी वातकफघ्न।

गुण-रोग—दीपन पाचन अनुलोमन लघु सर अर्श गुल्म कफरोग स्थौल्य नाशक है। वन्य शूरणं अर्शसां विशेषेण हितः।

सेहुंड : EMPHORBIA NERIIFOLIA

नाम—सेहुंडः स्नुही, वज्रः सुधा

व्य० अंग—क्षीर, पत्र; प्र० अव० आन्त्र

रसदोष—तिक्तरस उष्णवीर्य कटुविपाकी कफ पित्तहर
क्षीर : कटु उष्णवीर्य कटुविपाकी कफपित्तहर स्निग्ध लघु है।

गुणरोग—क्षीर : तीक्ष्णविरेचन; पत्र : व्रणपाचक गुल्म कुष्ठ उदररोग विष आध्मान उदरशूल शामक

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सोमराजी VERNONIA ANTHELMINTICA

नाम—सोमराजी (कट्टुजीरक, कालीजीरी इतिलोके)
व्य० अंग—बीज; प्र० अव० त्वचा
रसदोष—बीज : तिक्त शीतवीर्य कटुविपाकी त्रिदोषहर
गुण—रक्तशोधक त्वचारोगनाशक कृमिघ्न शोथशामक
रोग—गंडमाला ग्रन्थिशोथ शामक, दद्रु पामा नाशक, रक्त दुष्टिहर तथा उदर कृमिहर है
योग—सोमराजी तैल, बृहत् सोमराजी तैल ।

सोम EPHEDRA VULGARIS

नाम—सोमलता सोमवल्ली यज्ञनेता द्विजप्रिया
व्य० अंग—पंचांग; प्र० अव० मस्तिष्क, हृदय
रस—तिक्त मधुर कटु रस शीतवीर्य कटुविपाकी त्रिदोषघ्न
गुण—श्वास वेगहर, रक्तभारवर्धक
रोग—श्वासवेग, रक्तभारन्यूनता

हपुषा JUNIPERUS COMMUNIS

नाम—हपुषा प्लीहहन्त्री ध्वांक्षनाशिनी अश्वत्थफला ।
व्य० अंग—फल; प्र० अव० प्लीहायकृत् ।
रसदोष—तिक्त कटुरस उष्णवीर्य कटुविपाकी त्रिदोषहर
गुण रोग—दीपन गुरु अर्श गुल्म ग्रहणी तथा यकृत्प्लीहा वृद्धि नाशक है ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

हरिद्रा CURCUMA LONGA

नाम—हरिद्रा (निशा) पीता वरवर्णिनी।

भेद—१ हरिद्रा २ आम्रगन्धिहरिद्रा ३ अरण्यहरिद्रा ४ दारुहरिद्रा । प्रथमास्त्रयः समानगुणाः चतुर्थी च भिन्नगुणा

व्य० अङ्ग—कन्द; प्रभा० अव० त्वचा यकृत्

रसदोष—प्रथम तीन : कटुतिक्त रस उष्णवीर्य कटुविपाकी कफपित्तहर; आ० ग० हरिद्रा : मधुर तिक्तरस शीतवीर्य मधुरविपाकी पित्त शामक वातल एवं त्वचारोग (कण्डु) नाशक है

गुण रोग—उष्णा पाचन दीपन यकृदुत्तेजक रक्तशोधक वर्ण्य त्वचारोग (कण्डु आदि) कामला, पाण्डु प्रमेह रक्तदुष्टि वातरक्त शीतपित्तशामक है।

योग—हरिद्राखण्ड।

हंसपदी

नाम—हंसपदी, त्रिपादी, कीटमारी

व्य० अंग—पंचांग, सत्व; प्रभा० अव० त्वचा सर्वशरीर

रसदोष—शीतवीर्य कटुविपाकी पित्तशामक

गुण रोग—व्रण रोपक, रक्तपित्त, दाह अतीसार लूता विष नाशक तथा उदर कृमिघ्न है।

हरीतकी TERMINALIA CHEBULA

नाम—हरीतकी विजया अभया अमृता

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

भेद—विजया रोहिणी पूतना अमृता अभया जीवन्ती चेतकी; विजया सर्वप्रधान

व्य० अंग—फल, प्रभा० अव० अन्त्र सर्वशरीर

गुण प्रयोगादि—कषायरस प्रधान अन्य मधुर अम्लतिक्त कटु, उष्णवीर्य मधुरविपाकी त्रिदोषशामक

वि० गुण—रुक्ष दीपन बृंहण अनुलोमन रेचक चक्षुष्य आयुष्य।

रोग—प्रमेह, अर्श, उदररोग, ग्रहणी, विबन्ध विषमज्वर छर्दि हिक्का अतीसार कामलादि नाशक।

योग—त्रिफला; मात्रा : ४ माशा से १ तोला तक

हिंगुः FERULA FOETIDA

नाम—हिंगुः, जतुकं, सहस्रवेधि, रामठम्

व्य० अंग—निर्यास; प्रभा० अव० महास्रोतस्।

रसदोष—कटुरस उष्णावीर्य कटुविपाकी वातकफहर पित्तल

गुण—अनुलोमन, सर अग्निदीपन कफच्छेदक, रजःस्रावक उदरशूल, आध्मान, विष्टम्भ, उदरकृमि, गुल्म नाशक है

योग—हिंग्वाष्टक चूर्ण, हिंग्वादि चूर्ण, हिंगु वारुणी सार

हिंगुपत्री GARDINIA GUMMIFERA

नाम—हिंगुपत्री, पृथ्वीका, पिण्डा, वेणुपत्री

व्य० अंग—निर्यास, प्रभा० अव० महास्रोतस् [आन्त्र]

रसदोष—कटुतिक्त रस उष्णवीर्य कटुविपाकी, वात कफघ्न

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गुण रोग—तीक्ष्ण अनुलोमन आमपाचन सर विबन्ध अरुचि, अर्श आध्मान गुल्म प्लीहावृद्धि अजीर्ण शामक है। हिंगु के स्थान पर प्रयोग किया जा सकता है।

ह्रीबेर VALERDANA WALLICHI

नाम—ह्रीबेर बाल उदीच्या अम्बुनाम

द्य०अंग—मूल; प्रभा० अव० वृक्ष

रसदोष—तिक्तरस शीतवीर्य कटुविपाकी पित्तकफघ्न।

गुण रोग--मूत्रल तापहर रक्तशोधक दीपन पाचन ज्वरातिसार वमन तृष्णा दाह वीसर्प रक्तपित्त शामक है।

———

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

परिशिष्ट १

अर्भक CLAVICEPS PURPUREA

नाम—अर्भकं अर्गट कृमिज ।

व्य० अङ्ग—कृमिकोष; प्रभा० अव० गर्भाशय

रसदोष—किञ्चित्तिक्त रस, उष्णवीर्य, कटुविपाकी कफघ्न वातल ।

गुण—गर्भाशय रसायन उत्तेजक संकोचक रक्तस्रावरोधक

प्रयोग—यह गर्भाशयगत वात को पुष्ट करके गर्भ की मांस पेशियों की संकोचविकास गति को नियमित करता तथा बढ़ाता है और गर्भाशय की मांसपेशियों को संकुचित करता है। इससे प्रसवानन्तर रक्तस्राव बन्द होता है तथा प्रसव की क्रिया भी शीघ्र होती है। मांशपेशियों की गति से प्रसव वेदना बढ़ती है और बच्चा शीघ्र बाहर आता है। अतः गर्भाशय का मुख विकसित हो जाने पर विलम्ब प्रसूति में इसका प्रयोग किया जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

योग—तरल सार; मात्रा १० से २० बिन्दु

ईषद्गोलम् PLANTAGO OVATA

नाम—ईषद्गोलम्, ईसवगोल

व्य० अंग—बीज, प्रभा० अव० आन्त्र

रसदोष—मधुररस शीतवीर्य मधुरविपाकी पित्तहर

गुण रोग—पिच्छिल सर स्नेहन प्रवाहिका आन्त्रक्षत तथा अतीसार शामक है।

योग—चूर्ण; मात्रा ६ माशा से १ तोला तक।

किंकिणी CINCHONA CALISAYA

नाम—किंकिणी, रक्तत्वचा, सिन्कोना,

व्य० अङ्ग—त्वचा, सत्व; प्रभा० अव० सर्वशरीर

रसदोष----तिक्तरस उष्णवीर्य कटुविपाकी वातकफघ्न

गुण—स्थानीयवेदनाहर, तापहर अग्निवर्धक शिरःशूल तथा रजःकृच्छ्रता और विषमज्वर नाशक है।

योग — घनसत्व; मात्रा १ से ४ रत्ती तक
तरलसार; मात्रा ५ से १५ रत्ती तक
सुरासार; मात्रा ३० से ६० बिन्दु तक
सत्व [कुनीन] मात्रा १ से ४ रत्ती तक

पिशाच कार्पासी ABROMA AUGUSTA

नाम—पिशाचकार्पासी ओलटकम्बल

व्य० अंग—मूलत्वक्; प्रभा० अव० गर्भाशय

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रसदोष—किञ्चित् कटुरस उष्णवीर्य कटुविपाकी वातकफघ्न
गुण रोग—गर्भाशय रसायन तथा शोधक रजःकृच्छ्रता रजोरोध नाशक।
योग—चूर्ण : मात्रा ३ माशा, क्वाथ या फांट ४-५ तोला।

वनपुष्पकम् VIOLA ODORATA

नाम—वनपुष्पकम् कामपुष्पकम् बनफशा
व्य० अंग—पत्र तथा पंचांग; प्रभा० अव० कण्ठ नासा
रसदोष—मधुर कषाय रस शीतवीर्य मधुरविपाकी त्रिदोषहर
गुण—कफनिष्कासक शोथशामक सर स्वर्य
रोग—कास स्वरभेद गलशोथ प्रतिश्याय
मात्रा—क्वाथ २ से ५ तोला तक।

सूची ATROPA BELLADONA

नाम--सूची, विषकनक, बेलाडोना
व्य० अंग—पत्र, सत्व; प्रभा० अव० वातसंस्थान
रसदोष—तिक्तरस उष्णवीर्य कटुविपाकी वातकफहर
गुण—स्रावशोषक वेदना तथा वेगहर, शोथशामक स्तन्य स्वेद अवरोधक
रोग----श्वास कास शोथ वेदना शामक है।
योग---सुरासार : मात्रा : ५ से १५ बिन्दु तक
वक्तव्य----सूची सत्व एट्रोपीन कहाता है।

शान्तनम् ARTENUSIA CINA

नाम----शान्तनम्, सेण्टोनियम, ब्रध्नहरम्

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

व्य० अंग—सत्त्व; प्रभा० अव० आन्त्र
रसदोष---किञ्चित्तिक्त उष्णवीर्य कटुविपाकी कफहा
गुण रोग---व्रभ्रकृमिहर, उदरके व्रभ्र कृमि (Round worm) को यह रेचन द्वारा बाहर निकाल देता है।
योग---सत्त्व : मात्रा १/२ से २ गुञ्जा तक

सुरंजनम् CALCHICUM AUTUMNALE

नाम---सुरंजनम्, सुरंजा, काल्चिकम्
व्य०अंग—काण्ड (कन्द); प्रभा० अव० सर्वशरीर
रसदोष---तिक्तरस शीतवीर्य कटुविपाकी त्रिदोषहर
गुण रोग---वामक रेचक वातरक्त नाशक है
योग-- १ तरलसार : मात्रा २ से ५ बिन्दु तक
२ सुरासार : मात्रा ५ से १५ बिन्दु तक

हृत्पत्री DIGITALIS PURPUREA

नाम—हृत्पत्री, डिजिटेलिस, शृगालविन्ना
व्य० अङ्ग—पत्र तथा सत्त्व, प्रभा० अव० हृदय
रसदोष—तिक्तरस शीतवीर्य कटुविपाकी वातपित्तहर
गुण-प्रयोग—मूत्रल हृद्य हृदयकी संकोच शक्तिको बढ़ाता है जिससे रक्तप्रक्षेपण सबल होजाता है। साथ ही हृदय के विकास का समय अधिक बढ़ाता है। जिससे रक्त पूर्णतया हृदय में आजाता है। गति संख्या भी कम करता है। इससे हृदय की मांस पेशियों को विश्राम मिलता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रोग—हृदय विस्तृति हृदयनिर्बलता आर्द्रशोथ और जलोदर में उत्तम है।

योग—१ पत्र चूर्ण : मात्रा १/४ से १ गुञ्जा भृशम्
२ से ५ गुञ्जा एकधैव
२ सुरासार : मात्रा ५ से १५ बिन्दु भृशम्
२० से ६० बिन्दु एकधैव

— — —

परिशिष्ट २

विषद्रव्यों का शोधन तथा मात्रा

वत्सनाभ Aconitum

शोधन—विष को चणक सम खण्डशः करें पुनः पोट्टली में शिथिल बाँध कर गोदुग्ध में दो याम तक दोलायन्त्र में स्वेदन करें।

मात्रा—१/१६ से १/८ गुंजा पर्यन्त।

सूचना—तीक्ष्णता के कारण बाल वृद्ध, गर्भिणी, अतिक्षीण, यक्ष्मा, हृदयदुर्बलता, पित्तविकारयुक्त रोगी में प्रयुक्त न करे

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

योग—१ मृत्युंजयरस मात्रा १ से २ रत्ती ज्वरे
२ पंचामृत रस मात्रा १ रत्ती तीव्रज्वरे
३ आनन्द भैरव मात्रा १ से २ गुंजा ज्वरातीसारे
४ कफकेतू रस मात्रा १ से २ गुंजा वातकफज्वरे प्रतिश्याये

विषतिदुन्क कुपीलुः

शोधन—कारस्कर के बीजों को पोट्टली में बांध कर गोदुग्ध में दो याम तक दोलायन्त्रमें स्वेदन करलें।

मात्रा—१/४ से १ गुंजा पर्यन्त

योग—१ अग्नितुण्डी वटी मात्रा १ से २ रत्ती अग्निमान्द्य
२ लक्ष्मीविलासरस मात्रा १ से २ रत्ती पौष्टिक
३ विषमुष्टीवटी ,, ,, अग्निवर्धक
४ विषतिन्दुकतैल अभ्यंग पक्षाघातादि

अहिफेन OPIUM

निर्मलीकरण—बाजार में मिश्रित अहिफेन मिलता है, अतः उसे शुद्ध जल में विलीन कर वस्त्र से छान-कर और गोदुग्ध में मिला कर मन्दाग्नि पर पाक करें।

शोधन—आर्द्रक स्वरस में सात बार भावना देना।

मात्रा—१/४ से १ गुंजा पर्यन्त

सूचना—बालवृद्ध, मधुमेही, विसूचिका, शीतांगावस्था, वृक्क

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust.

शोथ, सकफकासमें अहिफेन का प्रयोग न करें

योग—१ वेदनान्तक रस मात्रा २ रत्ती वेदनाशामक
२ निद्रोदय रस " " अनिद्राहर
३ अहिफेनासव ५ से १५ बिन्दु तक अतीसार शूलादौ।

जयपाल COLTON SUDS

शोधन—त्वग् रहित जयपाल बीजोंको वत्सनाभवत् गोदुग्ध में स्वेदन करे। ततः पीसकर नूतन घट खर्पर पर लेप करे अथवा मसीशोषकों (Blotting Papers) के मध्य में दबाकर रक्खें। इससे जयपालका तैल निकल जाता है और वह तीक्ष्णता रहित होजाता है।

मात्रा--१/८ से १/२ गुंजा पर्यन्त। शीतल जल से दें।

योग---१ इच्छाभेदी रस, मात्रा २ रत्ती विबन्ध
२ अश्वकंचुकी, मात्रा २ रत्ती "
३ ज्वरकेसरीरस, मात्रा २ रत्ती सामे सविबन्धे ज्वरे

धत्तूर DHANTTURA ALHA

शोधन---गोदुग्ध में वत्सनाभवत् स्वेदन कर उष्ण जल से धोलें।

मात्रा- --बीज १/४ से १/२ गुंजा पर्यन्त पत्र, १/२ से १॥ गुंजा तक।

योग---१ प्रलापान्तक रस मात्रा १ रत्ती सन्निपात में

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

२ नारदीय महालक्ष्मी विलास : शिरः शूलमें
३ कनकासव मात्रा १ तोला से २ तोला श्वासमें

भंगा शोधन INDIAN HEMP

शोधन----विजया के शुष्क पत्रोंको जलमें भिगो दे। कुछ समय पश्चात् उन्हें निष्पिडित कर धूपमें सुखा ले। ततः घीमें भर्जन (भून ले) कर लें।

मात्रा---२ से ४ गुञ्जा पर्यन्त

गुञ्जा-रक्तिका

शोधन----नूतन गुंजाओंका चूर्ण कर मोटे वस्त्रमें बाँधकर दो याम तक दोलायन्त्रमें स्वेदन करें।

मात्रा---बीज १/२ से १।। गुञ्जा पर्यन्त

योग----गुंजाद्यं तैलं त्वचारोग नाशक

भल्लातकं, अरुष्करम्

शोधन---नारिकेल जलमें दोलायन्त्र में भल्लातक फलों को एक याम तक स्वेदन करे। ऊपर आए तैलको फेंक देवे।

मात्रा----१ से ३ गुंजा पर्यन्त

हिंगु

शोधन----हींग को शुद्ध घी में भर्जन कर लेना चाहिये

मात्रा----२ से ४ गुन्जा तक

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गुग्गुलु

शोधन---चतुर्गुण दुग्धमें गुग्गुलु का स्वेदन करें। द्रवित हो जाने पर वस्त्रसे छान ले। वस्त्रपूत तरलको मन्दाग्नि पर घन कर लें।

परिशिष्ट ३

रोगानुसार वर्गीकरण

ज्वर—विष, त्रायमाणा अतिविषा गुडुची पर्पट सप्तपर्ण करंज कालमेघ स्योनाक पटोल किराततिक्त

अतीसार—मोचरस कुटज विल्वमज्जा पाठा मुस्तक शुंठी धान्यक

ज्वरातीसार—अतिविषा मुस्तक इन्द्रयव चित्रक पटोल पिप्पली

अर्श, रक्तार्श—कुटज नागकेसर रसांजन कृष्णातिल देवदाली वातकफार्श-भल्लातक चित्रक हिंगु त्रिकटु हरीतकी दन्ती

संग्रहणी—मोचरस चित्रक शुण्ठी पिप्पली भल्लातक अजमोदा जीरक हपुषादि

अग्निमान्द्य—त्रिकटु चतुर्जातक हरिद्रा जीरक चित्रक अजमोद

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विसूचिका—हिंगु कपूर पुदिन धान्यक लशुन अर्क लवंग

कृमिरोग—पलाशबीज पारसीकयवानी काम्पिल्लक बिडंग शिग्रु

तृष्णादाह—पर्पट मधुरनिम्बु दाड़िम उशीर कमल धान्यक

पाण्डु-कामला—कटुकी रसांजन अभया दन्ती कालमेघ हारिद्रा शरपुंखा।

रक्तपित्त-नासारक्तस्राव—उशीर कूष्माण्ड दूर्वा नीलोत्पल वासा मोचरस लाक्षा लोध्र

क्षत-क्षय कास—वासा लाक्षा कर्कट-शृँगी सोम धन्वयास मधुयष्टि कंटकारी

रसायन—शतावरी विदारीकन्द आमलकी वंशलोचन अश्वगन्धा गुडूची

कास—कासमर्द यष्टिमधु कोलवदरम् धन्वयास यवासा अपामार्ग तालीसपत्र शृँगी श्लेष्मातक विभीतक।

श्वास—वासा कुष्ठ पूष्करमूल शठी सोमपिप्पली कंटकारी धत्तूर बीज तथा कासोक्त औषधियां

हिक्का—कृष्णमरिचधूम्र मयूरपुच्छभस्म वादाम तैल तथा श्वास शामक औषधियाँ।

स्वरभेद—नागवेलपत्र, वचा शुण्ठी महाभरीवचा एला मधुयष्टि खदिरसत्त्व विभीतक

वमन—एला लाजा, बदरफलं निम्बु कपूर धान्यक

मूर्च्छाहर—लशुन कट्फल नस्य अपामार्ग नस्य छिक्कनी

उन्माद—शंखपुष्पी ब्राह्मी सर्पगन्धा वचा-गौरसर्षप

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अपस्मार—जटामांसी अश्वगन्धा कूष्माण्ड पंचगव्य
वात-व्याधि—रास्ना दशमूल एरण्ड जीवनीयगण लशुन
गुग्गुलु कस्तूरी निर्गुण्डी
वातरक्त—गुडूची गुग्गुलु गोक्षुरु सुरंजा सारिवा, रक्तशोधक
तथा मूत्रलद्रव्य।
आमवात—स्योनाक एरण्ड पुनर्नवा गुडूची प्रसारिणी
शुण्ठी रास्ना
उदरशूल—हिंगु यवानी लवण जीरक कपूर शुण्ठी त्रिवृत्
दन्ती पुदिन पारसीकयवानी इन्द्रायण
उदावर्त्त-आनाह—हरीतकी त्रिवृत् आरग्वध हिंगु कपूर
आध्मान—एरण्ड हिंगुपत्री, रेचक व अनुलोमक द्रव्य
गुल्म—अर्क, आनाह नाशक, अग्निदीपन तथा रेचकद्रव्य
हृदयरोग—अर्जुन कस्तूरी हृत्पत्री विषमुष्टि कपूर
मूत्रकृच्छ्र—गोक्षुरु पुनर्नवा काकमाचिका कंकोल पच
तृणमूल अश्मरि शर्करा उशीर चन्दन
पाषाणभेद वरुण
मूत्राघात—सर्व अनुलोमन द्रव्य, पलाशपुष्प कंकोल दशमूल
प्रमेह—त्रिफला देवदारु हरिद्रा लोध्र गोक्षुरु शतावरी बला
मधुमेह—आम्र-जम्बु अस्थि, कुंकुम मधुनाशिनी भल्लातक
उदर रोग—दन्ती त्रिवृत् इन्द्रायण एरण्ड स्नुही, मूत्रलद्रव्य
यकृत्प्लीहोदर—कटुकी शरपुंखा हपुषा कुमारी रोहीतक
यवतिक्ता (कालमेघ)
शोथ-विद्रधि—निगुण्डी धत्तूर तिल रास्ना शिरीष पाषाण-
भेदपत्र एरंड अर्कपत्र, अन्तः विद्रधि—वरुण

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गण्डमाला—कांचनारगुग्गुलु सारिवा मुण्डी तथा अन्य
रक्त शोधक औषधियाँ

व्रण—(शोधक-रोपक) जातिः निम्ब उदुम्बर निर्गुण्डी

भगन्दर—-गुग्गुलुः द्वीपान्तरवचा शिलाजतु ।

कुष्ठ—(त्वचा रोग) खादिर निम्ब चक्रमर्द वाकुची वृत्तकरंज
तुवरक हरिद्रा ।

शीतपित्त---कृष्णमरिच सारिवादि रक्तशोधक तथा त्रिवृत्
आदि रेचक द्रव्य ।

अम्लपित्त--वचा लवण मुलैठी, शतपुष्पा शतपत्री आदि

वीसर्प—शिरीष मुलैठी आमलकी उशीर उत्पल अनन्ता
चन्दन देवदारु किरात

इन्द्रलुप्त—धत्तूर निम्बबीज भृंगराज करंजबीजमज्जा

गुदभ्रंश---दाड़िमफलत्वक् बब्बूल चांगेरी लोध्र माचिका

मुखशोथ—खदिर शुण्ठी लवंग इरिमेद वचा कट्फल

प्रतिश्याय-पीनस---तुलसी रोहिष आर्द्रक यष्टिमधु वचा
चित्रक हरीतकी कृष्णमरिच

शिरशूल-शिरोगुरुता—कट्फलनस्य अपामार्गनस्य धत्तूर
इज्जलं पारसीकयवानिका विषमुष्टि

प्रदर रक्तः } पद्मकाष्ठ लोध्र मोचरस कांचनार असन
श्वेत } निर्यास लाक्षा धातकी पूग नागकेसर कदली
अशोक

रजःकृच्छ्रता—कार्पास चतुर्बीज कालाजाजी पिशाच कार्पासी
वंशः गर्जर बीजानि मिश्रेया

प्रसूत ज्वर—देवदारु दशमूल शुंठी जीरक किराततिक्त

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गर्भपात-स्राव-निवारक—पद्मकाष्ठ वटशुंगा उशीर कमल।
सोमरोग—प्रमेहवत्
बहुमूत्र—कृष्णतिल उदुम्बरफल वटफलादि
आन्त्रिक ज्वर—मन्थर ज्वर-द्राक्षा पर्पट उशीर मुस्तक पटोलतिक्त गुडूची
वात कफ ज्वर (Influenza)—शटी पुष्करमूल भारंगी कंटकारी शालपर्णी पृश्निपर्णी शृंगी पिप्पली गोजिह्वा कुष्ठ
सन्निपात—(कर्कोटक, न्यूमोनिया) शठी कुष्ठ पुष्करमूल कस्तूरी मधुयष्टि द्राक्षा शृँगी अपामार्ग शुंठी
विषमज्वर—कटुकी अतिविषा त्रायमाणा सप्तपर्ण वत्सनाभ दमनक लताकरंज धत्तूरबीज सिन्कोना
प्रवाहिका—कुटज पाठा एरण्डतैल मुस्तक पिप्पली
पाषाणगर्दभ—सोमराजी (कालीजीरी) शृँग धत्तूर शिरीष अर्कमूल
नेत्ररोग—त्रिफला, रसाञ्जन, लोध्र, खाखसफलत्वक्
रक्तभाराधिक्य—सर्पगन्धा, दशमूल, सोमलता
अनिद्रा—अहिफेन, भंगा, अश्वगन्धा, सर्पगन्धा
विबन्ध—त्रिवृत्, ऐन्द्री, एरण्डतैल, स्नुहीदुग्ध, आरग्वध
पूयमेह—कंकोल, चन्दन, देवदारु, गोक्षुरु, हेमक्षीरी।
दन्तोष्ठरोग—वकुल, इरिमेद, खदिर लवंगतैल, कपूर,
मस्तिष्करोग—अपस्मार-उन्माद, मेध्य वचा शंखपुष्पी ब्राह्मी सर्पगन्धा, सुवर्ण, पंचगव्य

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

परिशिष्ट ४

कर्मानुसार वर्गीकरण

अरुचि—अरतिहर—त्रिकटु त्रिजातक दाड़िम निम्बु कर्पूर हिंगु आदि

आध्मान—आनाह नाशक हिंगु यवानिका जीरक शतपुष्पा

अनुलोमन—हिंगुपत्री, त्रिवृत्, हरीतकी

दीपन-पाचन—कटुतिक्तपदार्थ, अतिविषा किराततिक्त कालमेघ पंचकोल मरिच जीरकत्रयं सर्षपादि

आमपाचक—नागरमुस्तक इन्द्रयव यमानी धान्यकादि

आस्य स्रावक, (लालास्रावक)—मधुराम्लतिक्त पदार्थ दाड़िम चिंचा किरात लवण एला तमालपत्रादि

आस्य शोष (लाला) शोषक—धत्तूर विषमुष्टि अहिफेन क्षार तथा कषाय रसवाले खदिर बब्बूल आदि

आक्षेप—निवारक (वेगहर) धत्तूर अहिफेन भंगा कर्पूर हिंगु, जातिफल, ये श्वास कास उदरशूलादि में मांस पेशियों की क्रियाओं को स्वाभाविक रूप में रखते हैं।

कण्डुघ्न—चक्रमर्द कुष्ठ बाकुची मूलकबीज तुवरक राजिका चोक कत्था तथा अन्य रक्तशोधक द्रव्य।

कामोत्तेजक—कस्तूरी विषमुष्टि कर्पूर भंगा जायफलादि

कामावसादक—अहिफेन खसखस खाखसफल धान्यक

कुष्ठहर, (त्वचा रोग)—खदिर बब्बूल सारिवा हरिद्रा

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चन्दन काकमाची सप्तपर्ण निम्बादि

कृमिघ्न (उदर कृमिहर)—विडंग काम्पिल्लक पारसीकयवानी पलाशबीज निम्ब रसाञ्जन कटुतिक्त कोशातकी राजकर्कटीबीजादि।

केश्य—भृंगराज त्रिफला गुञ्जा तिलतैल नारिकेल।

गर्भ स्थापक—पद्मकाष्ठ बला शतावरी मखाने नीलोत्पल

गर्भस्रावक व पातक—अर्कक्षीर, स्नुहीक्षीर अरिष्टक एलायक कुमारी वंश गाजर बीजादि।

गर्भाशय शोधक—(रजःप्रवर्त्तकोंमें देखो)

ताप (ज्वर वेगहर) गुडूची निम्ब उशीर मुस्तक दमनक किराततिक्त पर्पट चन्दन मूत्रल रेचक तथा स्वेदल द्रव्य

तालूशोषघ्न (मुख शोथ निवारक, स्निग्ध) द्राक्षा मधु एला आमलकी आलूबुखारा यवासा शर्करादि।

तृषाहर (सौमनस्यजनन)—शीत मधुराम्लद्रव्य दाड़िम निम्बु उशीर बाला नागर मोथा अम्लवेतस श्लेष्मातक मधुयष्टि यवासा शर्करादि।

दन्त्य—त्रिफला तुम्बुरु वकुल बब्बूल इरिमेदादि।

निद्राजनक—वातादितैल, अश्वगन्धा अहिफेन सर्पगन्धा।

मूत्रल—गोक्षुरु पुनर्नवा पंचतृणमूल एला कूष्माण्ड

मेध्य—ब्राह्मी वचा शङ्खपुष्पी वाताद मण्डूकपर्णी

रक्तशोधक—चन्दन पटोल पर्पट निम्ब भूनिम्ब सारिवा

रक्तस्तम्भक—रसाञ्जन कुकुरुच्छदी अपामार्ग लाक्षा नागकेसर मायाफल माचिका कमलकेसरादि

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रेचन-भेदन-सरादि—हरीतकी आरग्वध धन्वयास मधुयष्टी द्राक्षा त्रिवृत् दन्तीद्वय जयपाल इन्द्रवारुणी एरण्ड तिक्तपटोल कोशातकी कंकुष्ठ

वामक—मदनफल राजिका सर्षप निम्बु मधुयष्टि तिक्तालाबू

वाजीकरण—(कामोत्तेजकवत्)

वीर्यस्तम्भक—मूसली शाल्मलीमूल जायफल जावित्री आकारकरभ मोचरसादि ।

वेदनाहर—अहिफेन धुस्तूर पारसीकयवानिका कर्पूर गुग्गुलु

शोथहर----पुनर्नवा निर्गुण्डी काकमाची दशमूलादि

श्लेष्म निष्कासक----वासा शृंगी मधुयष्टी श्लेष्मातक भारंगी पुष्करमूल कोलबदर गोजिह्वा

स्तन्यशोधक—निम्ब कटुकी गुडूची पाठ रसान्जन अनन्ता

स्तन्यवर्धक—कार्पासबीजतैल अश्वगन्धा विदारीकन्द शतावरी गोधूमादि

स्वेदल—मुस्तक मरिच तुलसी वत्सनाभ स्योनाक बृहती

संग्राही—मोचरस पाठा असन उदुम्बर कुटज चांगेरी जम्बुफल आम्रफल मज्जा अहिफेन दाड़िम

रजः प्रवर्त्तक—रजःशोधक चतुर्बीज कालाजाजी कार्पासमूल मिश्रेया हिंगु एलायक कुमारी

वयःस्थापक-रसायन— भल्लातक अष्टवर्ग दशमूल जीवनीयगण शतावरी विदारीकन्द ब्राह्मी अश्वगन्धा आमलकी पिप्पली निर्गुण्डी भृङ्गराजादि

स्तम्भक-शोषक-ग्राही-शुण्ठी—जायफल अहिफेन मोचरस माक्षिका खदिर मायाफलम्

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

परिशिष्ट ५

हिन्दी-मराठी-गुजराती पर्याय

संस्कृत	हिन्दी	गुजराती	मराठी
अग्निमन्थ	अरणी, अगेथू	एरण	टाट्कल
अगुरु	अगर	अगर	अगर
अतिविषा	अतीस	अतिविषनी कली	अतिविष
अपामार्ग	चिर्चिड़ा	अघेड़ो	आघाड़ा
अर्क	आक	आकड़ो	रूई
अर्जुन	अर्जुन	अर्जुन	अर्जुन-सादड़ा
असन, विजयसार	विजयसार	बियो	बिवला
अश्वगन्धा	असगन्ध	आसंध	आस्कन्द

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अशोक	अशोक	अशोक	अशोक
आमलकी	आमला	आंवला	आंवला
अहिफेन	अफीम	अफीण	आफू
आर्द्रक	अदरक	आदु	आले
आरग्वध	अमलतास	गरमालो	बाहवा
इरिमेद	फुलाही, (पंजाबी)	गंधीलो खेर	गंधी हिंबर
इन्द्रयव	इन्द्रजौ	इन्द्रजव	इन्द्रजव
ऐन्द्री	इन्द्रायण	इन्द्रावण	कडु वृन्दावन
उदुम्बर	गूलर	उंबरो	उंबर
उशीर	खस	वालो	वाला
एरण्ड	रेण्डी	दीवेलो, एरडो	एरण्ड
एला	इलायची	एलची	वेलची
कट्फल	कायफल	………	कायफल

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कस्तूरी	कस्तूरी	कस्तूरी	कस्तूरी
कटुकी	कुटकी	कडू	कडू कुटकी
कटुतुम्बी	कड़वी लौकी	कड़वी तुम्बड़ी	कडू भोपला
कत्तृण, रोहिष	रूसा घास	रोहीस	रोहिस
कंकुष्ठ	उसारे रेवन्द	रेवंचीनी-नो सीरो	रेवचिनी शिरा
कंकोल	कबाब चीनी	चणक कबाब	कंकोल
कंटकारी लघु	छोटी कटेरी	भोंयरिंगणी	भुईं रिंगणी
कंटकारी बृहत्	बड़ी कटेरी	उभी रिंगणी	डोरलें
कपिकच्छु	कौंच बीज	कवच नाबी	कुहिलीं, चेवी
कमलम्	कमल	पोपणुम्, कमल	कमोद
करंज [वृक्ष]	करंज	कणभ्ी	करंज
करंज [लता]	करञ्जुआ	कांकच, कांचका	सागरगोटा
कर्पूर	कर्पूर, काफूर	कपुर	कापूर

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

काकमाची	मकोय	पीलुडी	कामोणी, काउभोरी
काञ्चनार	कचनार	चंपाकाटी	कांचन, कोरल
काम्पिल्लक	कमीला	कपीलो	कपिला
कुटज	कूडा, कुरैय्या	कड़ो	कुड़ा
कालमेघ	कालमेघ	लीलु करियातु	ओले किराईत
किरात तिक्त	चिरायता	करीआतु	किराईत
कुपीलु	कुचला	झेरे कोचलां	काजरा
कुंकुम	केशर	केसर	कुंकुम
कुमारी	ग्वारपाठा	कुंवार	कोरफड़
कुष्ठ	कूठ	उपलेट	कोष्ठ
कूष्माण्ड	पेठा	भुरुं कोहलुं	कोहला
कोकिलाक्ष	तालमखाना	एखरो	कोलसुन्दा
कोलबदर, राजबदर	उन्नाव	उन्नाव	उन्नाव

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

खदिर	खैर	खेर	खैर
गज पिप्पली	गज पीपल	गजपीपर	गजपिपली
गाम्भारी	गम्भारी	शिविण	शिवण
गुग्गुलु	गुगल	गुगल	गूग्गुलु
गुडूची	गिलोय	गलो	गुलवेल
गोक्षुरू	गोखुरू	न्हाना गोखुरू	सराटे, कांटेगोखरू
गोजिह्वा	गाजबान	गाजबान	गाजबान
गोरोचना	गोरोचन	गोरोचन	गोरोचन
गुञ्जा	रत्ती, घुंघुची	चणोठी	गुंज
चक्रमर्द	चकवड़	कुंवाडीयो	टाकला
चन्दन श्वेत	सफेद चन्दन	सुखड	पांढरे चन्दन
चन्दनरक्त	लाल चन्दन	रतांजलि	रक्तचन्दन
चव्य	चव	चवक	चवक

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चांगेरी	खट्टी पत्ती	खाटी लुणी	अंबुटी
चित्रक	चिता, चित्रक	चित्रो	चित्रक
जटामांसी	वालछड़	जटामांसी	जटामांसी
जपा	गुड़हल	जासुस, जासुद	जास्वंद
जम्बीर	जम्बीरीनिम्बु	गोदड़ियानिम्बु	इडलिम्बु
जयपाल	जमालगोटा	नेपालो	जमालगोटा
जातिफलम्	जायफल	जायफल	जाफल
जातिपत्री	जावित्री	जावंत्री	जायपत्री
जीवन्ती	जीवन्ती	खी खेल, खीरोर	डोडी, हरणडोडी
जीरककृष्ण	कालाजीरा	शाहजीरुं	शाहाजिरें
,, श्वेत	सफेद जीरा	जीरुं	जिरे
,, स्थूल	कलौंजी	कलोंजी	कलौंजी
ज्योतिष्मती	मालकंगनी	मालकांगड़ी	मालकांगोणी

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तगर	तगर	तगर-गंठोड़ा	तगरमूल
तमालपत्र	तेजपात	तमालपत्र	तमालपत्र
ताम्बूल	पान	नागरवेल	नागवेल
तालमूलीश्वेत	सफेद मूसली	धौलीमूसली	पांढरी मूसली
तालमूली कृष्ण	काली मूसली	कालीमूसली	मूसली कन्द
तालीसपत्र	विर्मी,तालीसपत्र	तालीसपत्र	तालीस पत्र
तुम्बुरु	तेजबल नेपाली धनियाँ	चिरफल	तिरफल, चिरफल
तुलसी	तुलस	तुलसी	तुलशी
तुवरक	तुवरक	....	कडुकूवीठ
त्रायमाणा	त्रामन	त्रायमाणा	त्रायमाणा
त्रिवृत्	निसोत	नसोत्तर	निशोतर
त्वक्, दारुसिता	दालचीनी	तज	दालचीनी
दन्ती	दन्ती	दन्तीमूल	दांती, दांतरा

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

द्राक्षा	मुनक्का, दाख	दराख	द्राक्षेमनुका
दारुहरिद्रा	दारहल्दी	दारुहलदर	दारुहलदं
दाड़िम	अनारदाना	दाड़मसार	दाडिम्ब बी
दुरालभा [धन्वयास]	धमासा	धमासो	धमांसा
दूर्वा	दूब	धro	दूर्वा
देवदारु	देवदार	देवदार	देवदार
देवदाली	रबेल	कुकड़बेल	देवडांगरी
द्रोणपुष्पी	गुम्मा	कुम्रो	तुम्बा देवकुम्भा
धातकी	धायफूल	धावड़ी	धायटी
धान्यकम्	धनियां	धाना	धने
धुस्तूरः	धत्तूरा	धत्तूरो	धोत्रा
नागकेसरम्	नागकेसर	पीलुं नागकेसर	नागचांफा, नागकेसर
नारिकेलम्	नारियल	नारियेल	नारेल [माड़]

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

निम्बः	नीम	लीमड़ो	कडूनिंब
निम्बु	कागजी नीबू	लींबू	लिंबू
निर्गुण्डी	संभालु	नगोड	निगड़
पटोल [तिक्त]	कडवा परवल	कड़वांपरवल	कडुपरवल
पद्मकाष्ठ	पद्माख	पद्मकाष्ठ	पद्मकाष्ठ
पर्पट	पित्तपापड़ा	खड़सलियो	पित्तपापड़ा
पलाण्डु	प्याज	डूंगरी	कान्दा
परुषकम्	फालसा	फालसा	फालसा
पलाश	ढाक–टेसू	खाखरो	पलस
पाटला	पाढ़ल	पाडल	पाडल
पाठा	जल जमुनी पाठा	कालीपाठ	पहाड़वेल
पारसीक यवानी	खुरासानी अजवाइन	खोरासानी अजमां	खोरासानी ओवा
पाषाणभेद	पखानभेद	पाखाण भेद	पाखाणभेद

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पिप्पली	पीपर	लीडीपीपर	पिंपली
पिप्पली मूल	पीपरमूल	गंठोड़ा	पीपलामूल
प्रियंगु	प्रियंगु	घंडला	
पुष्करमूल	पोहकर मूल	पोखरमूल	पुष्करमूल
पुदिन	पोदीनां	पुदिनो	पुदिना
पुनर्नवा	विषखपरा	साटोडी	खापरो, घेंटुली
पूगः	सुपारी	सोपारी	पोफल
पृश्निपर्णी	पिठवन	पिठवण	पिठण
प्रसारिणी	गन्धपसरन	प्रसारिणी	चांदवेल हिरणवेल
बला	खरैंटी	खपाट	चिकणा
नागबला	फरीद बूटी	भोंयबल	भुईंचिकणा
महाबला	बड़ी बला	खेतराऊबल	
अतिबला	कंघी	कांसकी डाबली	मुद्रा पेटारी

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

ब्राह्मी (मण्डूकपर्णी)	ब्राह्मी	करिवणा ब्राह्मी	खड़ब्राह्मी
बिल्व	बेल	बीली	वेल
बोल	बोल मुरमकी	हिराबोल	बीजाबोल
भंगा	भांग	गांजो	गांजा
भल्लातक	भिलावां	भिलामो	बिब्बा
भारङ्गी	भारंगी	भारंगमूल	भारंगी
भृंगराज	भांगरा	भांगरो	माका
मधुयष्टि	मुलैठी	जेठीमध	ज्येष्टीमध
मदनः	मैनफल	मींढोल, मींढल	गेलफल
मरिचकृष्ण	कालीमिर्च	कालांमरी	मिरी
मंजिष्ठा	मंजीठ	मंजीठ	मंजीठ
माचिका	माई	पडवास	
माषपर्णी	माषवन	जंगलीउड़द	रानउड़ीद

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मायाफल	माजूफल	माया	मायफल
मिषिः शतपुष्पा	सोया	सुवा	शेपु, वालंतशेप
मिश्रेया	सौंफ	वरिश्राली	वडिशेप
मुद्गपर्णी	मुंगवन	जंगलीमग	रानमुग
मुण्डीतिका	गोरखमुण्डी	गोरखमुण्डी	गोरखमुण्डी
मुस्तकम्	नागरमोथा	नागरमोथा	लवाला
यवानी	अजवाइन	अजमा	ओवा
रसोन	लहसुन	लसण	लसून
रसाञ्जन	रसोत	रसवन्ती	रसांजन
राजकर्कटी	काशीफल	कोलुं पतकोलु	लालभोपला डांगर
रास्ना	रास्ना	रास्ना	रास्ना
रोहीतक	रोहेड़ा	रगतरोहीडो	रक्तरोहिड़ा
लवंग	लौंग	लवंग	लवंग

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

लाक्षा	लाख	लाख	लाख
लोध्र	लोधर	लोधर	लोध्र
वचा	वच	खोरासानीवज	वेखण्ड
वचा (महाभरी)	कुलिञ्जन	कुलञ्जन	कोष्ठकोलञ्जन
वचा (द्वीपान्तर)	चोपचीनी	चोपचीनी	चोपचीनी
वत्सनाभ	मीठातेलिया	वछनाग, वसनाग	सिंगीमोहरा
वंशरोचना	वंशलोचन	वांसकपूर	वंशलोचन
वरुण	वरना	वायवरणा	वायवर्णा
वाकुची	बावची	बावची	बावची
वासा	अडूसा वसूटी	अरडुसी	अडुलसा
विडंग	वायविडंग	बावडींग	बावडिंग
विभीतक	बहेड़ा	बहेड़ा	बहेंड़ा
वृक्षाम्ल	कोकम	कोकम	कोकम

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विदारीकन्द	विदारीकन्द	भोपकोहलु	भुईंकोहला
शटी	कचूर	कचूरो	कचोरा
शतपत्री (तरुणी)	गुलाब	गुलाब	गुलाब
शंखपुष्पी	शंखाहुली	शंखावलि	शङ्खपुष्पी
शतावरी	शतावर	शतावरी	शतावरी
शरपुङ्खा	सरफोंका	सरपङ्खो	शरपुङ्खा
शालपर्णी	सालवन	सालवण समेरियो	सालवन रानभाल
शाल्मली	सेमल	शेमलो, सीमलो	सांवर शेवरी
शिग्रुः	सोहांजना	सरगवो	शेवगा
शिरीष	सिरस	सरसडो	शिरशी
शुण्ठी	सोंठ	शुण्ठ	सुण्ठी
शृंगी	काकड़ासींगी	काकड़सिंगी	काकड़सिंगी
श्योनाक	सोनापाठा		टेंटु

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

श्लेष्मातक	लसूड़ा	गूंदो बड़गुन्दो	भोंकर
सप्तपर्णा	छतिवन	सातवीन	सात्वीन
सर्पगन्धा	छोटा चांद		अड़कई
सारिवा	अनन्तमूल	कागडीओ कुढेर	उपलसरी
स्वर्णपत्री(महाजालनी)	सनाय	मीठी आवल	सोनामुखी
सूरणम्	जिमीकन्द	सूरण	सूरण
सेहुण्डः	थोहर	थोरकांटालो	मिनगुट थोर
सोमराजी	कालीजीरी	कडवी जीरी	कडूजिरें
सोमलता	सोम	सोम	सोम
हपुषा	हाऊबेर	हाऊबेर	हाऊबेर
हरिद्रा	हल्दी	हलदर	हलद
हरिद्रा आम्रगन्ध			
हिंगुपत्री	डीकामाली	डीकामाली	डीकेमाली

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

हरीतकी	हरड़	हरडे	हरीतकी
हिंगु	हींग	हींग, वघारणी	हिंग
अर्भक	अर्गट	अर्गट	अर्गट
ईषद्गोल	ईसबगोल	इसबगोल	इसबगोल
किंकिणी	सिन्कोना	सिन्कोना	सिनकोना
पिशाच कार्पासी	उलट-कम्बल	उलट-कम्बल	ओलकतंबोल
सूची	बेलाडोना	बेलाडोना	बेलाडोना
शान्तनम्	सेन्टोनीन	सन्टोनीन	सेण्टोनीन
सुरंजनम्	सुरजां कांचिकम्	सुरंजा	सुरंजा
हृत्पत्री	डिजिटेलिस	डिजिटेलिस	डिजितेलिस

—.—

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

'द्रव्य गुणादर्श' के कुछ पृष्ठ

औषधियों की क्रिया प्रणाली

(अ)

(१) भौतिक परिवर्त्तनों द्वारा—अनेक औषधियाँ ऐसी हैं, जो शरीर के अवयवों, धातुओं पर कुछ भी प्रभाव नहीं डालतीं; किन्तु केवल यान्त्रिक रुपमें अपना कार्य करती हैं। स्नेहन औषधियाँ, तैल निर्यासादि इसी रूप में अपना कार्य करते हैं। वातादतैल या ईसबगोल आन्त्रोंमें जाकर उनकी श्लेष्मकला को स्निग्ध करता है और जो शुष्क मल आन्त्रों में चिपटा रहता है, उसे स्नेह द्वारा पृथक् कर देता है। वह मल स्वयमेव स्वाभाविक आन्त्र गतियोंसे बाहर निकल जाता है। आन्त्र में या उसकी श्लेष्मकला में कोई परिवर्तन विशेष नहीं होता। खटिका आदि भी इसी प्रकार भौतिक परिवर्त्तनों द्वारा अपना प्रभाव करती है।

(२) रासायनिक परिवर्त्तनों द्वारा—अन्तः प्रयोग मे आने वाली औषधियाँ प्रायः शरीर में रासाय-

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

निक परिवर्त्तन उत्पन्न करके स्वप्रभाव दिखाती हैं। इन परिवर्त्तनों के होते समय ही द्रव्य के वीर्य, विशेषकर विपाक अपना अपना प्रभाव दिखाते हैं। इस विषय में विशेष वर्णन वीर्य-विपाक के प्रकरण में देखें। यह प्रभाव दो प्रकार से होता है।

(क) संयोग—इस प्रकार में औषधियाँ या तो किसी विशिष्ट धातु के साथ संयुक्त हो जाती हैं, धातु विशेष के साथ संयोग का कारण तत्तद् औषधि की तत्तद् अवयव या धातु के साथ रासायनिक आकर्षण या समानता होती है। प्रायः समस्त द्रव्य परिवर्त्तित रूप में धातु या अवयव विशेष के साथ संयुक्त होते हैं, किन्तु कुछ द्रव्य अपरिवर्त्तित रूप में भी अवयव विशेष या धातु विशेष के साथ संयुक्त हो जाते हैं। यथा-मद्य, अपरिवर्तित रुप में ही रस-रक्त में होकर मस्तिष्क के मातुलुंग से संयुक्त होजाती है और केन्द्रीय नाड़ी मण्डल को प्रभावित करती है। इसी अवस्था को आयुर्वेद में "वीर्यं यावदधिवासात्" इस सूत्र में वर्णन किया है।

(ख) नूतन योग निर्माण—इस अवस्था में औषध द्रव्य शरीर में जाकर तत्रस्थ विभिन्न द्रव्यों के साथ मिलकर नए नए योगों का निर्माण करते है, और रोग के कारणभूत द्रव्य या योग को नष्ट, परिवर्त्तित या निष्क्रिय कर देते हैं। जिससे

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रोग नष्ट हो जाता है। कारण के नाश होने पर कार्य का नाश निश्चित ही है। यथा क्षारीय द्रव्य अम्लीय द्रव्यों को नष्ट या निष्क्रिय कर देते हैं। उदाहरणार्थ अम्लपित्त को लीजिए। जब आमाशय में अम्ल बढ़ जाता है, तो मधुरक्षार, शंख, कपर्दिका आदि क्षारीय द्रव्यों का व्यवहार किया जाता है। यह द्रव्य अन्य द्रव्यों के साथ मिलकर नए योग बनाते हैं, जो अम्ल द्रव्यों को निष्क्रिय कर देते हैं। इसी परिस्थिति तथा परिवर्त्तन को आयुर्वेदज्ञों ने "विपाक" का नाम दिया है।

इसी प्रकार प्रभाव (अचिन्त्य) तथा आण्विक-विच्छेदन द्वारा द्रव्य क्रियाप्रणाली की संक्षिप्त, किन्तु सारगर्भित व्याख्या इस ग्रन्थ में की गई है।

विपाक

आ "जाठरेणाग्निना योगाद् यदुदेति रसान्तरम्।
रसानां परिणामान्ते स विपाक इति स्मृतः
अष्टांग-हृदय

विपाक के दो भेद हैं—१ अवस्था पाक, २ निष्ठापाक। अवस्था पाक का सम्बन्ध (औदर्याग्नि) पाचन से है। अतः उसे छोड़कर निष्ठापाक का वर्णन किया जाता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

औदर्याग्नि द्वारा आहार द्रव्यों का परिपाक होकर वह आहाररस के रूप में रस या धातु में मिल जाता है। इस आहार रस का, जो पाक धात्वग्नियों और पाँच महाभूताग्नियों द्वारा होता है वही 'विपाक' है। वस्तुतः विपाक शरीरान्तर्गत ऊष्मा द्वारा होने वाली रासायनिक क्रियाओं तथा परिवर्त्तनों का नाम है। और इन परिवर्त्तनों का जो फल होता है, उससे हम विपाक का अनुमान लगाते हैं कि यह द्रव्य मधुरविपाकी है अथवा कटु। शरीर पोषक पदार्थ प्रायः मधुरविपाकी और कृशकारक पदार्थ कटुविपाकी होते हैं। इसीलिए विपाक के प्रभाव काल के विषय में "विपाकः कर्मनिष्ठया" कहा गया है।

अस्तु, शरीरस्थ आहार तब तक देह, धातुओं या अवयवों का अंग नहीं बन सकता जब तक कि रासायनिक परिवर्त्तनों द्वारा उसे भी उसी रूप में परिवर्त्तित न कर दिया जाए जिस रूप में वह अंग या धातु के साथ एकात्म्य भाव से मिल सके। इसी का नाम सात्म्यीकरण है। यह सात्म्यीकरण क्रिया विपाक द्वारा होती है।

आयुर्वेद में तीन प्रकार की अग्नियाँ हैं

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथवा यूँ कहिए कि आयुर्वेदज्ञों ने शरीरोष्मा को उनके कार्यों के अनुसार तीन काल्पनिक विभागों में विभक्त किया है—१ पाचन या औदर्य अग्नि, २ महाभूताग्नि, ३ धात्वग्नि। प्रथम प्रकार की अग्नि तो आमाशय तथा आन्त्रों में स्थित है, और वही उसके कार्य क्षेत्र हैं। शेष दो आन्त-दैहिक उष्माएँ हैं। पाचकाग्नि से पक्व आहार या औषधीय पदार्थ का धात्वग्नि तथा महा-भूताग्नियों द्वारा पुनः पाक होता है। तब वह शरीर का अंग बनती है। नीचे के उदाहरण से यह स्पष्ट हो जायगा। एक रोगी को मण्डूर भस्म का सेवन कराया गया। आहाराग्नि द्वारा पाक होकर यह रक्त में मिल गया। किन्तु रस या रक्त में मिलने से ही यह रक्त धातु की वृद्धि नहीं कर सकता। इस पर महाभूताग्नियों तथा धात्वग्नियों की क्रिया होती है और यह इस योग्य बनाया जाता है कि रक्तधातुगत रक्तकणों के सर्वथा समान हो जाता है, तब वह भर्तृहरि के 'मृगाः मृगैः संग यह मनुव्रजन्ति' के अनुसार स्वसमान रक्त कणों के साथ संयुक्त हो जाता है, उनका अविभाज्य अंग बन जाता है और लोह तथा रक्त कण एकात्म्य हो जाते हैं।

विस्तृतवर्णन 'द्रव्य गुणादर्श' में देखें।

(इ) "देहावयवों तथा संस्थानों पर प्रभावानुसार द्रव्यों

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

का वर्गीकरण"

१ हृदय रसायन—हृदय को शक्ति देते हैं यथा मुक्ता

२ शोणितास्थापन—जो रक्त को स्वभाविक स्थिति में रखते हैं

३ रक्त-स्कन्दन—जो बाह्य प्रयोग से रक्त स्राव को बन्द करते है यथा मुलैठी

४ रक्त संग्राहक—जो अन्तः प्रयोग से रक्त में जमने की शक्ति को बढ़ाते हैं यथा प्रवालादि

५ हृदय अवसादक—जो हृदय को शिथिल करते हैं यथा वत्सनाभ

६ रक्तवाहिनी विस्तारक यथा सर्पगन्धा

दीपन और पाचन

(१) यदग्निकृत् पचेन्नामं तद्यथा घृतम्
दीपनं ह्यग्निं कृत्वामं कदाचित् पाचयेन्नवा
अ-हृ० सूत्र० ।

दीपनमग्निगुण भूयिष्ठं तत्समान गुणत्वात् (सू० सू०)

दीपन—यह जठराग्नि को प्रदीप्त करता है किन्तु पाचन कार्य नहीं करता। अग्निवृद्धि द्वारा आम का पाचन हो जाए, यह दूसरी बात है। साक्षात् पाचन शक्ति दीपन द्रव्य में नहीं होती। यह अग्नि महाभूत प्रधान द्रव्य हैं यथा घृत, मिश्रेयादि (मन्दाग्नि के कारण अपक्व वा अर्धपक्व आहार

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

या आहार रस को "आम" संज्ञा दी गई है।

पाचन—पचत्यामं न वन्हिं कुर्यात् यत् तद्धि पाचनम्।
नागकेसरवत् ··· ···· शारङ्गधर।
पचन्तमग्नि प्रतिपत्तत्पणेन बलदानेन च यत् पाचयति तत् पाचनं, तच्च वाय्वग्नि गुण भूयिष्ठम्। चक्रपाणि (च० सू०)

पाचन द्रव्य आम का पाचन करने में पाचकाग्नि की सहायता करते हैं किन्तु स्वयं अग्नि की वृद्धि नहीं करते, यथा नागकेसर। यह वायु तथा अग्नि महाभूत प्रधान होते हैं। कुछ द्रव्य यथा चित्रक पिप्पली आदि दीपन पाचन दोनों ही होते हैं।

शारीर-क्रिया-विज्ञान के वेत्ताओं को यह अच्छी तरह ज्ञात है कि पाचकाग्नि, आमाशय, आन्त्र, यकृत्, अग्न्याशय के तरल स्राव हैं। अग्नि दीपन का अभिप्राय है इन पाचक रसों की उत्पत्ति को बढ़ाना। दीपन पदार्थ इन पाचक रस उत्पादक अंगों की विशिष्ट ग्रन्थियों और कोषाणुओं को शक्ति देते हैं, या उत्तेजन करते हैं, जिससे वह अधिक पाचक रस उत्पन्न करते है, और अजीर्ण मन्दाग्नि आदि रोग दूर होजाते हैं। यही अग्नि दीपन है।

पाचक रसों या औदर्याग्नि द्वारा द्रव्यों (आहार तथा औषधि, का पाचन इन द्रव्यों

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

में विविध रासायनिक परिवर्त्तनों तथा विश्लेषण द्वारा किया जाता है। इस विश्लेषण क्रिया में एक प्रकार के अभिषव जनक (Enzymes) पदार्थ विशेष भाग लेते हैं। पाचक द्रव्य इन अभिषव जनक पदार्थों की क्रियाओं में सहायक होते हैं जिससे आहारौषध द्रव्यों का विश्लेषण सरलता तथा शीघ्रता से होता है और इस विश्लिष्ट पदार्थ पर पाचक रस या जाठराग्नि का प्रभाव शीघ्र तथा पूर्णरूपेण होता है, जिससे द्रव्यों में रासायनिक परिवर्त्तन होकर वह आहार रस के रूप में रस धातु में मिल जाता है यह दीपन पाचन का भेद स्मरणीय है।

बीजपूरकम्

निम्बु वर्ग Ruta Ceae

नाम—सं० मातुलुङ्ग, हि. बिजौरा, निम्बुः म० महालुंग' गुज० बिजोरुं, कर्णाटक-तोद मादल, तैलंगः पेद्दनिम्म पड्डु, तामिलः केरिननेमु, अंग्रेजी The Citron, Bot. Citrus-Acida

परिचय—यह निम्बु जाति का वृक्ष है। फल में बीजों का बाहुल्य होता है जैसा कि बीजपूरक नाम से ही स्पष्ट है। वैद्यबन्धु इससे सुपरिचित हैं। विस्तृत वर्णन की आवश्यकता नहीं है।

व्यवहार्य अंग—पंचांग, विशेषकर फल स्वरस।

प्रभाव्य अवयव—पाचन संस्थान मुख, जिह्वा आमाशयः

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रसादि—अम्लरस, उष्णवीर्य कटुविपाकी। मधुरबीजपूरक मधुररस शीतवीर्य तथा मधुरविपाकी, वातपित्त शामक कफ वर्धक होता है।

दोष—वात कफ नाशक पित्तवर्धक

गुण—रोचक दीपन पाचन, जिह्वा-कंठ-शोधक, लघु

रोग—अरुचि, अजीर्ण वात कफ श्वास कास तृष्णा हिक्का वमन नाशक है

विशेष—मातुलुंग के विभिन्न भागों के गुणों में भेद होता है

त्वक्—कटुतिक्त उष्णवीर्य कटु विपाकी गुरु स्निग्ध कृमि तथा कफ नाशक है।

फलमज्जा—मधुराम्ल, शीतल गुरु कफकारक वातपित्त शामक बृंहण तथा स्निग्ध है। मलबंध विसूचिका उदरशूल तथा अर्श में उपयोगी है।

केसर—रोचक दीपन संग्राही हिक्का गुल्म, उदरशूल वमन पार्श्व वस्ति शूल मुखशोष वमन शामक है, केसर का रस पार्श्वशूल वस्तिशूल वातकफ और वमन शामक है।

बीज—तिक्त उष्ण दीपन अर्श शूल दुर्जर गर्भप्रद वातकफ उदर-कृमि-नाशक और मद-मूर्छा भ्रम कारक है

पुष्प—दीपन ग्राही शीतल वात तथा रक्तपित्त शामक है।

उपयोग—गुल्म, आनाह, उदरशूल में। लवणभास्करादि चूर्णमें मातुलुंग स्वरस की भावना देने से यह अति प्रभावशाली हो जाते हैं। निम्बु के समान शिकंजबी(शर्वत)बनाकर पीने से ज्वर में दाहादि

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

शान्त होते हैं। ज्वर में मातुलुंग का केशर तथा मधु और सैन्धव मिलाकर जिह्वा पर लेप करने से मुख शोष तथा तीव्र तृष्णा शान्त होती है

मूत्र शर्करा में मातुलुंगमूल के ३ माशा चूर्ण को वासी जल के साथ पीना चाहिए।

हिक्का में मधु तथा काले नमक के साथ बीजौरा का रस और वमन में लाजा मधुशर्करा और पिप्पली चूर्ण के साथ स्वरस का प्रयोग अत्यन्त लाभप्रद है। पार्श्व, हृदय तथा वस्ति शूल, वमन, हिक्का में मातुलुंग का रस, मधु और यवक्षार के साथ मिलाकर पीना चाहिये।

वक्तव्य—प्रायः सारे अम्ल रस वाले द्रव्य, केवल दाड़िम को, छोड़कर पित्त कारक हैं। किन्तु उनका तनु विलयन (Dilute Solution) (शर्बत) आदि पित्त शामक होता है, यह मूत्रल तथा स्वेदल भी होता है।

———

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आधार ग्रन्थ

१ भावप्रकाश निघण्टु

२ कैय्यदेव निघण्टु

३ धन्वंतरि निघण्टु

४ राजनिघण्टु

५ द्रव्यगुण विज्ञान

सूचना

निघण्टु के द्रव्यों का वर्णन अकारादि क्रम से किया गया है । यह क्रम परिशिष्ट नं० ५ के अनुसार है । अतः द्रव्यों की पृथक् सूची नहीं दी गई ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

शुद्धता—प्रामाणिकता—गुणप्रदता

यही तीन
हमारे लक्ष्य हैं

क्रियाकुशल वैद्यराजों द्वारा निर्मित सिद्ध औषधियाँ चन्द्रोदय, सुवर्ण वसन्त मालती आदि, असन्दिग्ध और विश्वसनीय वनस्पतियाँ, किराणा, केसर, अंबर, कस्तूरी, मधु, शिलाजतु, सुवर्ण-माक्षिक, हिंगुलादि खनिज पदार्थ उचित मूल्य पर मिलते हैं।

शूरजी वल्लभदास औषधि भण्डार

(स्वदेशी बाजार लि०)

नर-नारायण मन्दिर बिल्डिंग,
कालबादेवी रोड बम्बई २

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

शुद्ध और शास्त्रीय

औषधियों के लिये

याद रखिये

आर्य औषधि

फ़ार्मेस्युटिक वर्क्स

स्वदेशी मार्केट बिल्डिंग, कावेल स्ट्रीट

बम्बई २

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वैद्य बंधुओं और

औषधिनिर्माताओं के लिये

विश्वस्त-विशुद्ध-गुणप्रद

वानस्पतिक खनिज प्राणिजौषधियां

असली अष्टवर्ग, केसर, कस्तूरी, मधु, गोरोचन,
अम्बर, मुक्ता, पारद, गन्धक शिलाजतु आदि

मिलनेका सर्वश्रेष्ठ स्थान :----

शा० जाधवजी लल्लूभाई

२४५. कालबादेवी रोड बम्बई २

थोक और रिटेल के व्यापारी

टे० नं० ३१७६५ तारका पता : आयुर्वेद

मंगाने पर

बाजार-भावोंकी साप्ताहिक रिपोर्ट ग्राहकोंको भेजी जाती है

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सांडू ब्रदर्स

की विशिष्ट औषधियाँ

हर्टिना

सर्वोत्तम श्रेष्ठ हृदय-रसायन

प्रेग-युटेरो

गर्भावस्था में उत्तम पौष्टिक रसायन

टोमाटो-कम्पाउण्ड

विटामिनयुक्त पौष्टिक रसायन

श्री दत्तात्रेय कृष्ण साण्डू ब्रदर्स

मैन्युफैक्चरिंग केमिस्ट तथा ड्रगिस्ट

चेम्बूर, बम्बई

विशेष जानकारी के लिये सूचीपत्र मंगाइए

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

छात्रों और अध्यापकों के लिये

सु अवसर

हमारी फैक्टरीमें बनी बनियान, स्वेटर, स्पोर्टशर्ट ऊनी और सूती बनियाने देखनेमें भव्य व आकर्षक, व्यवहारमें सुखप्रद, चलने में मजबूत और सब ऋतुओंमें अनुकूल होती हैं।

हमारी विशेष फ्लेट मैशीन की बनी स्वेटरें उपहार की अति प्रिय वस्तुएं हैं। अध्यापकों और छात्रों की छोटी से छोटी व्यवहार की वस्तुएं भी मिल रेट पर भेजी जाती हैं। पत्रव्यवहार में अपने कालेज तथा कक्षादि का नाम लिखना न भूलें। अन्यथा रियायत न मिलेगी।

होजरी के सामान के लिए हमेशा

मेसर्स लालचिमनी होजरी मिल्स

लेडी जमशेदजी रोड, माहीम बम्बई को

टेलीफोन ६२५२६ तार का पता:—कूबयार्न

Vaidyaraj Zandu Bhatji
National Ayurvedic Library
Punjabi Bagh, New Delhi-26
Call No.............
Book No.......
Acc No..... 000060

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्रधान अशुद्धियां

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धि	शुद्धि
१	१३	कुण्ठ	कुष्ठ
२	११	उन	ऊन
४	११	जागरण	जारण
५	१६	निरन्तर	निराहार
५	२३	मिस	भिस
८	२	आन्ध्र	मान्द्य
९	१२	१०.	१००.
१०	८	Dio.	Trio.
१०	१७	तात्र	ताम्र
११	१७	Trio	Dio
१६	१	अंगन	अंजन
२१	२२	सुक्त	युक्त
२२	१६	गज.	शूलगज
२८	१५	तता	तपा
२९	१७	व्राह्य	बाह्य प्रयोग
३३	९	विर्चिका	विचर्चिका
३४	१४	Halm	Haem
३४	२०	दर्द	उदर्द
३९	४	विरुण	विरूप
४०	४०	यशक	यशप
४६	१४	विधान	पिधान
४७	१०	२" ५"	१२"
५६	७	भ्रष्ट	भृष्ट
६२	५	तामस्	आकाशीय

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

६६	१६	द्रव्यासम्	द्रव्याणाम्
६७	८	A...	A. Hydrophyllum
७२	१८	अरिभेद	अरिमेद
७५	१	उरबूक	उरूबूक
७६	१	LAU.	LAB.
७६	६	Rood	Rooa
७७	२	Sehe.	Scho.
७७	१२	Ru	Ruii
७८	१४	दिर्ग	दिग्धि
८०	२	करंग	करंज
८२	३	Neu.	NEN.
६५	३	Bail	Ball
६७	१३	Zan	Xan.
६८	७	All	Av
६८	७	Lil.	Lis
६८	१४	मात्रा	माणा
१००	१५	कंट	कटं
१०३	१०	Cis.	Cas
१०४	१८	Feria	Ferea
१०५	४	Muci	Nuci
११६	१५	वमनार्थ	वामनार्थ
१२१	१२	Teh	Tec
१२५	१६	है	हर
१३२	३	Ran	Rau
१३३	१५	Emp	Eup
१३७	५	Lerda	Leriap

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आयुर्वेद निकेतन की

कुछ सिद्ध औषधियां

केश कल्पतरु तैल

बालों के गिरने (झड़ने) तथा सफेद होने को रोकता है। केशों को बढ़ाता, दृढ़ और मृदु बनाता है।

रुचिरम्

समस्त उदरविकार, अजीर्ण, अरुचि, आध्मान और कोष्ठबद्धतादि नाशक, अत्यन्त स्वादिष्ट चटनी।

शिलासारम्

सुप्रसिद्ध रसायन शिलाजतु का सार
प्रमेह, मधुमेह वातरोग, वीर्यक्षीणता नाशक और पौष्टिक।

सूचना

अर्श, उदर रोगों तथा क्षीणता सम्बन्धी रोगों की विशेषज्ञों द्वारा पत्र व्यवहार से भी चिकित्सा का सुप्रबन्ध है।

पता : आयुर्वेद निकेतन, १२१, सुपारीबाग रोड, बम्बई १२

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

लेखककी अन्य रचनायें

(१)

आयुर्वेदका संक्षिप्त इतिहास

आयुर्वेद विज्ञान का आद्योपान्त इतिहास सारगर्भित रूप में इस ग्रंथ में दिया गया है। "गागर में सागर" की उक्ति इस पुस्तक पर पूर्णतया चरितार्थ होती है। हिन्दी में अपने ढंग की प्रथम तथा अनुपम पुस्तक है। प्रत्येक आयुर्वेद प्रेमी के पास रहनी चाहिए।

(२)

द्रव्य-गुण-आदर्श

द्रव्यगुण शास्त्र पर सर्वांग-सम्पूर्ण अनूठी पुस्तक। 'द्रव्य गुणादर्श के कुछ पृष्ठ' शीर्षक केअन्तर्गत इस पुस्तक की झलक दिखाई गई है। अति उपयोगी डाक्टरी औषधियों का भी पूर्ण वर्णन किया गया है। प्रकाशन का प्रबन्ध हो रहा है। दो रुपया पेशगी भेजकर स्थायी ग्राहक बनिए। पुस्तक रियायत से मिलेगी।

प्राप्तिस्थान

पी० के० शास्त्री, आयुर्वेद निकेतन

१२१. सुपारीबाग रोड, बम्बई. १२.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection